



KĀVYĀDARŚA

SANSKRIT AND TIBETAN TEXTS

007 81.1

EDITED BY

ANUKUL CHANDRA BANERJEE, M.A.

CALCUTTA UNIVERSITY



080
c.u.
151/4

PUBLISHED BY THE

UNIVERSITY OF CALCUTTA

1939



BCU 735

1.18.300

Printed by
J. C. Sarkhel at the
CALCUTTA ORIENTAL PRESS Ltd.
9, Panchanan Ghosh Lane
CALCUTTA.

HUMBLY DEDICATED
TO
DR. SYAMAPRASAD MOOKERJEE,
M.A., B.L., D.LITT., M.L.A., BARRISTER-AT-LAW,
PRESIDENT,
COUNCIL OF POST-GRADUATE TEACHING IN ARTS,
IN TOKEN OF
ESTEEM AND GRATITUDE
OF THE EDITOR FOR THE KEEN PERSONAL
INTEREST ALWAYS EVINCED BY
HIM IN HIS TIBETAN STUDIES
AND RESEARCHES.

CONTENTS

Preface	xvii
---------	-----	-----	-----	-----	------

CHAPTER I

	...	Śloka
मङ्गलाचरण (वग्नाः शैवः वज्रैः च)	...	1
वाक्प्रशंसा (कौमः वसुधासः च)	...	3
काव्यप्रशंसा (श्रुतः दणः वसुधासः च)	...	5
दुष्टकाव्यनिन्दा (श्रुतः श्रुतः दणः श्रुतः च)	...	6
काव्यलक्षण (श्रुतः दणः श्रीः सत्तः स)	...	10
काव्यभेद (श्रुतः दणः श्रीः दण्डः च)	...	11
महाकाव्यलक्षण (श्रुतः दणः केरिः सत्तः स)	...	14
गद्यकाव्यभेद (श्रुतः दणः श्रुतः दणः श्रीः दण्डः च)	...	23
मिश्रकाव्यभेद (श्रुतः दणः श्रुतः दणः श्रीः दण्डः च)	...	31
श्लेषगुण (श्रुतः दण्डः श्रुतः दण्डः)	...	41
श्लेषगुणलक्षण (श्रुतः दण्डः श्रुतः दण्डः श्रीः सत्तः स)	...	43
प्रसादगुणलक्षण (श्रुतः दण्डः श्रुतः दण्डः श्रीः सत्तः स)	...	45
समतागुणलक्षण (श्रुतः दण्डः श्रुतः दण्डः श्रीः सत्तः स)	...	47

	Sloka
माधुर्यगुणलक्षण (ལྷན་པ་ཉིད་ཡོན་ཏན་གྱི་ མཚན་མ)	51
अनुप्रास (རྗེས་སྤྱོད་)	55
यमक (རུང་དང་ལྷན་པ)	61
सौकुमार्यगुणलक्षण (ཤིན་ཏུ་གཞིན་པ་ཉིད་ཡོན་ཏན་གྱི་ མཚན་མ)	69
अर्थव्यक्तिगुणलक्षण (དོན་གསལ་ཡོན་ཏན་གྱི་ མཚན་མ)	72
उदारत्वगुणलक्षण (རྒྱ་ཆེར་ཉིད་ཡོན་ཏན་གྱི་ མཚན་མ)	76
ओजोगुणलक्षण (བརྗོད་པ་ཡོན་ཏན་གྱི་ མཚན་མ)	80
कान्तिगुणलक्षण (མཛེས་པ་ཡོན་ཏན་གྱི་ མཚན་མ)	85
समाधिगुणलक्षण (ཉིང་ངེ་འཛིན་ཡོན་ཏན་གྱི་ མཚན་མ)	93
काव्यकारण (ལྷན་ངག་གི་ རྒྱ)	103

CHAPTER II

अलङ्कारलक्षण (རྒྱན་གྱི་ མཚན་མ)	1
स्वभावोक्ति (རང་བཞིན་བརྗོད་པ)	8
उपमालक्षण (དཔེའི་ མཚན་མ)	14
धर्मोपमा (ཆོས་ཀྱི་ དཔེ)	15
वस्तूपमा (དངོས་པོའི་ དཔེ)	16
विपर्ययोपमा (བརྗོད་པོའི་ དཔེ)	17

CONTENTS

vii

Sloka

अन्योन्योपमा (घनं कुतः दधि)	...	18
नियमोपमा (दसः घः १५ ग्रे दधि)	...	19
अनियमोपमा (दसः १५ दधि)	...	20
समुच्चयोपमा (वसुधैव कुटुम्बकम्)	...	21
अतिशयोपमा (१५ घः दधि)	...	22
उत्प्रेक्षितोपमा (रघुः वसुधैव कुटुम्बकम्)	...	23
अद्भुतोपमा (१५ घः दधि)	...	24
मोहोपमा (१५ घः दधि)	...	25
संशयोपमा (घेः कुतः दधि)	...	26
निर्णयोपमा (दसः घः दधि)	...	27
श्लेषोपमा (सुतः वसुधैव कुटुम्बकम्)	...	28
समानोपमा (१५ घः दधि)	...	29
निन्दोपमा (१५ घः दधि)	...	30
प्रशंसोपमा (वसुधैव कुटुम्बकम्)	...	31
आचिख्यासोपमा (वसुधैव कुटुम्बकम्)	...	32
विरोधोपमा (१५ घः दधि)	...	33
प्रतिषेधोपमा (१५ घः दधि)	...	34

	Sloka
चटुपमा (षडसः पदे)	... 35
तत्त्वाख्यानोपमा (दे० ३५ च० ६५ पदे)	... 36
असाधारणोपमा (सु० १८ पदे)	... 37
अभूतोपमा (पु० २४ पदे)	... 58
असम्भावितोपमा (श्रु० २४ पदे)	... 39
बहुपमा (षडः पदे)	... 40
विक्रियोपमा (कृ० २४ पदे)	... 41
मालोपमा (प्रे० २४ पदे)	... 42
वाक्यार्थोपमा (द्वा० २४ पदे)	... 43
प्रतिवस्तूपमा (त्रि० २४ पदे)	... 46
तुल्ययोगोपमा (स० २४ पदे)	... 48
हेतूपमा (शु० २४ पदे)	... 50
उपमादोषविचार (२४ पदे)	... 51
उपमाबोधकशब्द (२४ पदे)	... 57
रूपकलक्षण (वा० २४ पदे)	... 65
समस्तरूपक (वा० २४ पदे)	... 65
व्यस्तरूपक (वा० २४ पदे)	... 66

CONTENTS

ix

Sloka

समस्तव्यस्यरूपक (वाङ्मयस्य उक्तं वस्तुस्य द्वादशं वस्तुस्य च) ...	67
सकलरूपक (सप्तदशं वाङ्मयस्य उक्तं) ...	69
अवयवरूपक (ऋषिः वाङ्मयस्य उक्तं) ...	71
अवयविरूपक (ऋषिः उक्तं च वाङ्मयस्य उक्तं) ...	72
एकाङ्गरूपक (पञ्चदशं वाङ्मयस्य उक्तं) ...	74
युक्तरूपक (द्वादशं वाङ्मयस्य उक्तं च पञ्चदशं वाङ्मयस्य उक्तं) ...	76
अयुक्तरूपक (द्वादशं वाङ्मयस्य उक्तं च पञ्चदशं वाङ्मयस्य उक्तं) ...	77
विषमरूपक (ऋषिः उक्तं च पञ्चदशं वाङ्मयस्य उक्तं) ...	78
सविशेषणरूपक (पञ्चदशं वाङ्मयस्य उक्तं च पञ्चदशं वाङ्मयस्य उक्तं) ...	80
विरुद्धरूपक (पञ्चदशं वाङ्मयस्य उक्तं च पञ्चदशं वाङ्मयस्य उक्तं) ...	82
हेतुरूपक (पञ्चदशं वाङ्मयस्य उक्तं) ...	84
स्थिररूपक (पञ्चदशं वाङ्मयस्य उक्तं) ...	86
उपमाव्यतिरेकरूपक (पञ्चदशं वाङ्मयस्य उक्तं च पञ्चदशं वाङ्मयस्य उक्तं) ...	87
आक्षेपरूपक (पञ्चदशं वाङ्मयस्य उक्तं) ...	90
समाधानरूपक (पञ्चदशं वाङ्मयस्य उक्तं) ...	91
रूपकरूपक (पञ्चदशं वाङ्मयस्य उक्तं च पञ्चदशं वाङ्मयस्य उक्तं) ...	92
तत्त्वापह्नवरूपक (पञ्चदशं वाङ्मयस्य उक्तं च पञ्चदशं वाङ्मयस्य उक्तं) ...	93

	Sloka
दीपक (गणन्य-पुन)	96
मालादीपक (पुन-पुन- गणन्य-पुन)	106
विरुद्धार्थदीपक (गणन्य-पुन- पुन-पुन- गणन्य-पुन)	108
एकार्थदीपक (पुन-पुन-पुन-पुन-पुन)	110
श्लिष्टार्थदीपक (पुन-पुन- पुन-पुन- गणन्य-पुन)	112
आवृत्तिभेद (पुन-पुन- पुन-पुन)	115
आक्षेपभेद (पुन-पुन- पुन-पुन)	119
धर्माक्षेप (पुन-पुन-पुन-पुन)	127
धर्म्याक्षेप (पुन-पुन-पुन-पुन)	128
कारणाक्षेप (पुन-पुन-पुन-पुन)	130
कार्याक्षेप (पुन-पुन-पुन-पुन)	133
अनुज्ञाक्षेप (पुन-पुन-पुन-पुन)	134
प्रभुत्वाक्षेप (पुन-पुन-पुन-पुन)	136
अनादराक्षेप (पुन-पुन-पुन-पुन)	138
आशीर्वचनाक्षेप (पुन-पुन-पुन-पुन)	140
परुषाक्षेप (पुन-पुन-पुन-पुन)	142
साचिव्याक्षेप (पुन-पुन-पुन-पुन)	144

CONTENTS

xi

	Sloka
यत्नाक्षेप (२२८८८८८८ २२२२२२२२)	146
परवशाक्षेप (२२२२२२२२ २२२२२२२२)	148
उपायाक्षेप (२२२२२२२२ २२२२२२२२)	150
रोषाक्षेप (२२२२२२२२ २२२२२२२२)	152
अनुकोशाक्षेप (२२२२२२२२ २२२२२२२२)	154
अनुशयाक्षेप (२२२२२२२२ २२२२२२२२)	156
संशयाक्षेप (२२२२२२२२ २२२२२२२२)	158
श्लिष्टाक्षेप (२२२२२२२२ २२२२२२२२)	160
अर्थान्तराक्षेप (२२२२२२२२ २२२२२२२२)	162
हेत्वाक्षेप (२२२२२२२२ २२२२२२२२)	164
अर्थान्तरन्यास (२२२२२२२२ २२२२२२२२)	166
अर्थान्तरन्यासभेद (२२२२२२२२ २२२२२२२२ २२२२२२२२)	167
व्यतिरेक (२२२२२२२२ २२२२२२२२)	177
एकव्यतिरेक (२२२२२२२२ २२२२२२२२)	178
उभयव्यतिरेक (२२२२२२२२ २२२२२२२२)	180
सश्लेषव्यतिरेक (२२२२२२२२ २२२२२२२२)	182
साक्षेपसहेतुव्यतिरेक (२२२२२२२२ २२२२२२२२ २२२२२२२२)	183

	Sloka
प्रतीयमानसादृश्यव्यतिरेक (ཉེགས་པར་གྱུར་པ་མཚུངས་པ་ ལྗོན་པ་ཅན)	186
सादृश्यव्यतिरेकभेद (མཚུངས་པའི་ ལྗོན་པ་ཅན་གྱི་ དབྱེ་བ)	189
विभावना (སྤེད་པ་ཅན)	196
समासोक्ति (བསྐྱས་པ་བཟློད་པ)	202
समासोक्तिभेद (བསྐྱས་པ་བཟློད་པའི་ དབྱེ་བ)	205
अपूर्वसमासोक्ति (སྔོན་མེད་བསྐྱས་པར་བཟློད་པ)	210
अतिशयोक्ति (ཡུལ་དུ་བྱུང་བར་བཟློད་པ)	211
अतिशयोक्तिप्रशंसा (ཡུལ་དུ་བྱུང་བར་བཟློད་པའི་ བསྐྱབས་པ)	217
उत्प्रेक्षा (རབ་རྟོག་པ)	218
उत्प्रेक्षाव्यञ्जकशब्द (རབ་བརྟགས་གསལ་བར་བྱེད་པའི་ སྒྲ)	231
हेतुभेद (སྒྱུའི་ དབྱེ་བ)	232
सूक्ष्म (སྤ་མོ)	257
लेश (ཏ)	262
क्रम (རིམ་པ)	270
प्रेयरसवदूर्जस्विलक्षण (དགའ་བ་ཉམས་ལྗན་གཟི་བཟློད་ཀྱི་ མཚན་མ)	272
पर्यायोक्त (རྣམ་གྲངས་བཟློད་པ)	292

CONTENTS

xiii

Sloka

समाहित (गुरुद्वयवचन)	...	295
उदात्त (शुद्धि)	...	297
अपहृति (वस्तुवचन)	...	301
श्लेष (श्रुतवचन)	...	306
श्लेषभेद (श्रुतवचन द्वयवचन)	...	311
विशेषोक्ति (श्रुतवचन वचनवचन)	...	320
तुल्ययोगिता (श्रुतवचन वचनवचन)	...	327
विरोध (श्रुतवचन)	...	330
अप्रस्तुतप्रशंसा (श्रुतवचन वचनवचन)	...	337
व्याजस्तुति (श्रुतवचन वचनवचन)	...	340
निदर्शन (श्रुतवचन वचनवचन)	...	345
सहोक्ति (श्रुतवचन वचनवचन)	...	348
परिवृत्ति (श्रुतवचन वचनवचन)	...	348
आशिस (श्रुतवचन)	...	354
संस्पृष्टि (श्रुतवचन)	...	356
संस्पृष्टिभेद (श्रुतवचन द्वयवचन)	...	357

		Sloka
भाविक (दशोदसः पः उ३)	...	360
भाविकभेद (दशोदसः पः उ३ः श्रुः दशुः पः)	...	361

CHAPTER III

यमक (རྩེང་ལྷན)	...	1
गोमुत्रिका (བ་ལང་གཅིན)	...	78
अर्द्धभ्रम (ཕྱེད་འཁོར་བ)	...	80
सर्वतोभद्र (ཀྱུན་དུ་བཟང་པོ)	...	80
स्वरस्थानवर्णनियम (དབྱངས་དང་གནས་དང་ཡི་གེ་ནམས་ཀྱི་ངེས་པ)		83
प्रहेलिका (གཤམ་ཆོག)	...	96
प्रहेलिकास्थान (གཤམ་ཆོག་གི་གནས་པ)	...	97
समागता प्रहेलिका (ཀྱུན་དུ་ཆོགས་པའི་གཤམ་ཆོག)	...	91
वञ्चिता प्रहेलिका (བསྐྱུ་པའི་གཤམ་ཆོག)	...	91
व्युत्क्रान्ता, (རིས་པ་བྲལ་བ)	...	99
प्रमुषिता (རབ་བཅོམ)	...	99
समानरूपा (མཐུན་པའི་གཞུགས)	...	100
परुषा (རྩལ་མོ)	...	100
संख्याता (གྲངས་ཉིད)	...	101

CONTENTS

xv

	Sloka
•प्रकल्पिता (रव'वद'वा'श'श्रि')	101
नामान्तरिता (श्रि'र'र'र'र'र'र')	102
निवृता (व'व'व'व')	102
समानशब्द (व'व'व')	103
संमूढ (श्रि'र')	103
परिहारिका (श्रि'र')	104
एकच्छन्ना (व'व'व')	104
उभयच्छन्ना (व'व'व')	105
संकीर्णा (श्रि'र')	105
दोषविभाग (श्रि'र')	125
अपार्थ (र'र')	128
व्यर्थ (र'र')	131
एकार्थ (र'र')	135
ससंशय (र'र')	139
अपक्रम (र'र')	144
शब्दहीन (र'र')	148
यतिभ्रष्ट (र'र')	152

	Sloka
वृत्तमङ्ग (स्तेव'सु'र'भ'म'स'व)	... 156
विसन्धि (स'र'स'स'सु'र'व'व'व)	... 159
देशकालकलालोकन्यायागमविरोध (यु'व'द'दु'स'द'सु'उ'व'द'द'द'व')	... 162
देशविरोधोदाहरण (यु'व'द'द'द'व'व'व' ५५)	... 165, 166
कालविरोधोदाहरण (दु'स'द'द'द'व'व'व' ५५)	... 167, 168
कलाविरोधोदाहरण (सु'उ'व'द'द'द'व'व'व' ५५)	... 170
लोकविरोधोदाहरण (द'द'व'द'द'द'व'व'व' ५५)	... 172
न्यायविरोधोदाहरण (द'द'व'द'द'द'व'व'व' ५५)	... 174, 175
आगमविरोधोदाहरण (सु'उ'व'द'द'द'व'व'व' ५५)	... 177, 178
देशविरोधगुण (यु'व'द'द'द'व'व'व' ५५)	... 180
कालविरोधगुण (दु'स'द'द'द'व'व'व' ५५)	... 181
कलाविरोधगुण (सु'उ'व'द'द'द'व'व'व' ५५)	... 182
लोकविरोधगुण (द'द'व'द'द'द'व'व'व' ५५)	... 183
न्यायविरोधगुण (द'द'व'द'द'द'व'व'व' ५५)	... 184
आगमविरोधगुण (सु'उ'व'द'द'द'व'व'व' ५५)	... 185

PREFACE

It is not without a feeling of joy that I am offering in the following pages a new edition of the *Kāvyādarśa* of D a ṇ ḍ i n . It is on the basis of a Tibetan manuscript, a portion of which was copied out by the late Rai S a r a t C h a n d r a D a s Bahadur, C.I.E. I rejoiced not only to get hold of but to utilize D a s ' s manuscript preserved in the University Tibetan Seminar. The *Kāvyādarśa* was translated into Tibetan by Ś r ī l a k ṣ m i k a r a and Ś o ṇ . s t o n . L o . t s ā . b a and others in the great Sa-skya monastery of Western Tibet. It is collected in Tanjur, Mdo, Vol. Se of the Sde.dge. edition; C o r d i e r , III, p. 465. This xylograph contains both the transliteration of the Sanskrit text in the Tibetan script as well as its Tibetan translation. The Sanskrit text presented in this volume is taken from this xylograph. It is compared with the Tibetan version. There is also an independent Tibetan commentary on the text by M i . p h a m . d g e . l e g s . r n a m . r g y a l . As it came into my hands when the printing of the present text neared its completion, it could not be utilized by me.

Of the different editions of the Sanskrit text of the *Kāvyādarśa* I have mainly used that of the Bibliotheca Indica, 1863.

The manuscript from which the xylograph was made appears to have been written by more than one hand; so there is a lack of uniformity in the xylograph. In order to give an idea of the method of transcribing the Sanskrit text adopted by the scribe I have followed him excepting some cases noted below.

In Buddhist Sanskrit texts at the end of a sentence *m* is generally changed to *anusvāra*. This is, however, not always found in the present work. The consonants after *r* are sometimes found doubled; e.g., I. 95 उद्वीर्ण ; 103 मार्गः, II. 9 वरुण, 10 घूरिर्णतेक्षणः ; etc. Though such doubling of consonants is sanctioned by the rules of grammar, I have dispensed with it in this edition. Besides, there are several inaccuracies that have been corrected by me; e.g.

Chap. I. 30^a श्रौ for श्रौश ; 42^o एषां विपर्ययः for एषाम्बिपर्ययः ; 83^b बध्नन्त्योजस्विनीगिरः ; for बध्नन्त्योजस्विनीगिरः 90^o ^a ^b ^c ^d ^e ^f ^g ^h ⁱ ^j ^k ^l ^m ⁿ ^o ^p ^q ^r ^s ^t ^u ^v ^w ^x ^y ^z ^{aa} ^{ab} ^{ac} ^{ad} ^{ae} ^{af} ^{ag} ^{ah} ^{ai} ^{aj} ^{ak} ^{al} ^{am} ^{an} ^{ao} ^{ap} ^{aq} ^{ar} ^{as} ^{at} ^{au} ^{av} ^{aw} ^{ax} ^{ay} ^{az} ^{ba} ^{bb} ^{bc} ^{bd} ^{be} ^{bf} ^{bg} ^{bh} ^{bi} ^{bj} ^{bk} ^{bl} ^{bm} ^{bn} ^{bo} ^{bp} ^{bq} ^{br} ^{bs} ^{bt} ^{bu} ^{bv} ^{bw} ^{bx} ^{by} ^{bz} ^{ca} ^{cb} ^{cc} ^{cd} ^{ce} ^{cf} ^{cg} ^{ch} ^{ci} ^{cj} ^{ck} ^{cl} ^{cm} ^{cn} ^{co} ^{cp} ^{cq} ^{cr} ^{cs} ^{ct} ^{cu} ^{cv} ^{cw} ^{cx} ^{cy} ^{cz} ^{da} ^{db} ^{dc} ^{dd} ^{de} ^{df} ^{dg} ^{dh} ^{di} ^{dj} ^{dk} ^{dl} ^{dm} ^{dn} ^{do} ^{dp} ^{dq} ^{dr} ^{ds} ^{dt} ^{du} ^{dv} ^{dw} ^{dx} ^{dy} ^{dz} ^{ea} ^{eb} ^{ec} ^{ed} ^{ee} ^{ef} ^{eg} ^{eh} ^{ei} ^{ej} ^{ek} ^{el} ^{em} ^{en} ^{eo} ^{ep} ^{eq} ^{er} ^{es} ^{et} ^{eu} ^{ev} ^{ew} ^{ex} ^{ey} ^{ez} ^{fa} ^{fb} ^{fc} ^{fd} ^{fe} ^{ff} ^{fg} ^{fh} ^{fi} ^{fj} ^{fk} ^{fl} ^{fm} ^{fn} ^{fo} ^{fp} ^{fq} ^{fr} ^{fs} ^{ft} ^{fu} ^{fv} ^{fw} ^{fx} ^{fy} ^{fz} ^{ga} ^{gb} ^{gc} ^{gd} ^{ge} ^{gf} ^{gg} ^{gh} ^{gi} ^{gj} ^{gk} ^{gl} ^{gm} ^{gn} ^{go} ^{gp} ^{gq} ^{gr} ^{gs} ^{gt} ^{gu} ^{gv} ^{gw} ^{gx} ^{gy} ^{gz} ^{ha} ^{hb} ^{hc} ^{hd} ^{he} ^{hf} ^{hg} ^{hh} ^{hi} ^{hj} ^{hk} ^{hl} ^{hm} ^{hn} ^{ho} ^{hp} ^{hq} ^{hr} ^{hs} ^{ht} ^{hu} ^{hv} ^{hw} ^{hx} ^{hy} ^{hz} ^{ia} ^{ib} ^{ic} ^{id} ^{ie} ^{if} ^{ig} ^{ih} ⁱⁱ ^{ij} ^{ik} ^{il} ^{im} ⁱⁿ ^{io} ^{ip} ^{iq} ^{ir} ^{is} ^{it} ^{iu} ^{iv} ^{iw} ^{ix} ^{iy} ^{iz} ^{ja} ^{jb} ^{jc} ^{jd} ^{je} ^{jf} ^{jj} ^{jk} ^{jl} ^{jm} ^{jn} ^{jo} ^{jp} ^{jq} ^{jr} ^{js} ^{jt} ^{ju} ^{jv} ^{jw} ^{jx} ^{ky} ^{kz} ^{la} ^{lb} ^{lc} ^{ld} ^{le} ^{lf} ^{lg} ^{lh} ^{li} ^{lj} ^{lk} ^{ll} ^{lm} ^{ln} ^{lo} ^{lp} ^{lq} ^{lr} ^{ls} ^{lt} ^{lu} ^{lv} ^{lw} ^{lx} ^{ly} ^{lz} ^{ma} ^{mb} ^{mc} ^{md} ^{me} ^{mf} ^{mg} ^{mh} ^{mi} ^{mj} ^{mk} ^{ml} ^{mm} ^{mn} ^{mo} ^{mp} ^{mq} ^{mr} ^{ms} ^{mt} ^{mu} ^{mv} ^{mw} ^{mx} ^{my} ^{mz} ^{na} ^{nb} ^{nc} nd ^{ne} ^{nf} ^{ng} ^{nh} ⁿⁱ ^{nj} ^{nk} ^{nl} ^{nm} ⁿⁿ ^{no} ^{np} ^{nq} ^{nr} ^{ns} ^{nt} ^{nu} ^{nv} ^{nw} ^{nx} ^{ny} ^{nz} ^{oa} ^{ob} ^{oc} ^{od} ^{oe} ^{of} ^{og} ^{oh} ^{oi} ^{oj} ^{ok} ^{ol} ^{om} ^{on} ^{oo} ^{op} ^{oq} ^{or} ^{os} ^{ot} ^{ou} ^{ov} ^{ow} ^{ox} ^{oy} ^{oz} ^{pa} ^{pb} ^{pc} ^{pd} ^{pe} ^{pf} ^{pg} ^{ph} ^{pi} ^{pj} ^{pk} ^{pl} ^{pm} ^{pn} ^{po} ^{pp} ^{pq} ^{pr} ^{ps} ^{pt} ^{pu} ^{pv} ^{pw} ^{px} ^{py} ^{pz} ^{qa} ^{qb} ^{qc} ^{qd} ^{qe} ^{qf} ^{qg} ^{qh} ^{qi} ^{qj} ^{qk} ^{ql} ^{qm} ^{qn} ^{qo} ^{qp} ^{qq} ^{qr} ^{qs} ^{qt} ^{qu} ^{qv} ^{qw} ^{qx} ^{qy} ^{qz} ^{ra} ^{rb} ^{rc} rd ^{re} ^{rf} ^{rg} ^{rh} ^{ri} ^{rj} ^{rk} ^{rl} ^{rm} ^{rn} ^{ro} ^{rp} ^{rq} ^{rr} ^{rs} ^{rt} ^{ru} ^{rv} ^{rw} ^{rx} ^{ry} ^{rz} ^{sa} ^{sb} ^{sc} ^{sd} ^{se} ^{sf} ^{sg} ^{sh} ^{si} ^{sj} ^{sk} ^{sl} sm ^{sn} ^{so} ^{sp} ^{sq} ^{sr} ^{ss} st ^{su} ^{sv} ^{sw} ^{sx} ^{sy} ^{sz} ^{ta} ^{tb} ^{tc} ^{td} ^{te} ^{tf} ^{tg} th ^{ti} ^{tj} ^{tk} ^{tl} tm ^{tn} ^{to} ^{tp} ^{tq} ^{tr} ^{ts} ^{tt} ^{tu} ^{tv} ^{tw} ^{tx} ^{ty} ^{tz} ^{ua} ^{ub} ^{uc} ^{ud} ^{ue} ^{uf} ^{ug} ^{uh} ^{ui} ^{uj} ^{uk} ^{ul} ^{um} ^{un} ^{uo} ^{up} ^{uq} ^{ur} ^{us} ^{ut} ^{uu} ^{uv} ^{uw} ^{ux} ^{uy} ^{uz} ^{va} ^{vb} ^{vc} ^{vd} ^{ve} ^{vf} ^{vg} ^{vh} ^{vi} ^{vj} ^{vk} ^{vl} ^{vm} ^{vn} ^{vo} ^{vp} ^{vq} ^{vr} ^{vs} ^{vt} ^{vu} ^{vv} ^{vw} ^{vx} ^{vy} ^{vz} ^{wa} ^{wb} ^{wc} ^{wd} ^{we} ^{wf} ^{wg} ^{wh} ^{wi} ^{wj} ^{wk} ^{wl} ^{wm} ^{wn} ^{wo} ^{wp} ^{wq} ^{wr} ^{ws} ^{wt} ^{wu} ^{wv} ^{ww} ^{wx} ^{wy} ^{wz} ^{xa} ^{xb} ^{xc} ^{xd} ^{xe} ^{xf} ^{xg} ^{xh} ^{xi} ^{xj} ^{xk} ^{xl} ^{xm} ^{xn} ^{xo} ^{xp} ^{xq} ^{xr} ^{xs} ^{xt} ^{xu} ^{xv} ^{xw} ^{xa} ^{xb} ^{xc} ^{xd} ^{xe} ^{xf} ^{xg} ^{xh} ^{xi} ^{xj} ^{xk} ^{xl} ^{xm} ^{xn} ^{xo} ^{xp} ^{xq} ^{xr} ^{xs} ^{xt} ^{xu} ^{xv} ^{xw} ^{ya} ^{yb} ^{yc} ^{yd} ^{ye} ^{yf} ^{yg} ^{yh} ^{yi} ^{yj} ^{yk} ^{yl} ^{ym} ^{yn} ^{yo} ^{yp} ^{yq} ^{yr} ^{ys} ^{yt} ^{yu} ^{yv} ^{yw} ^{ya} ^{yb} ^{yc} ^{yd} ^{ye} ^{yf} ^{yg} ^{yh} ^{yi} ^{yj} ^{yk} ^{yl} ^{ym} ^{yn} ^{yo} ^{yp} ^{yq} ^{yr} ^{ys} ^{yt} ^{yu} ^{yv} ^{yw} ^{za} ^{zb} ^{zc} ^{zd} ^{ze} ^{zf} ^{zg} ^{zh} ^{zi} ^{zj} ^{zk} ^{zl} ^{zm} ^{zn} ^{zo} ^{zp} ^{zq} ^{zr} ^{zs} ^{zt} ^{zu} ^{zv} ^{zw} ^{za} ^{zb} ^{zc} ^{zd} ^{ze} ^{zf} ^{zg} ^{zh} ^{zi} ^{zj} ^{zk} ^{zl} ^{zm} ^{zn} ^{zo} ^{zp} ^{zq} ^{zr} ^{zs} ^{zt} ^{zu} ^{zv} ^{zw} ^{aa} ^{ab} ^{ac} ^{ad} ^{ae} ^{af} ^{ag} ^{ah} ^{ai} ^{aj} ^{ak} ^{al} ^{am} ^{an} ^{ao} ^{ap} ^{aq} ^{ar} ^{as} ^{at} ^{au} ^{av} ^{aw} ^{ax} ^{ay} ^{az} ^{ba} ^{bb} ^{bc} ^{bd} ^{be} ^{bf} ^{bg} ^{bh} ^{bi} ^{bj} ^{bk} ^{bl} ^{bm} ^{bn} ^{bo} ^{bp} ^{bq} ^{br} ^{bs} ^{bt} ^{bu} ^{bv} ^{bw} ^{bx} ^{by} ^{bz} ^{ca} ^{cb} ^{cc} ^{cd} ^{ce} ^{cf} ^{cg} ^{ch} ^{ci} ^{cj} ^{ck} ^{cl} ^{cm} ^{cn} ^{co} ^{cp} ^{cq} ^{cr} ^{cs} ^{ct} ^{cu} ^{cv} ^{cw} ^{cx} ^{cy} ^{cz} ^{da} ^{db} ^{dc} ^{dd} ^{de} ^{df} ^{dg} ^{dh} ^{di} ^{dj} ^{dk} ^{dl} ^{dm} ^{dn} ^{do} ^{dp} ^{dq} ^{dr} ^{ds} ^{dt} ^{du} ^{dv} ^{dw} ^{dx} ^{dy} ^{dz} ^{ea} ^{eb} ^{ec} ^{ed} ^{ee} ^{ef} ^{eg} ^{eh} ^{ei} ^{ej} ^{ek} ^{el} ^{em} ^{en} ^{eo} ^{ep} ^{eq} ^{er} ^{es} ^{et} ^{eu} ^{ev} ^{ew} ^{ex} ^{ey} ^{ez} ^{fa} ^{fb} ^{fc} ^{fd} ^{fe} ^{ff} ^{fg} ^{fh} ^{fi} ^{fj} ^{fk} ^{fl} ^{fm} ^{fn} ^{fo} ^{fp} ^{fq} ^{fr} ^{fs} ^{ft} ^{fu} ^{fv} ^{fw} ^{fx} ^{fy} ^{fz} ^{ga} ^{gb} ^{gc} ^{gd} ^{ge} ^{gf} ^{gg} ^{gh} ^{gi} ^{gj} ^{gk} ^{gl} ^{gm} ^{gn} ^{go} ^{gp} ^{gq} ^{gr} ^{gs} ^{gt} ^{gu} ^{gv} ^{gw} ^{gx} ^{gy} ^{gz} ^{ha} ^{hb} ^{hc} ^{hd} ^{he} ^{hf} ^{hg} ^{hh} ^{hi} ^{hj} ^{hk} ^{hl} ^{hm} ^{hn} ^{ho} ^{hp} ^{hq} ^{hr} ^{hs} ^{ht} ^{hu} ^{hv} ^{hw} ^{hx} ^{hy} ^{hz} ^{ia} ^{ib} ^{ic} ^{id} ^{ie} ^{if} ^{ig} ^{ih} ⁱⁱ ^{ij} ^{ik} ^{il} ^{im} ⁱⁿ ^{io} ^{ip} ^{iq} ^{ir} ^{is} ^{it} ^{iu} ^{iv} ^{iw} ^{ix} ^{iy} ^{iz} ^{ja} ^{jb} ^{jc} ^{jd} ^{je} ^{jf} ^{jj} ^{jk} ^{jl} ^{jm} ^{jn} ^{jo} ^{jp} ^{jq} ^{jr} ^{js} ^{jt} ^{ju} ^{jv} ^{jw} ^{jx} ^{ky} ^{kz} ^{la} ^{lb} ^{lc} ^{ld} ^{le} ^{lf} ^{lg} ^{lh} ^{li} ^{lj} ^{lk} ^{ll} ^{lm} ^{ln} ^{lo} ^{lp} ^{lq} ^{lr} ^{ls} ^{lt} ^{lu} ^{lv} ^{lw} ^{lx} ^{ly} ^{lz} ^{ma} ^{mb} ^{mc} ^{md} ^{me} ^{mf} ^{mg} ^{mh} ^{mi} ^{mj} ^{mk} ^{ml} ^{mm} ^{mn} ^{mo} ^{mp} ^{mq} ^{mr} ^{ms} ^{mt} ^{mu} ^{mv} ^{mw} ^{mx} ^{my} ^{mz} ^{na} ^{nb} ^{nc} nd ^{ne} ^{nf} ^{ng} ^{nh} ⁿⁱ ^{nj} ^{nk} ^{nl} ^{nm} ⁿⁿ ^{no} ^{np} ^{nq} ^{nr} ^{ns} ^{nt} ^{nu} ^{nv} ^{nw} ^{nx} ^{ny} ^{nz} ^{oa} ^{ob} ^{oc} ^{od} ^{oe} ^{of} ^{og} ^{oh} ^{oi} ^{oj} ^{ok} ^{ol} ^{om} ^{on} ^{oo} ^{op} ^{oq} ^{or} ^{os} ^{ot} ^{ou} ^{ov} ^{ow} ^{ox} ^{oy} ^{oz} ^{pa} ^{pb} ^{pc} ^{pd} ^{pe} ^{pf} ^{pg} ^{ph} ^{pi} ^{pj} ^{pk} ^{pl} ^{pm} ^{pn} ^{po} ^{pp} ^{pq} ^{pr} ^{ps} ^{pt} ^{pu} ^{pv} ^{pw} ^{px} ^{py} ^{pz} ^{qa} ^{qb} ^{qc} ^{qd} ^{qe} ^{qf} ^{qg} ^{qh} ^{qi} ^{qj} ^{qk} ^{ql} ^{qm} ^{qn} ^{qo} ^{qp} ^{qq} ^{qr} ^{qs} ^{qt} ^{qu} ^{qv} ^{qw} ^{qx} ^{qy} ^{qz} ^{ra} ^{rb} ^{rc} rd ^{re} ^{rf} ^{rg} ^{rh} ^{ri} ^{rj} ^{rk} ^{rl} ^{rm} ^{rn} ^{ro} ^{rp} ^{rq} ^{rr} ^{rs} ^{rt} ^{ru} ^{rv} ^{rw} ^{rx} ^{ry} ^{rz} ^{sa} ^{sb} ^{sc} ^{sd} ^{se} ^{sf} ^{sg} ^{sh} ^{si} ^{sj} ^{sk} ^{sl} sm ^{sn} ^{so} ^{sp} ^{sq} ^{sr} ^{ss} st ^{su} ^{sv} ^{sw} ^{sx} ^{sy} ^{sz} ^{ta} ^{tb} ^{tc} ^{td} ^{te} ^{tf} ^{tg} th ^{ti} ^{tj} ^{tk} ^{tl} tm ^{tn} ^{to} ^{tp} ^{tq} ^{tr} ^{ts} ^{tt} ^{tu} ^{tv} ^{tw} ^{tx} ^{ty} ^{tz} ^{ua} ^{ub} ^{uc} ^{ud} ^{ue} ^{uf} ^{ug} ^{uh} ^{ui} ^{uj} ^{uk} ^{ul} ^{um} ^{un} ^{uo} ^{up} ^{uq} ^{ur} ^{us} ^{ut} ^{uu} ^{uv} ^{uw} ^{ux} ^{uy} ^{uz} ^{va} ^{vb} ^{vc} ^{vd} ^{ve} ^{vf} ^{vg} ^{vh} ^{vi} ^{vj} ^{vk} ^{vl} ^{vm} ^{vn} ^{vo} ^{vp} ^{vq} ^{vr} ^{vs} ^{vt} ^{vu} ^{vv} ^{vw} ^{vx} ^{vy} ^{vz} ^{wa} ^{wb} ^{wc} ^{wd} ^{we} ^{wf} ^{wg} ^{wh} ^{wi} ^{wj} ^{wk} ^{wl} ^{wm} ^{wn} ^{wo} ^{wp} ^{wq} ^{wr} ^{ws} ^{wt} ^{wu} ^{wv} ^{ww} ^{wx} ^{wy} ^{wz} ^{xa} ^{xb} ^{xc} ^{xd} ^{xe} ^{xf} ^{xg} ^{xh} ^{xi} ^{xj} ^{xk} ^{xl} ^{xm} ^{xn} ^{xo} ^{xp} ^{xq} ^{xr} ^{xs} ^{xt} ^{xu} ^{xv} ^{xw} ^{ya} ^{yb} ^{yc} ^{yd} ^{ye} ^{yf} ^{yg} ^{yh} ^{yi} ^{yj} ^{yk} ^{yl} ^{ym} ^{yn} ^{yo} ^{yp} ^{yq} ^{yr} ^{ys} ^{yt} ^{yu} ^{yv} ^{yw} ^{za} ^{zb} ^{zc} ^{zd} ^{ze} ^{zf} ^{zg} ^{zh} ^{zi} ^{zj} ^{zk} ^{zl} ^{zm} ^{zn} ^{zo} ^{zp} ^{zq} ^{zr} ^{zs} ^{zt} ^{zu} ^{zv} ^{zw} ^{aa} ^{ab} ^{ac} ^{ad} ^{ae} ^{af} ^{ag} ^{ah} ^{ai} ^{aj} ^{ak} ^{al} ^{am} ^{an} ^{ao} ^{ap} ^{aq} ^{ar} ^{as} ^{at} ^{au} ^{av} ^{aw} ^{ax} ^{ay} ^{az} ^{ba} ^{bb} ^{bc} ^{bd} ^{be} ^{bf} ^{bg} ^{bh} ^{bi} ^{bj} ^{bk} ^{bl} ^{bm} ^{bn} ^{bo} ^{bp} ^{bq} ^{br} ^{bs} ^{bt} ^{bu} ^{bv} ^{bw} ^{bx} ^{by} ^{bz} ^{ca} ^{cb} ^{cc} ^{cd} ^{ce} ^{cf} ^{cg} ^{ch} ^{ci} ^{cj} ^{ck} ^{cl} ^{cm} ^{cn} ^{co} ^{cp} ^{cq} ^{cr} ^{cs} ^{ct} ^{cu} ^{cv} ^{cw} ^{cx} ^{cy} ^{cz} ^{da} ^{db} ^{dc} ^{dd} ^{de} ^{df} ^{dg} ^{dh} ^{di} ^{dj} ^{dk} ^{dl} ^{dm} ^{dn} ^{do} ^{dp} ^{dq} ^{dr} ^{ds} ^{dt} ^{du} ^{dv} ^{dw} ^{dx} ^{dy} ^{dz} ^{ea} ^{eb} ^{ec} ^{ed} ^{ee} ^{ef} ^{eg} ^{eh} ^{ei} ^{ej} ^{ek} ^{el} ^{em} ^{en} ^{eo} ^{ep} ^{eq} ^{er} ^{es} ^{et} ^{eu} ^{ev} ^{ew} ^{ex} ^{ey} ^{ez} ^{fa} ^{fb} ^{fc} ^{fd} ^{fe} ^{ff} ^{fg} ^{fh} ^{fi} ^{fj} ^{fk} ^{fl} ^{fm} ^{fn} ^{fo} ^{fp} ^{fq} ^{fr} ^{fs} ^{ft} ^{fu} ^{fv} ^{fw} ^{fx} ^{fy} ^{fz} ^{ga} ^{gb} ^{gc} ^{gd} ^{ge} ^{gf} ^{gg} ^{gh} ^{gi} ^{gj} ^{gk} ^{gl} ^{gm} ^{gn} ^{go} ^{gp} ^{gq} ^{gr} ^{gs} ^{gt} ^{gu} ^{gv} ^{gw} ^{gx} ^{gy} ^{gz} ^{ha} ^{hb} ^{hc} ^{hd} ^{he} ^{hf} ^{hg} ^{hh} ^{hi} ^{hj} ^{hk} ^{hl} ^{hm} ^{hn} ^{ho} ^{hp} ^{hq} ^{hr} ^{hs} ^{ht} ^{hu} ^{hv} ^{hw} ^{hx} ^{hy} ^{hz} ^{ia} ^{ib} ^{ic} ^{id} ^{ie} ^{if} ^{ig} ^{ih} ⁱⁱ ^{ij} ^{ik} ^{il} ^{im} ⁱⁿ ^{io} ^{ip} ^{iq} ^{ir} ^{is} ^{it} ^{iu} ^{iv} ^{iw} ^{ix} ^{iy} ^{iz} ^{ja} ^{jb} ^{jc} ^{jd} ^{je} ^{jf} ^{jj} ^{jk} ^{jl} ^{jm} ^{jn} ^{jo} ^{jp} ^{jq} ^{jr} ^{js} ^{jt} ^{ju} ^{jv} ^{jw} ^{jx} ^{ky} ^{kz} ^{la} ^{lb} ^{lc} ^{ld} ^{le} ^{lf} ^{lg} ^{lh} ^{li} ^{lj} ^{lk} ^{ll} ^{lm} ^{ln} ^{lo} ^{lp} ^{lq} ^{lr} ^{ls} ^{lt} ^{lu} ^{lv} ^{lw} ^{lx} ^{ly} ^{lz} ^{ma} ^{mb} ^{mc} ^{md} ^{me} ^{mf} ^{mg} ^{mh} ^{mi} ^{mj} ^{mk} ^{ml} ^{mm} ^{mn} ^{mo} ^{mp} ^{mq} ^{mr} ^{ms} ^{mt} ^{mu} ^{mv} ^{mw} ^{mx} ^{my} ^{mz} ^{na} ^{nb} ^{nc} nd ^{ne} ^{nf} ^{ng} ^{nh} ⁿⁱ ^{nj} ^{nk} ^{nl} ^{nm} ⁿⁿ ^{no} ^{np} ^{nq} ^{nr} ^{ns} ^{nt} ^{nu} ^{nv} ^{nw} ^{nx}

PREFACE

xix

दृश्यते for न्यायावपि च विरोधमादर्शिता यमल्यं—which can in no way be supported. The Tibetan text supports the reading in the printed text. 176°¹ अथागमविरोधस्य प्रवेश उपदिश्यते for अथागमविरुद्धं ते प्रवेशावपि दर्शिताः—which does not give any suitable sense, nor is correct grammatically.

Sanskrit readings found in the Tibetan xylograph differ in many places from those known to us in the printed edition referred to; e.g.

Chap. I. 1° दीर्घं for नित्यं ; 2^b उपलक्ष्य for उपलभ्य ; 10^b अलंकारः for अलंकाराः ; 12° विविचूणां for तित्तीर्षूणां ; 13° अंश for अंग ; 15° आयत्तं for उपेतं ; 19^a सर्गान्तैः for वृत्तान्तैः ; 19^b रञ्जनं for रञ्जकं ; 20^b वर्ज्यते for दुष्यति ; 22^a कथनं for वर्णनं ; 25^a कारणं for लक्षणं ; 26^b साश्वासत्वं for सोच्छ्वासत्वं ; 27^a आश्वासः for उच्छ्वासः ; 29^a न ते for नैते ; 32^a आप्ताः for आर्याः ; 36^b स्थितिः for स्मृताः ; 35° शास्त्रे for शास्त्रेषु ; 37^b स्कन्धकादि यत् for स्कन्धकादिकं ; 37° ओसरादीनि for आसारादीनि ; 38° कथादि for कथाहि ; 38^b पठ्यते for बध्यते ; 38° त्वाहुः for प्राहुः ; 39^a शाम्यादि for शल्यादि ; 42^a लक्ष्यते for दृश्यते ; 49^a आननं for मुखं ; 50° ववृते for ववृधे ; 51^b स्थितः for स्थितिः ; 52° तद्रूपादि for तद्रूपाहि ; 53° तदा for ततः ; 54^a ईप्सितं for इष्यते ; 57^a कर्तुं for हन्तुं ; 63^a वैरस्यायैव कल्पते for वैरस्याय प्रकल्पते ; 67^a परं for खरं ; 69° हि for तु ; 71^a मुखं for मनः ; 72° क्षपितः for क्षयितः 78° अन्यच्च for अन्यत् ; 85^a विद्यते for दृश्यते ; 89^a यथा for जनाः ; 97^a मतो for स्मृतो ; 99° इह for इमे ; 99^a अन्यत् for अप्यत्.

Chap. II. 2° प्रतिसंस्कर्तुम् for परिसंस्कर्तुम् ; 3^a अथ for अन्यत् ; 6^a श्लिष्ट for श्लेष ; 7^b संसृष्टिः for सङ्कीर्णम् ; 10° परिक्षिप्य for परिभ्रम्य ; 14^a प्रदर्शयते

PREFACE

for निदर्शयते ; 15^d प्रकाशनात् for प्रदर्शनात् ; 17^a त्वद् for तव ; 28^a मता for स्मृता ; 30ⁱ मता for स्मृता ; 31ⁱ इष्यते for उच्यते ; 33ⁱ उदिता for मता ; 40ⁱ प्रथयन्ती for बोधयन्ती ; 42^a एव सा for मता ; 48^a समाहृत्य for समीकृत्य ; 50ⁱ स्मृता for मता ; 54^a इत्येवमादि for इत्येवमादौ ; 54^o च for एव ; 56^b त्वत् for तत् ; 60^b अन्यूनार्थवाचिनः for अन्यूनार्थवादिनः ; 62^a संरुन्धे for सन्धत्ते ; 64ⁱ सादृश्यसूचिनः for सादृश्यसूचकाः, 65^b इष्यते for उच्यते ; 71^a धर्म्माम्बु for धर्म्माम्भः, 74^o मुग्धे for मुग्धः ; 75^b च for अपि ; 82ⁱ पश्यति for कल्पते ; 97^o नवाय च नताङ्गीनां for स एवावनताङ्गीनां ; 100ⁱ देवतर्धयः for दैवतर्धयः ; 105^a वर्णात्पलं for नीलोत्पलं ; 113^b अपि for तथा ; 114^o अनुगति for अवगति ; 115^b इत्यपि for एव च ; 116^b कुटजोद्गमाः for कुटजद्रुमाः ; 117^b वर्गं for वृन्दं ; 117^o अथ for एष ; 118^a अथ for अत्र ; 128^d तत् नाश्रयः for न तदाश्रयः ; 129^o अत्र for एव and तद् for यद् ; 132ⁱ न्वहं for न्विदं ; 137^a प्रत्याचक्षाण्या for इत्याचक्षाण्या ; 137^b विबन्धिनः for अनुबन्धिनः ; 137ⁱ ईदृशः for उच्यते ; 144ⁱ प्रतिबन्धिनः for परिपन्थिनः ; 145ⁱ एकान्तरक्त्या for एवानुरक्त्या ; 146^b मत्प्रियं for त्वत्प्रियं and त्वत्प्रियैषिणी for मत्प्रियैषिणी ; 149ⁱ उपसूचनात् for उपदर्शनात् ; 153ⁱ निवार्यते for निषिध्यते ; 154ⁱ जीर्णं for नीलं ; 161^o दर्शयित्वेति for दर्शयित्वेह ; 162^b तृप्यति for शाम्यति ; 163^b अयं निवर्त्यते for यन्निवर्त्यते ; 172^a आह्लादयति for आनन्दयति ; 180ⁱ च्छविः for द्युतिः ; 182^o इयता for अयन्तु ; 182ⁱ जलात्मा for जडात्मा ; 186ⁱ सोनुविधीयते for सोप्यभिधीयते ; 190ⁱ लोलदृष्टि for लोलनेत्रं ; 192^b वियदम्भसोः for चन्द्रहंसयोः ; 192^d चन्द्रहंसयोः for वियदम्भसोः ; 195ⁱ अदर्शयत् for अदर्शयत् ; 197^o सूक्ष्म for शुद्ध ; 199^b हेतुक्रं for हेतुजं ; 207^o सच्छायः for सुच्छायः,

PREFACE

xxi

215° अनुपपत्त्यैव for नोपपद्यते ; 215^a स्थितेः for स्थितिः ; 219^a उत्सुकः for उद्यतः ; 222° चैवन्तु for चेत्येवं ; 222^a कथ्यते for वर्यते ; 224^a जन्यते for जायते ; 226^a अनुन्मत्तो for उन्मत्तो ; 230^a उत्प्रेक्षित for उत्प्रेक्षत and इतीष्यते for इतीष्यतां ; 236^a मनोज्ञारोचके for मदनाग्न्यातुरे ; 240^b कृतां for स्थितां ; 243^a व्याक्रियन्ते for व्याहियन्ते ; 245^a आश्रये for आश्रमे ; 260^a त्वदर्पित for मदर्पित ; 266^a एव for एष ; 276^a अनुगम्यतां for अवगम्यतां , 277° सैवावन्ती for सैषा तन्वी ; 283° देवी for तन्वी ; 291^a इति मुक्तः for एवमुक्त्वा ; 295^b दैवबलात् for दैववशात् ; 296^a तस्याः for अस्याः ; 296^b नमस्यतः for पतिष्यतः ; 300° अतिव्यक्तं for इति प्रोक्तं ; 302^a शीता किल for मयि शीता ; 304^b नाम नो for नामतो ; 311° वा for च ; 323^a कुलं for बलं ; 325^a जगद्भयं for नभस्तलं ; 326^a कल्प्यते for कल्पने ; 327^a स्मृता for मता ; 329^b अपि for च ; 335^a लोचनम् for लोचने ; 337^a अप्रकान्तेप्सिता for अप्रकान्तेषु या ; 344^a प्रविस्तरः for विस्तरः ; 346^a एव for एष ; 348^a सह-भावस्य for सहभावेन ; 348^a यथा for स्मृता ; 349° पाण्डराः for पाण्डुराः ; 350^a अश्रुभिः for असुभिः ; 352^a निरूपणं for निदर्शनं ; 353^a पाण्डरं for पाण्डुरं ; 355^a कीर्तितं for दर्शितं ; 356^a संसृष्टिः कथ्यते पुनः for सङ्कीर्णान्तु निगद्यते ; 360^a यः स्थितः for संस्थितः.

Chap. III. 6^b साम्प्रतं for सत्पतिं ; 8^a किन्निन्दं for किनु ते ; 21° वा for च ; 38^b ईप्सिताः for ईहिताः ; 41° आमोद for आनन्द ; 41^a न मे फलं किञ्चन for प्रयोजनं नास्ति हि ; 55^a तापनेन for तायनेन ; 63^a पिष्टपस्य for विष्टपस्य ; 80^a आहुः for प्राहुः ; 111^a तायवो for वायवो ; 117^a जनं for नरं ; 119^b रुषा for कुधा ; 127^b च for वा ; 129^{a-b} सोयमहमद्य for देवैरहमस्मि ; 129^a ऐरावतः for ऐरावणः ; 132^a कुलं for बलं ; 132° न च ते कोपि for तव नैकोऽपि ; 137^a

अलङ्कृतिः for अलङ्किया ; 145^b अजाः for अमी ; 146^a न दोषं सूरयो यथा for सूरयो नैव दूषणं ; 153^a एष for एवं ; 156^a यत्र for तत्र ; 158^a वियुक्ता for विमुक्ता ; 158^a मदनवाणा for स्मरस्य वाणा ; 158^a मृगेक्षणा for वामेक्षणा ; 160^a अस्मन्मनस्यपि for अस्मद्वपुष्यपि ; 161^a न्यङ्गं for न्यस्तं ; 165^a अस्पर्शा for अमर्श ; 174^{a-b} सुगतैः संस्कृताभङ्गः [सत्यमेवोदितोऽपि चेत्] for सत्यमेवाह सुगतः संस्कारानविनश्वरान् ; 176^a प्रवेश उपदिश्यते for प्रश्नानमुपदिश्यते ; 184^b सकलः for सफलः and निष्कलः for निष्फलः ; 185^b कन्यका for पुत्रिका.

The differences between our readings of the text and those of Dr. F. W. Thomas (J R A S . , 1903, pp. 349-354) are noted below for comparison : —

Chap. I. 12^a विविक्षणां for तितोर्षूणां ; 13^a अंश for अंग ; 20^a उपात्तेषु सम्पत्तिः for उपात्तार्थसम्पत्तिः ; 60^b नियच्छति for निगच्छति ; 62^a एनं for एतं ; 80^b एतद् for तद्.

Chap. II. 2^a प्रतिसंस्कृतुं for परिसंस्कृतुं ; 10^a परिक्षिप्य for परिवृत्त्य ; 62^a संरन्ध्रे for सन्धत्ते ; 64^a सूचिनः for सूचकः ; 82^a पश्यति for यस्यति ; 134^a यातव्यं for याहि त्वं ; 142^a रन्ध्रावेक्षेण for रन्ध्रान्वेषण ; 148^a त्वं for ते ; 149^a अस्यार्थस्य for तस्यार्थस्यैव ; 155^b सानुकोशमिवोत्पले for सानुकोशोऽयमाक्षेपः ; 182^a इयता for अयं तु ; 197^a सूक्ष्माम्बु for शुद्धाम्बु ; 255^a रागबालातपः for रविबालातपः ; 300^a अतिव्यक्तं for प्रोक्तं ; 310^b यद् for यत्तु ; 343^a संसक्ता for संक्रान्ता ; 350^a अश्रुभिः for असुभिः ; 364^a एष for एव.

Chap. III. 38^a वर्ण्यन्ते for वक्ष्यन्ते ; 41^a आमोद for आनन्द ; 70^a तस्यापि for तत्रापि ; 158^a मदनवाणा for स्मरस्य वाणा.

With reference to the xylograph used by Dr. F. W. Thomas he himself observes that in some cases (viz. II. 155, 362, and III. 128) it is scarcely decipherable. Sometimes he has given the Tibetan readings only, and not also the Sanskrit ones; as for instance, II. 109, 118; III. 141.

There is a peculiar word in the Tibetan transliteration which should be noted here. In II. 116^b we read कुटजोङ्गमाः for कुटजद्रुम. It seems that *uṅgama* in *Kuṭajoṅgama* is from Sanskrit *udgama* through Prakrit *uggama* owing to spontaneous nasalisation. Cf. *puṅgala* in Buddhist Sanskrit for *pudgala*. The word *udgama*, literally 'shootingforth' appears to mean 'a bud.'

Asterisks are put to indicate the difference between the two texts, Sanskrit and Tibetan. According to the printed Sanskrit text, one line in II. 56 and another in II. 65 are not to be found in the Tibetan xylograph, and consequently the number of the ślokas has differed in the two. Thus the śloka II. 65 in our text is II. 66 in the printed Sanskrit text, and so on. Again, ślokas II. 155, 156 and 362 are omitted in our xylograph. Discrepancy is also noticed in the arrangement of some of the ślokas; e.g. II. 156, 160 and 161 in our text are II. 161, 159 and 160 respectively in the printed text. Again according to the printed Sanskrit text, both the Sanskrit and Tibetan of a line in III. 161 are missing, but the Sanskrit has been adjusted in our text omitting the Tibetan and consequently there have been put some dots in the Tibetan portion to indicate the omission. In a rare instance, e.g., in śloka III. 64, the second line

in the xylograph stands as third, and the third line as second in the printed Sanskrit text.

Incidentally it may be observed here that the *Kāvyaḍarśa* is not the only Sanskrit text transliterated in Tibetan script; it is just one of the many. The study of the remaining works may prove equally useful and interesting.

Before concluding this preface, I have to fulfil the agreeable duty of acknowledging my indebtedness to Mahāmahopādhyāya Professor Vidhushekhara Bhattacharya, Asutosh Professor of Sanskrit, Calcutta University, who initiated me into Tibetan Studies and has provided me with facilities for work in various ways. Thanks are due to Lama Lobzang Mingyur Dorje, Instructor in Tibetan, Calcutta University, for kindly revising the text in proofs. I must also thank my friends Mr Durgadas Mookerjee, M.A., and Mr Ajit Ranjan Bhattacharya, M.A., for their occasional assistance.

Lastly I must also express my thanks to Mr. J. C. Sarkhel, Manager, Calcutta Oriental Press and his staff who have never been found lacking in courtesy while this work was being seen through the press.

The University of Calcutta,
July, 1939.

ANUKUL CHANDRA BANERJEE

KĀVYĀDARŚA

[1b] नम आर्यमञ्जुश्रीकुमारभूताय

འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གཞིན་རྒྱུ་གྱུར་པ་ལ་ ཕུག་འཆལ་ལོ ॥

चतुर्मुखमुखाम्भोजवनहंसवधूर्मम ।

मानसे रमतां दीर्घं सञ्चशुक्ला सरस्वती ॥१॥

གདོང་བཞི་ གདོང་གི་ བད་ཆལ་གྱི །

ངང་བའི་ བུ་མོ་ ཐམས་ཅད་དཀར །

དབྱངས་ཅན་མ་ རི་ ཁོ་བོ་ཡི །

ཡིད་ལ་ རིང་དུ་ གནས་པར་མཛོད ॥ १

पूर्वशास्त्राणि संहृत्य प्रयोगानुपलक्ष्य च ।

यथासामर्थ्यमस्माभिः क्रियते काव्यलक्षणं ॥२॥

བསྐྱན་བཅོས་སྒྲ་མ་ནམས་ བསྐྱུས་ཤིང་ །

སྒྲིང་བ་ནམས་ ཀྱང་ ཉེར་མཆོན་ དེ །

ཇི་ལྟར་རྣམ་བཞིན་ བདག་གིས་ནི །
སྒྲན་ངག་ དག་གི་ མཚན་ཉིད་བྱ ། ༢

इह शिष्टानुशिष्टानां शिष्टानामपि सर्वथा ।
वाचामेव प्रसादेन लोकयात्रा प्रवर्तते ॥३॥

འདི་ན་ ཀུན་དུ་ མཆོག་རྣམས་ཀྱིས་ །
ཇིས་སྒྲ་བཟླན་ དང་ ལྷག་མའི་ཡང་ །
ཆོག་རྣམས་ཉིད་ ཀྱི་ རིན་གྱིས་ ནི །
འཇིག་རྟེན་ལྷགས་ལ་ འཇུག་པར་བྱིད་ ། ༣

इदमन्धन्तमः कृत्स्नं जायते भुवनत्रयं ।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते ॥४॥

གལ་དེ་ ལྷས་པོད་ སྒྲ་བ་ཡིས་ །
འཁོར་བ་ གསལ་བར་མ་བྱས་ན་ །
འཇིག་རྟེན་གསུམ་པོ་ མཐའ་དག་ འདི །
སྒྲག་རྣམ་སྒྲན་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་ ། ༤

आदिराजयशोबिम्बमादर्शं प्राप्य वाङ्मयं ।
तेषामसन्निधानेपि न स्वयम्पश्य नश्यति ॥५॥

ཨྲིན་གྱི་ཀླུ་པ་པོ་ བྲག་ས་པའི་བཟུགས།
ངག་གི་རང་བཞིན་ མེ་ལོང་ ཐོབ།
དེ་དག་ཉི་པར་མི་གནས་ ཀྱང་།
རང་ཉིད་ ཉམས་པ་མེད་ལ་ རྩེས། ॥ ५

गौर्गौः कामदुघा सम्यक् प्रयुक्ता स्मर्यते बु[2a]धैः ।
दुष्प्रयुक्ता पुनर्गोत्वं प्रयोक्तुः सैव शंसति ॥६॥

མཁས་པས་ ཡང་དག་ རབ་སྐྱར་བའི།
ངག་ནི་ འདོད་འཛོལ་ བ་རུ་ བཤད།
དེ་ཉིད་ ཉམས་པར་སྐྱར་ ཅ་ སྒྲར།
སྐྱར་པོ་ བ་ལང་ཉིད་ བཛོད་བྱེད། ॥ ६

तदल्पमपि नोपेक्ष्यं काव्ये दुष्टं कथञ्चन ।
स्याद्वपुः सुन्दरमपि श्वित्रेणैकेन दुर्भगं ॥७॥

དེ་ཕྱིར་ སྒྲན་ངག་ དག་ལ་ སྒྲན་ །
 རུང་བར་གྱར་ ཀྱང་ ཅི་ཞིག་ ལྟར་ །
 བཤང་སྒྲོམས་མི་བྱ་ ལུས་མཛེས་ཀྱང་ །
 སྒྲན་གཅིག་གིས་ནི་ སྐལ་ངན་འགྱུར་ ॥ ४ ॥

गुणदोषानशास्त्रज्ञः कथं विभजते जनः ।
 किमन्धस्याधिकारोस्ति रूपभेदोपलब्धिषु ॥८॥

སྒྲེ་བོ་ བསྐྱར་བཅོས་ མི་ཤེས་བས་ །
 ཡོན་དན་ སྒྲན་དག་ ཇི་ལྟར་དབྱེ་ །
 གཞུགས་ཀྱི་དབྱེ་བ་ དམིགས་པའི་སྐབས་ །
 ཡོང་བ་དག་ལ་ ཡོད་དམ་ཅི་ ॥ ८ ॥

अतः प्रजानां व्युत्पत्तिमभिसन्धाय सूरयः ।
 वाचां विचित्रमार्गाणां निबबन्धुः क्रियाविधिम् ॥९॥

དེ་ཕྱིར་ མཁས་པས་སྒྲེ་དག་ནམས་ །
 བྱེ་བྲག་དྲིགས་ལ་ མངོན་དགོངས་ནས་ །

ནམ་བཀྲ་ལམ་ལྷན་ ཚོག་ནམས་ ཀྱི །

བྱ་བའི་ཚོག་ ཇེས་པར་སྤར ། ༡

तैः शरीरं च काव्यानामलंकारश्च दर्शितः ।

शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली ॥१०॥

དེ་དག་གིས་ནི་ ལྷན་ངག་གི །

ལུས་དང་ བྱན་ ཡང་ རབ་བྱ་བསྒྲན །

ལུས་ ནི་ རི་ཞིག་ འདོད་པ་ཡི །

དོན་གྱི་ནམ་བཅད་ ཚོག་གི་ སྤང་ ། ༡

पद्यं गद्यञ्च मिश्रञ्च तन्निधैव व्यवस्थितम् ।

पद्यञ्चतुष्पदी तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा ॥११॥

དེ་ཡང་ ཚོགས་བཅད་ ལྷག་པ་ དང་ །

སྤེལ་མ་ ནམ་གསུམ་ ཉིད་དུ་ གནས །

ཚོགས་བཅད་ ཀྱང་བཞི་པ་ དེ་ཡང་ །

བྱིད་ རྩ་དེ་ ཞེས་ ནམ་གཉིས ། ༡

छन्दोविचित्यां स[2b]कलस्तत्प्रपञ्चो निदर्शितः ।
सा विद्या नौर्विविक्षूणां गम्भीरं काव्यसागरं ॥१२॥

དེ་ཡི་སྒྲིལ་བ་ མཐའ་དག་ནི །
སྒྲིལ་སྒྲིལ་ གཞུང་དུ་ ཇེས་བར་བསྟན །
རིག་དེ་ སྟན་ངག་ རྒྱ་མཚོ་ནི །
ཟབ་མོར་ འཇུག་ འདོད་ རྣམས་ ཀྱི་གུ ॥ १२

मुक्तकं कुलकङ्क्षेपः संघात इति तादृशः ।
सर्गबन्धांशरूपत्वादनुक्तः पद्यविस्तरः ॥१३॥

གྲོལ་བ་ དང་ནི་ རིགས་ དང་ མཚོད །
འདུས་བ་ ཞེས་བྱ་ དེ་འདྲ་ཡི །
ཆོགས་བཅད་ རྒྱ་ཆེ་ སྐྱེས་ བཅེངས །
ཆ་གས་ རང་བཞིན་ ཤིར་ མ་བཟོད ॥ १३

सर्गबन्धो महाकाव्यमुच्यते तस्य लक्षणं ।
आशीर्नमष्क्रिया वस्तुनिर्देशो वापि तन्मुखं ॥१४॥

སཀས་ བཅིངས་པ་ ལྷན་ངག་ཆེ།

དེ་ཡི་ མཚན་ཉིད་ བཛྲོད་པར་བྱ།

ཤིས་ བཛྲོད་ ཕྱག་བྱ་ དངོས་པོ་ནི།

ངེས་པར་ བསྟན་པའང་ དེ་ཡི་སྒྲོ་ ॥ १४

इतिहासकथोद्भूतमितरद्वा सदाश्रयं ।

चतुर्वर्गाफलायत्तं चतुरोदात्तनायकं ॥१५॥

སྟོན་བྱང་གདམ་ ལས་ བྱུར་པའམ། ॥

ཅིག་ཤོས་ ལེགས་པ་ལ་ བརྟེན་པ།

སྡེ་བཞི་ འབྲས་བུའི་ དབང་གྱུར་ དང་།

མཁས་ཤིང་ ཀྱ་ཆེའི་ འདྲིན་པ་ཅན། ॥ १५

नगरार्णवशीलर्तुचन्द्रार्कोदयवर्णनैः ।

उद्यानसलिलक्रीडामधुपानरतोत्सवैः ॥१६॥

གྲོང་ཁྱིམ་ ཀྱ་མཚོ་ རི་དང་ རྩམ།

ཉི་ཟླ་འཆར་བའི་ བསྐྱུགས་པ་ དང་།

མྱེད་ཚལ་ཅུ་ཡི་ རོལ་ཅེད་ དང་ ।

ཆང་འབྲང་ དགའ་བའི་ དགའ་སྟོན་དང་ ॥ ༡༩

विप्रलम्भैर्विवाहैश्च कुमारोदयवर्णनैः ॥

मन्त्रदूतप्रयाणाजिनायकाभ्युदयैरपि ॥१७॥

བསྐྱུ་བ་ དང་ནི་ བག་ས་ དང་ ।

གཞིན་རྒྱ་སྐྱེ་ དང་ འཕེལ་བ་ དང་ ।

གྲོས་ དང་ ཐོ་ཉ་ བགྲོད་པ་དང་ ।

གཡུལ་དང་ འཕྲིན་པ་ དར་བས་ ཀྱང་ । ༢༠

अलंकृतमसंक्षिप्तं रसभावनिरन्तरं ।

सर्गैरनतिविस्तीर्णैः श्रव्यवृत्तैः सुसन्धिभिः ॥१८॥

བརྒྱན་པར་གྱུར་ཅིང་ མདོར་བསྐྱུས་ མིན་ ।

ཉམས་དང་ འགྱུར་བ་ དག་གིས་ གཏམ་ ।

སྐྱེ་ལྷན་དུ་ གྲུ་ཆེ་ མིན་ ।

མཉན་འེས་ སྒྲིང་ ལེགས་མཚམས་སྐྱུར་ ॥ ༢༡

सर्वत्र भिन्नसर्गान्तै[3a]रूपेतं लोक*रञ्जनं ।
काव्यं कल्पान्तरस्थायि जायते सदलंकृति ॥१९॥

गुणं दुः सङ्गं दण्णं वीं सप्रद ।
प्रदं दण्णं वसं दण्णं देवं सदेव ।
सङ्गं दण्णं दण्णं वसं दण्णं देव ।
वसं दण्णं वसं दण्णं वसं दण्णं ॥ २८

न्यूनमप्यत्र यैः कैश्चिदंगैः काव्यं नः वज्यंते ।
यद्युपात्तेषु सम्पत्तिराराधयति तद्विदः ॥२०॥

वसं देवं वसं देवं वसं देव ।
वसं देवं वसं देवं वसं देव ।
वसं देवं वसं देवं वसं देव ।
वसं देवं वसं देवं वसं देव ॥ ३०

गुणतः प्रागुपन्यस्य नायकं तेन विद्विषां ।
निराकरणमित्येष मार्गः प्रकृतिसुन्दरः ॥२१॥

ཐོག་མར་ འདྲན་པ་ ཡོན་ཏན་ གྱིས།
 ཉི་བར་ བཀོད་ནས་ དེ་ཡིས་ནི།
 དག་ལ་ བཀོད་པ་བྱེད་ ཅེས་པའི།
 ལས་འདི་ རང་བཞིན་ མཛེས་པ་ ཡིན། ॥ २१

वंशवीर्यश्रुतादीनि वर्णयित्वा रिपोरपि ।
 तज्जयान्नायकोत्कर्षकथनञ्च धिनोति नः ॥२२॥

རིགས་ དང་ བཙོན་འགྲུས་ ཐོས་ སོགས་གྱིས།
 དག་པོ་ལ་ ཡང་ བསྐྲགས་བྱས་ནས།
 དེ་ལས་ རྒྱལ་བར་ འདྲན་པ་ ནི།
 བྱེད་འཕགས་ བཙོན་པ་འང་ བདག་ དགའ་སྦྱིས། ॥ २२

अपादपदसन्तानो गद्यमाख्यायिका कथा ।
 इति तस्य प्रभेदौ द्वौ तयोराख्यायिका किल ॥२३॥

ཀྱང་པ་མེད་པའི་ ཆོག་རྒྱན་ ནི།
 ལྷུག་པ་ བཙོན་པ་ དག་ དང་ བཀྲམ།

ཞེས་པ་ དེ་ཡི་ རབ་དབྱེ་ གཉིས་ །

དེ་ལ་འདྲིན་པ་ ཉིད་གྱིས་ བློ་ ॥ २३

नायकेनैव वाच्यान्या नायकेनेतरेण वा ।

स्वगुणाविक्रिया दोषो नात्र भूतार्थशंसिनः ॥२४॥

བཟོད་པར་བྱ་བ་ བཟོད་པ་ལོ་ །

གཞན་ནི་ འདྲིན་པ་ལས་ གཞན་ གྱིས་ ཀྱང་ །

རང་གི་ ཡོན་ཏན་ བསྐྱབས་ སྟོན་ འདིར་ །

ཡང་དག་དོན་ བསྐྱབས་ སྟོན་ ཡོད་མིན་ ॥ २४

अपि त्वनियमो दृष्टस्तत्राप्यन्यैरुदीरणात् ।

अन्यो वक्ता[3b] स्वयं वेति कीदृग्वा भेदकारणं ॥२५॥

འོན་ཀྱང་ ཇེས་པ་ མ་མཐོང་ལྟེ་ །

དེར་ཡང་ གཞན་གྱིས་ བཟོད་པའི་སྟོན་ །

གཞན་གྱིས་བཟོད་ དེ་ རང་གིས་ ཞེས་ །

དབྱེ་བའི་ཀྱི་ བློ་ ཅི་འདྲ་ཞིག་ ॥ २५



वक्तृञ्चापरवक्तृश्च साश्वासत्वश्च भेदकं ।

चिह्नमाख्यायिकायाश्चेत्प्रसङ्गेन कथास्वपि ॥२६॥

གཡ་ཏེ་ མཚོ་ ༥༨་ གཞན་ མཚོ་ ༥༨་ །

དབྱུགས་ མཚམས་ བཅས་ཉིད་ བཟོད་པ་ཡི།

ཐ་དད་པ་ཡི་ ཉམས་ ཡིན་ ན །

ཞེར་གྱིས་གདམ་ རྣམས་ དག་ལ་ཡང་ ॥ ༢༩

आर्यादिवत्प्रवेशः किं न वक्त्रापरवक्त्रयोः ।

भेदश्च दृष्टो लम्भादिगश्वासो वास्तु किन्ततः ॥२७॥

འཕགས་མ་ མོགས་ བཞིན་ རྩོ་ དང་ནི།

གཞན་གྱི་སྒོ་ དག་ ཅིས་ མི་འཇུག །

ལྷ་མོ་ རོགས་སམ་ ལྷ་མོ་སམ།

དབྱེ་བ་ མཐོང་ཡང་དེ་ ལས་ཅི ༥ ༣༧

तत्कथाख्यायिकेत्येका जातिः संह्याद्वयाङ्किता ।

तत्रैवान्तर्भविष्यन्ति शेषास्त्वाख्यानजातयः ॥२८॥

དེ་ཕྱིར་ བཀྲམ་ དང་ བཟློང་པ་ ཞེས།
 མིང་ བཀྲིས་ དག་གིས་ རིགས་བཅིག་ མཚོན།
 ལྷག་མ་ བཟློང་པའི་ རིགས་ རྣམས་ ཀྱང་།
 འདི་ཉིད་ ནང་དུ་ འདུས་པར་ འགྱུར། ॥ ༢༤

कन्याहरणसंग्रामविप्रलम्भोदयादयः ।
 सर्गबन्धसमा एव न ते वैशेषिका गुणाः ॥२६॥

བྱ་མོ་འཕྲོག་ དང་ བཀྲམ་ དང་ རི།
 བསྐྱུ་བ་ དར་བ་ ལ་སློགས་པ།
 སྐྱེས་བཅིངས་པ་ མཚུངས་པ་ཉིད།
 དེ་དག་ ཟུང་བྱེད་ ཡོན་དན་ མིན། ॥ ༢༥

कविभावकृतं चिह्नमन्यत्रापि न दुष्यति ।
 मुखमिष्टार्थसंसिद्धौ किं हि न स्यात्कृतान्मनाम् ॥३०॥

ལྷན་ངག་མཁན་གྱི་ བསམ་བྱས་ དགས།
 བཀྲམ་དུ་ དང་ རི་ ལྷན་མི་ འགྱུར།

संस्कृतं नाम देवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः ।
तद्भवन्तत्समन्देशीत्यनेकः प्राकृतक्रमः ॥३३॥

लेणसःसुः लेसःसुः ह्यःपिः कि ।
स्रदःदुः दःस्रदः केनःपेसः वसुदसः ।
देःस्रसः देःस्रदसः पुनःउरः लेसः ।
दुःसः दःस्रदः देवःपिः दिसः ॥ ३३

महाराष्ट्राश्रयाम्भायां प्रकृष्टम्प्राकृतं विदुः ।
सागरः सूक्तिरत्नानां सेतुबन्धादि यन्मयं ॥३४॥

पुनःपुनःकेनःपेः पुनःपुनः स्रदः ।
लेणसःपुनः देनःकेनः देवःपिः स्रदः ।
सोःदुसः पुनःदसः सोःपुनः दःस्रदः वदः ।
दःस्रदः स्रदःपुनः पुनःपुनः देवः ॥ ३४

सौरसेनी च गौडी च लाटी चान्या च तादृशी ।
याति प्राकृतमित्येव व्यवहारेषु सन्निधिः ॥ ३५॥

སྐྱ་ར་སྐྱ་རྒྱ་གོ་རྒྱ་དང་།

ལྷ་རྒྱ་གཞན་ཡང་དེ་འདྲ་ཡི།

སྐད་ནི་རང་བཞིན་ཉིད་ཅེས་བུའི།

ཐ་སྐད་ནམས་ལ་ཉེ་བར་འགྱུར་༥ ༣༥

आभीरादिगिरः काव्येष्वपभ्रंश इति स्थितिः ।

शास्त्रे तु संस्कृतादन्यदपभ्रंशतयोदितं ॥३६॥

བ་ཡང་ཇི་ལ་སྐྱ་གས་བའི་ཆོག།

སྐད་ངག་ལ་ཟུར་ཆག་ཅེས་གནས།

བསྐད་བཅོས་ནམས་ལས་ལྷགས་སྐར་ལས།

གཞན་པ་ཟུར་ཆག་ཉིད་དུ་བཞིན་༥ ༣༦

संस्कृतं सगन्ध्यादि प्राकृतं स्कन्धकादि यत् ।

ओसरादन्यपभ्रंशो नाटकादि तु मिश्रकं ॥३७॥

ལྷགས་སྐར་སྐྱ་གས་བཅོས་ལ་སྐྱ་གས།

རང་བཞིན་སྐད་ཀ་སྐྱ་གས་དང་།

ད

ཐུར་ཆག་ ཨོ་ས་ར་ སོགས་དེ།

ཁྲིས་གར་ ལ་སོགས་ འདྲིས་པའོ། ॥ ३५

कथादि सर्वभाषाभिः संस्कृतेन च *पठ्यते ।

भूतभाषामयीं त्वाहुरद्भुतार्थां बृहत्क[4b]थां ॥३८॥

གདམ་ སོགས་ སྒྲ་ རྣམས་ བསམས་ཅད་དང་།

ལོགས་སྐར་གྱིས་ ཀྱང་ བཅིངས་པ་ལྟེ།

མད་བྱང་ རོན་ཅན་ ཀྱ་ཆེན་གདམ།

འབྱང་པོའི་སྒྲ་གྱི་ རང་བཞིན་ བཟློད། ॥ ३७

लास्यच्छलितशाम्यादि प्रेक्ष्यार्थमितरत्पुनः ।

श्रव्यमेवेति सैषापि द्वयी गतिरुदाहृता ॥३९॥

སྐྱེག་ དང་ རོལ་ དང་ སྐབས་ ལ་སོགས།

ལྷ་བའི་རོན་ ཡིན་ ཅིག་ཤོས་ ཀྱང་།

སཉན་པར་བྱ་བ་ཉིད་ ཅེས་པ།

འདི་ཡང་ ལྷགས་གཉིས་ དག་ཏུ་ བཟློད། ॥ ३८

ཡོན་ཏན་ འདི་ བཅུ་ བེ་དགྲའི།
 ལམ་གྱི་ སློག་ཏུ་ བཤད་པ་ ཡིན།
 འདི་དག་ ཕལ་ཆེར་ བསྐྱོག་པས་ ནི།
 བོ་ཏའི་ལམ་ དག་ མཆོན་པ་ ཡིན། ॥ ༨༢

श्लिष्टमस्पृष्टशैथिल्यमल्पप्राणाक्षरोत्तरं ।

शिथिलं मालतीमाला लोलालिकलिला *यथा ॥४३॥

སྐར་བ་ རྟོད་པས་ མ་ རིག་པའོ།
 སློག་ཆུང་ ཡི་གེ་ མང་བ་ ནི།
 རྟོད་པ་ མ་ལ་རྟི་ མ་ལ།
 ལོ་ལ་ལི་ཀ་ལི་ལ་ འདོད། ॥ ༨༣

अनुप्रासधिया गौडैस्तदिष्टं बन्धगोरवात् ।

वंदमैर्मालतीदाम लंघितं भ्रमरैरिति ॥४४॥

བོ་ཏ་བ་ ཡིས་ རྩས་བྲིད་སློས།
 དེ་ འདོད་ མ་ལ་རྟི་ རྟི་མ།

ལེ་གྲིང་གྲུ་མ་རེ་ཞེས།

བེ་དགྲ་ཡིས་སྤྱོད་ལྟེ་བྱེད། ॥ ༧༧

प्रसादवत्प्रसिद्धार्थमिन्दोरिन्दीवरद्युति ।

लक्ष्म लक्ष्मीन्तनोतीति प्रतीतिसुभगं वचः ॥४५॥

རབ་དངས་ལྷན་པ་གྲགས་དོན་ཅན།

ཟླ་བའི་མཚན་མ་ཡུལ་གྱི།

འོད་ཀྱིས་མཛེས་པ་ཀྲས་ཅེས་པ།

དྲིགས་པའི་སྐལ་བཟང་ལྷན་པའི་ཆོག། ॥ ༧༨

व्युत्पन्नमिति गौडोयं नातिरूढमपीष्यते ।

यथानत्यर्जुनाव्जन्मस[5a]दृक्षाङ्को बलश्रेणुः ॥४६॥

ངེས་ཆོག་ཡོད་ལྷིང་གོ་ཏ་བ།

ཤིན་དུ་གྲགས་པ་མིན་ལང་འདོད་།

ཤིན་དུ་དཀར་མིན་རྩ་ལས་སྤྱིས།

དེ་འདྲས་མཚན་པ་འོད་དཀར་ཅན། ॥ ༧༩

समं बन्धेष्वविषमन्ते मृदुस्फुटमध्यमाः ।

बन्धा मृदुस्फुटोन्मिश्रवर्णविन्यासयोनयः ॥४७॥

म३म०घ० श्रु०र०घ० मी०म३म० ३॥

दे०के० २६म० कु०व० वर०म० ३॥

श्रु०र०घ० २६म० कु०व० वर०म० ५॥

यी०गे०वर्गे०घ०रि०श्रु०म०न०स०उ० ॥ ८०

कोकिलालापवाचालो मामेति मलयानिलः ।

उच्छलच्छीकराच्छाच्छनिर्म्भरांभःकणोक्षितः ॥४८॥

म०पु०म० उ०उ०र०श्रु०म०पु०उ० ॥

म०म०म०श्रु० वर०म०म० २० ॥

३०म० र०व०२३० २०३०२० ॥

कु०कु०कु०श्रु०म०श्रु०म० ३० ॥ ८१

चन्दनप्रणयोद्गन्धिर्मन्दो मलयमारुतः ।

स्पर्द्धते रुद्धमर्द्धयौ वररामाननानिलैः ॥४९॥

ཅན་གྱིས་བསྐྱོས་དྲི་ལྷང་ཞིང་།

འཇམ་པ་མ་ལ་ཡ་ཡི་རྒྱང་།

བདག་གི་བདུན་འགོག་དགའ་མ་ནི།

མཆོག་གི་ཁ་ཡི་རྒྱང་དང་འགྲན་॥ ༥༠

इत्यनालोच्य वीषम्यमर्थालंकारडम्बरौ ।

अपेक्षमाणा *ववृते पौरस्त्या काव्यपद्धतिः ॥५०॥

ཞེས་པ་མི་མཉམ་མ་བདག་ས་པར།

དོན་གྱི་ཐུན་དང་ཆོག་ས་དག་ལ།

ཁྱེས་ནས་ཤར་ཕྱོགས་པ་དག་ལ།

སྒྲན་ངག་ལས་ནི་བྱང་བར་གྱུར་॥ ༥༠

मधुरं रसवद्भावि वस्तुन्यपि रसः स्थितः ।

येन माद्यन्ति धीमन्तो मधुनेव मधुवताः ॥५१॥

སྒྲན་པ་ཉམས་ལྡན་ཆོག་དང་ནི།

དངོས་པོ་ལ་ཡང་ཉམས་གནས་པ།

སྒྲང་ཅི་ སྒྲིང་པ་ སྒྲང་ཅིས་ བཞིན།
 གང་གིས་ སྒྲོ་ལྷན་ དགའ་བྱེད་པའོ། ॥ ४१

यया कयापि श्रुत्या यत्समानमनुभूयते ।
 *तद्रूपादिपदासत्तिः सानुप्रासा रसावहा ॥५२॥

སྒྲ་ ཅི་ གང་ དང་ ཅི་ཡིས་ ཀྱང་།
 གང་ཞིག་ མཚུངས་པར་ ཉམས་སྒྲིང་བ།
 དེ་ཡི་ གཟུགས་ སྒྲིགས་ ཆོག་ཉེ་བ།
 རིས་སྒྲ་ བྲིད་ བཅས་ ཉམས་དང་ལྷན། ॥ ४२

एष राजा यदा लक्ष्मीप्राप्तवान् ब्राह्मणप्रियः ।
 तदा[5b]प्रभृति धर्मस्य लोकेस्मिन्नुत्सवोऽभवत् ॥५३॥

གང་ཆོ་ བྲམ་ཟེ་ དགའ་བ་ཡི།
 ཀྱལ་པོ་ འདི་ཡིས་ དཔལ་ཐོབ་གུར།
 དེ་ནས་བཟུང་ལྟ་ ཆོས་ཀྱི་ ཅི།
 དགའ་ལྟོན་ འཛིག་དེན་ འདི་ཅ་ བྱང་། ॥ ४३

इतीदं *नाहतं गौडैरनुप्रासस्तु तत्प्रियः ।
अनुप्रासादपि प्रायो वेदभैरिदमीप्सितं ॥५४॥

तेसः २६० गो० ७० वः १० २६० ।
६० ६० ६० ६० ६० ६० ६० ।
६० ६० ६० ६० ६० ६० ६० ।
६० ६० ६० ६० ६० ६० ६० ॥ ५८

वर्णावृत्तिरनुप्रासः पादेषु च पदेषु च ।
पूर्वानुभवसंस्कारबोधिनी यद्यदूरता ॥५५॥

१० १० १० १० १० १० १० ।
१० १० १० १० १० १० १० ।
१० १० १० १० १० १० १० ।
१० १० १० १० १० १० १० ॥ ५९

चन्द्रे शरन्निशोत्तंसे कुन्दस्तवकविभ्रमे ।
इन्द्रनोलनिभं लक्ष्म सन्ध्यात्यलिनः श्रियम् ॥५६॥

དགའ་མ་ བཞིན་གྱི་ཆ་སྒྲེམ་ དང་ ।

མཚུངས་པ་ ཟླ་བ་ ཅེས་ མི་འདོད་ ॥ ༡༨

स्मरः खरः खलः कान्तः कायः कोपश्च नः कृशः ।

च्युतो मानोधिको रागो मोहो जातोसवोगताः ॥५६॥

བདག་གི་ ལུས་ དང་ ཁྱོེ་བ་ ལྟ་ ।

འདོད་པ་ ཅུབ་ ཅིང་ མཇེའ་བོ་ངན་ ।

ཁེངས་པ་ཉམས་ ཤིང་ ཆགས་པ་རྒྱས་ ।

མེངས་པ་ སྒྲེམ་དེ་ སྒྲོག་ ཉམས་ མེང་ ॥ ༡༩

इत्यादि बन्धपारुष्यं शैथिल्यञ्च नियच्छति ।

अतो नैव[6a]मनुप्रासं दाक्षिणात्याः प्रयुज्जते ॥६०॥

ཅེས་སྒྲོགས་ སྒྲོར་བ་ ཅུབ་པ་ དང་ ।

གྲོལ་བ་ ཡང་ནི་ སྒྲོར་བར་བྱེད་ ।

དེ་ཕྱིར་ དེ་ལྟའི་ ཇེས་ཁྲིད་ ནི་ ।

སྒྲོ་སྒྲོགས་པ་ དག་ མི་སྒྲོར་རོ་ ॥ ༢༠

आवृत्तिमेव संघातगोचरं यमकम्बिदुः ।
तन्तु नैकान्तमधुरमतः पश्चाद्विधास्यते ॥६१॥

कै. ना. व. र. श्रु. य. व. व. र. व. र. ।
मि. न. व. र. व. र. व. र. व. र. ।
रे. य. व. र. व. र. व. र. व. र. ।
रे. य. र. व. र. व. र. व. र. व. र. ॥ ६१

कामं सर्वोप्यलंकारो रसमर्थे निषिञ्चति ।
तथाप्यप्राप्यतेवैनम्भारम्बहति भूयसा ॥६२॥

रे. ना. व. र. श्रु. य. व. व. र. व. र. ।
रे. ना. व. र. श्रु. य. व. व. र. व. र. ।
रे. य. र. व. र. व. र. व. र. व. र. ।
रे. य. र. व. र. व. र. व. र. व. र. ॥ ६२

कन्ये कामयमानं मान्त्वं न कामयसे कथं ।
इति ग्राम्योयमर्थात्मा वरस्यायैव कल्प्यते ॥६३॥

འདོད་ལྷན་ བདག་ལ་ གཞོན་ནུ་མ།
 ཁྱོད་ནི་ཅི་ལྟར་ འདོད་མི་ བྱེད།
 ཅེས་ འདི་ གྲོང་པའི་དོན་ བདག་ ཉིད།
 ཉམས་ དང་ བྲལ་བ་ ཁྱོད་ཀྱི་བྱེད། ॥ ༩༢

कामं कन्दर्पचण्डाला मयि वामाक्षि निर्दयः ।
 त्वयि निर्मत्सरो दिष्ट्येत्यप्राम्योर्थो रसावहः ॥६४॥

གཡོན་མིག་ འདོད་པ་ གདུམ་པོ་ནི།
 ཅེས་པར་ བདག་ལ་ བརྟེ་བ་མེད།
 ཁྱོད་ལ་ ཁྱོད་མེད་ དགའ་ ཅེས་པ།
 གྲོང་པའི་ དོན་མེད་ ཉམས་དང་ལྷན། ॥ ༩༣

शब्देपि ग्राम्यतास्त्येव सा सम्येतरकीर्तनात् ।
 यथा यकारादिपदं रत्युत्सवनिरूपणे ॥६५॥

སྒྲ་ལའང་ གྲོང་པ་ཉིད་ ཡོད་དེ།
 དེ་ནི་ ལོགས་པའི་ ཅིག་ཤོས་ བྲགས།

དགའ་བའི་དགའ་སྟོན་བརྗོད་པ་ལ །

ཇི་ལྟར་ ཡ་ཡིག་ལ་སྟོགས་བཞིན ། ༥༡

पदसन्धानवृत्त्या च वाक्यार्थत्वेन वा पुनः ।

दुष्प्रतीतिकरं ग्राम्यं यथा या भवतः प्रिया ॥६६॥

ཆོག་གི་སཁྲམས་སྟུང་གིས་ ཉུགས་ དང་ །

སྟུང་ཡང་ ངག་དོན་དག་གིས་ ཀྱང་ །

ཉེས་པར་དྲོགས་བྱེད་ གྲོང་པ་སྟེ །

ཡ་ ལྟ་བུ་དེ་ གི་ཡ་ བཞིན ། ༥༢

परं प्रहृत्य विश्रान्तः पुरुषो वीर्यवानिति ।

एव[6b]मादि न शंसन्ति मार्गयोरुभयोरपि ॥६७॥

གཞན་ལ་ བསྐྱུན་ནས་ སྟེས་བུ་ བྱི །

བྱིས་ལྟར་པའི་ བི་བྱུང་ །

དེ་ལྟ་བུ་ སྟོགས་ ལམ་དག་ བྱི །

གཉིས་ཀ་ལ་ ཡང་ བསྐྱུགས་ས་ཡིན ། ༥༣

भगिनीभगवत्यादि सर्वत्रैवानुमन्यते ।

विभक्तमिति माधुर्यमुच्यते सुकुमारता ॥६८॥

सु.वा.व.५. सु.वा.५. ।

लेख.लेख. गुरु.५.लख.लेख.५. ।

दे.५. सु.वा. ५.व.५. ।

लेख.५.लेख.५. व.५.५. ॥ ५८

अनिष्टुराक्षरप्रायं सुकुमारमिहेष्यते ।

बन्धशोधित्यदोषो हि *दर्शितः सर्वकोमले ॥६९॥

उ.वा.लेख.लेख.५. ५. ।

लेख.५.लेख.५. ५. ५. ।

वा.५. व.५. ५. ५. ५. ।

लेख.५.लेख.५. ५. ५. ५. ॥ ५९

मण्डलीकृत्य वर्हाणि कण्ठैर्मधुरगीतिभिः ।

कलापिनः प्रनृत्यन्ति काले जीमूतमालिनि ॥७०॥

སྒྲིན་གྱི་ཕྱེང་བ་ལྟན་ ཏུས་སུ །
 སྒྲིན་པར་སྒྲིགས་པའི་མཁུན་ལྟན་པ །
 མ་བྱ་ཡི་ ནི་ མཆུག་མ་དག །
 རྒྱུ་པོར་བྱས་ནས་ གར་བྱེད་དོ ༥ ལྟ

इत्यनूर्जित एवार्थो नालंकारोपि तादृशः ।
 सुकुमारतयैवैतदारोहति सतां मुखं ॥७१॥

ཞེས་པ་ དོན་གྲུས་ཉིད་མ་ཡིན །
 གྲུན་ ཡང་ དེ་འདྲ་ ཡོད་མིན་དེ །
 ཡིན་ཏུ་གཞིན་པ་ཉིད་ཀྱིས་ དེ །
 དམ་པ་ནམས་ཀྱི་ ཁ་ ན་ གནས ༥ ༩༡

दीप्तमित्यपरैर्भूम्ना कृच्छ्रोद्यमपि बध्यते ।
 न्यक्षेण पक्षः क्षपितः क्षत्रियाणां क्षणादिति ॥७२॥

གསལ་ སྒྱིར་ གཞན་དག་ པལ་ཆེར་ ནི །
 བཟོད་པར་ དཀའ་བ་དག་ ཀྱང་ སྒྱིར །

ཀྱུལ་རིགས་རྣམས་ཀྱི་ རྩོགས་མཐའ་དག །

སྒྲིབ་ཅིག་གིས་ བློ་ རྣམས་པར་བྱས ༥ ༧༢

अर्थव्यक्तिरनेयत्वमर्थस्य हरिणोद्धृता ।

भूः खुरश्रुण्णनागासृग्लोहितादुदधेरिति ॥७३॥

དོན་གསལ་ དོན་བདག་མི་དགོས་ཉིད །

འཕྲོག་བྱེད་ཀྱིས་ བློ་ ས་གཞི་དག །

མིག་པས་ བཅད་པའི་སྒྲ་བྲག་གིས །

དམར་བ་ རྩ་ཡི་གཏེར་ ལས་ཕྱང་ ༥ ༧༣

मही महावराहेण लोहितादुद्धृतोदधेः ।

इतीयत्ये[7a]व निर्दिष्टे नेयत्वमुरगासृजः ॥७४॥

པག་པ་ཆེན་པོ་ དག་གིས་ ས །

རྩ་གཏེར་དམར་པོ་དག་ལས་ཕྱང་ །

ཞེས་པ་ འདི་ཉིད་ བསྟན་པ་ནི །

བྱང་འགྲོའི་བྲག་ བློ་ བདག་དགོས་ཉིད ༥ ༧༤

नेदृशम्बहु मन्यन्ते मार्गयोरुभयोरपि ।

न हि प्रतीतिः सुभगा शब्दन्यायविलङ्घिनी ॥७५॥

ལས་ནི་གཉིས་ཀ་དག་ལ་ཡང་།
 ཉེགས་པའི་སྐལ་བཟང་མི་ལྟ་ནིང་།
 སྒྲ་ཡི་ཚུལ་ལས་འགོངས་གྲུང་བ།
 འདི་འདྲ་པལ་ཆེར་བཞིན་མ་ཡིན། ॥ ७४ ॥

उत्कर्षवान्गुणः कश्चिदुक्ते यस्मिन्प्रतीयते ।
 तदुदाराह्वयं तेन सनाथा काव्यपद्धतिः ॥७६॥

གང་དུ་འགའ་ཞིག་བཟོད་པ་ལ།
 བྱད་འཕགས་ལྟ་བུའི་ཡོན་ཏན་ཉེགས་།
 དེ་ནི་གྲ་ཆེར་བཟོད་དེ་དེས།
 སྒྲ་འགའ་ལས་གྲུང་མགོན་དང་བཅས། ॥ ७५ ॥

अर्थिनां कृपणा दृष्टिस्त्वन्मुखे पतिता सकृत् ।
 तदवस्था पुनर्देव नान्यस्य मुखमीक्षते ॥७७॥

སྒྲིང་བ་ནམས་གྱི་བཀྱེན་པའི་མིག་།
 ལན་ཅིག་བྱིད་གདོང་ལ་ལྟང་བ།

ལྷ་ཅིག་ གནས་སྐབས་ དེ་ཡིས་ སྤར་ །
 གཞན་གྱི་ གདོང་ལ་ ལྷ་མ་ཡིན་ ॥ ११

इति त्यागस्य वाक्येस्मिन्नुत्कर्षः साधु लक्ष्यते ।
 अनेनैव पथान्यच्च समानन्यायमूह्यताम् ॥७८॥

ཅེས་པ་ ཉིད་ཀྱི་ ཆོག་ འདི་ལ་ །
 གདོང་བ་ བྱད་འཕགས་ ལེགས་པ་ མཆོན་ །
 ལས་འདི་ཉིད་ཀྱིས་ གཞན་དག་ ཀྱང་ །
 རིགས་པ་ མཚུངས་པས་ དཔག་པར་བྱ་ ॥ १२

श्लाघ्यैर्विशेषणैर्युक्तमुदारं कैश्चिदिष्यते ।
 यथा लीलाम्बुजक्रीडासरोहेमाङ्गदादयः ॥७९॥

བསྐྱགས་པར་འོས་པའི་ བྱད་པར་ དང་ །
 ལྷན་པ་ རྒྱ་ཆེར་ འབའ་ཞིག་ འདོད་ །
 རིལ་པའི་རྒྱ་སྤྱོད་ ཅེ་དགའི་མཆོ་ །
 གསེར་གྱི་རྒྱན་ ལ་སྐྱགས་པ་ བཞིན་ ॥ १३

ओजः समासभूयस्त्वमेतद्गद्यस्य जीवितम् ।
पद्येप्यदाक्षिणात्यानामिदमेकमपरायणम् ॥८०॥

བཟློག་པ་ ཚོག་ སྤྱད་ མང་པོ་ ཉིད་ །
འདི་ནི་ ལྷུག་པ་ དག་གི་ གསལ་སྤྱོད་ །
ཚོགས་བཅད་ལ་ ཡང་ རྩོམ་སྤྱོད་པ་ །
མིན་པ་ འདི་ཉིད་ གཅིག་ཕུ་ བཞིད་ ॥ ༨༠

तद्गुरुणां लघू[7b]नाञ्च बाहुल्याल्पत्वमिश्रणैः ।
उच्चावचप्रकारं सदृश्यमाख्यायिकादिषु ॥८१॥

དེ་ལ་ ལྷུ་ དང་ ཡང་པ་ རྣམས་ །
མང་ དང་ ཉུང་པ་ཉིད་ སྤྱོད་པ་ །
མཐོ་དམན་གྱི་ ནི་ རྣམ་པ་ དེ་ །
བཟློག་པ་ལ་ སྤྱོད་པ་ རྣམས་ལ་ མཐོང་ ॥ ༨༡

अस्तमस्तकपर्यस्तसमस्तार्कांशुसंस्तरा ।
पीनस्तनस्थिताताम्रकम्रवस्त्रेव वारुणी ॥८२॥

རྒྱུ་གྱི་རི་མགོར་ ལྷུང་བ་ ཡི།
 མཐའ་དག་ ཉི་འོད་ མལ་ལྷན་ཅན།
 མཁྱེན་པ་པའི་རྒྱ་མ་ ལ་ གནས་པའི།
 གོས་ དམར་ མཛེས་ བཞིན་ རྩ་ལྷན་མ། ॥ ༤༢

इति पद्येपि पौरस्त्या बध्नन्त्योजस्विनीर्गिरः ।
 अन्ये त्वनाकुलं हृद्यमिच्छन्त्योजो गिरां यथा ॥८३॥

ཅེས་པ་ བཟིད་དང་ལྷན་པའི་ཆོག།
 ཆོག་མ་བཅད་ལ་ ཡང་ ཤར་བ་ སྦྱོར།
 གཞན་དག་ འབྲུག་མ་མིན་ མཛེས་པ་ཡི།
 ཆོག་རྣམས་ བཟིད་པར་ འདོད་དེ་ དཔེར། ॥ ༤༣

पयोधरतटोत्संगलग्नसन्ध्यातपांशुका ।
 कस्य कामातुरं चेतो वारुणी न करिष्यति ॥८४॥

རྩ་འཛིན་ངོས་གྱི་ སང་ ན་ གནས།
 མཚམས་གྱི་ཉི་འོད་ གོས་དང་ལྷན།

ཐུ་ལྷན་མ་ཡིས་ སུ་ཡི་ཡིད་ །

འདོད་པས་གཟེར་བར་བྱེད་མི་འགྱུར་ ॥ ༥༥

कान्तं सर्वजगत्कान्तं लौकिकार्थानतिक्रमात् ।

तच्च वार्ताभिधानेषु वर्णनास्वपि विद्यते ॥८५॥

མཛེས་པ་ འཛིག་རྟེན་ རོན་དག་ ལས་ །

མ་འདས་ འགྲོ་ཀུན་ ལ་ མཛེས་པ་འོ་ །

དེ་ཡང་ གཏམ་གྱི་མངོན་བཛྲོད་ དང་ །

བསྐྲགས་པ་ ལ་སོགས་ནམས་ལའང་ *སྦྱར་ ॥ ༥༦

गृहाणि नाम तान्येव तपोराशिभवादृशः ।

सम्भावयति यान्येव पावनैः पादपांशुभिः ॥८६॥

དཀའ་ཕྱབ་པ་པོ་ ཁྱོད་འདྲ་ཡི་ །

ཞབས་ཀྱི་རྩལ་ ནི་ གཙང་མ་ དག་ །

ཡང་དག་ བཏབ་པ་ གང་ ཡིན་པ་ །

དེ་དག་ ཁེ་ན་ ངེས་པར་ བྱིས་ ॥ ༥༧

अनयोरनवद्याङ्गि स्तनयोजृम्भमाणयोः ।

अवकाशो न पर्याप्तस्तव बाहुलतान्तरं ॥८७॥

सुखं स्येदं पुनः उक्तं सुखं तु किं ।

अत्रापि न विदुः श्रद्धां न च ननु ।

नृणां न च कृष्णं न हि ननु नृणां ।

नो नृणां नृणां नृणां नृणां नृणां ॥ ८८ ॥

इति [8a]संभाव्यमेवैतद्विशेषाख्यानसंस्कृतं ।

कान्तं भवति सर्वस्य लोकयात्रानुवर्तिनः ॥८९॥

विषयं नृणां नृणां नृणां नृणां ।

अत्रापि न विदुः श्रद्धां न च ननु ।

नृणां नृणां नृणां नृणां नृणां ।

नृणां नृणां नृणां नृणां नृणां ॥ ९० ॥

लोकातीत इवात्यर्थमध्यारोप्य विवक्षितः ।

योर्थस्तेनातितुष्यन्ति विदग्धा नेतरे यथा ॥९१॥

འཇིག་རྟེན་ འདས་ བཞིན་ བཟླ་ འདོད་ ཀྱིས།
 དོན་གང་ ཤིན་དུ་ བཞེད་ སྐྱར་པ།
 དེ་ཡིས་ མཁས་པ་ ཤིན་དུ་ ནི།
 ཚེས་འགྱུར་ ཅིག་ཤོས་ མ་ཡིན་ དཔེར ॥ ༥༠

देवधिष्णयमिवाराध्यमद्यप्रभृति नो गृहम् ।
 युष्मत्पादरजःपातधौतनिःशेषकिल्बिषम् ॥६०॥
 དེང་ནས་བཟུང་མྱེ་ བདག་གི་ཁྱིམ།
 ལྷ་ཡི་ཁྱིམ་ བཞིན་ བརྟེན་པར་ འོས།
 ཁྱིམ་གྱི་ ཞབས་རྒྱལ་ ལྷ་པ་ ཡིས།
 ཉེས་པ་ དག་ནི་ མ་ལུས་ བཀྱས། ॥ ༥༠

अल्पस्त्रिमितमाकाशमनालोच्यैव वेधसा ।
 इदमेवंविधम्भावि भवत्याः स्तनजृम्भणम् ॥६१॥

ཁྱིམ་གྱི་ རྒྱ་མ་ འདི་ལྟ་བུར།
 རྒྱ་པར་རྒྱས་པར་འགྱུར་བ་འདི།
 ཇིས་པར་མ་བརྟགས་ ཁྱིམ་པོ་ ཡིས།
 རྒྱ་མཁའ་ དག་ནི་ རྒྱ་ཕྱར་ སྐྱལ། ॥ ༥༡

इदमत्युक्तिरित्युक्तमेतद्गौडोपलालितं ।

प्रस्थानं प्राक् प्राणीतन्तु सारमन्यस्य वर्त्मनः ॥६२॥

ॡॢॣ॥ १॥ॢॣ॥ ॡॢॣ॥ ॡॢॣ॥

ॡॢॣ॥ १॥ॢॣ॥ ॡॢॣ॥ ॡॢॣ॥

ॡॢॣ॥ १॥ॢॣ॥ ॡॢॣ॥ ॡॢॣ॥

ॡॢॣ॥ १॥ॢॣ॥ ॡॢॣ॥ ॡॢॣ॥ ॥ ०१

अन्यधर्मस्ततोऽन्यत्र लोकसीमानुरोधिना ।

सम्यगाधोयते यत्र स समाधिः स्मृतो यथा ॥६३॥

ॡॢॣ॥ १॥ॢॣ॥ १॥ॢॣ॥ १॥ॢॣ॥

ॡॢॣ॥ १॥ॢॣ॥ १॥ॢॣ॥ १॥ॢॣ॥ १॥ॢॣ॥

१॥ॢॣ॥ १॥ॢॣ॥ १॥ॢॣ॥ १॥ॢॣ॥

१॥ॢॣ॥ १॥ॢॣ॥ १॥ॢॣ॥ १॥ॢॣ॥ ॥ ०२

कुमुदानि निमीलन्ति कमलान्युन्मिषन्ति च ।

इति नेत्रक्रियाध्यासाल्लब्धा [8b]तद्वाचिनी श्रुतिः ॥६४॥

ཀུ་མ་ད་ རི་ མིག་འཇུག་ རིང་ །
 བརྒྱ་དག་ ཀྱང་ མིག་འབྱེད་ ཅེས་ །
 མིག་གི་བྱ་བ་ བཀོད་པ་ ལས་ །
 དེ་ཡི་ བཛོད་བྱེད་ ལྷ་དག་ ཐོབ་ ॥ ༩༩

निष्ठूतोद्वीर्णवान्तादि गौणवृत्तिव्यपाश्रयं ।
 अतिसुन्दरमन्यत्र ग्राम्यकक्षां विगाहते ॥६५॥

རིཾ་ད་ དང་ ཡུཾ་རྒྱུ་ །
 ལྷ་གས་ མོགས་ བདགས་པའི་ འཇུག་ བདེན་པ་ །
 ཡིན་དུ་ མཛོས་དེ་ བཀོད་དུ་ རི་ །
 བོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ རུས་པ་ བདེན་ ॥ ༩༩

पद्मान्यर्काशुनिष्ठूताः पीत्वा पावकविप्रुषः ।
 भूयो वमन्तीव मुखैरुद्वीणारुणरेणुभिः ॥६६॥

བརྒྱས་ཉི་ཟེར་ ལྷ་གས་པ་ རུསས་ །
 འཇུངས་ནས་ རུལ་ དསར་ ལྷ་གས་པ་ཡི་ །

ཁ་ཡིས་དག་ བྱེད་ ཟེར་མ་ དག །

ཤིན་དུ་ སྐྱགས་པར་བྱེད་པ་ བཞིན ༥ ༡༩

इति हृद्यमहृद्यन्तु निष्ठोवति बधूरिति ।

युगपन्नैकधर्माणामध्यासश्च मतो यथा ॥६७॥

ཅེས་པ་ མཛེས་དེ་ མི་མཛེས་པ་ །

རྒྱུ་མ་ སྐྱགས་པར་བྱེད་ཅེས་པའོ །

ཅིག་ཅར་ ཉིད་དུ་ ཆོས་ དུ་མ་ །

བཞེད་པ་ དག་ ཀྱང་ འདོད་དེ་ དཔེར ༥ ༢༠

गुरुगर्मभराक्लान्ताः स्तन त्योमेधपङ्क्तयः ।

अचलाभित्यकोत्सङ्गमिमाः समग्रिशेते ॥६८॥

སྐྱེ་བའི་མང་ལ་ ཁུར་གྱིས་ངལ་ཞིང་ །

འཁྱུ་པར་བྱེད་པ་ སྐྱིན་གྱི་སྤེང་ །

འདི་དག་ གཡོ་མེད་སྤྱིང་གི་ ནི །

པང་བ་དག་དུ་ ཡང་དག་ཉལ ༥ ༢༡

དེ་དག་ དབྱེ་བ་ ལྷན་ངག་མཁན།
 སོ་སོ་ལ་ གནས་ བཞེད་ མི་ནས། ॥ ༡༠༡

इक्षुक्षीरगुडादीनां माधुर्यस्यान्तरमहत् ।
 तथापि न तदाख्यातुं सरस्वत्यापि शक्यते ॥१०२॥

བྱར་ཤིང་འོ་མ་ བྱར་སོགས་ ཀྱི།
 མངར་བ་ཉིད་ བྱི་ བྱར་བར་ཆེ།
 དེ་ལྟ་མེད་ཀྱི་ དེ་བཞེད་བར།
 དབྱངས་ཅན་མས་ ཀྱང་ རྒྱས་མཁྱེན། ॥ ༡༠༢

नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रुतञ्च बहु निर्मलं ।
 अमन्दश्चाभियोगोस्याः कारणं काव्यसम्पदः ॥१०३॥

རང་བཞིན་ ཀྱིས་གྲུབ་ སྒྲོབས་བ་ དང་།
 མང་དུ་ཐོས་བ་ ཅི་མེད་ དང་།
 མངོན་བར་ སྒྱུར་བ་མི་དམན་བ།
 ལྷན་ངག་ ཡན་སྤམ་ཆོགས་པའི་གྱུ། ॥ ༡༠༣

CHAPTER II

काव्यशोभाकरान्धर्मानलंकारान्प्रचक्षते ।

ते चाद्यापि विकल्प्यन्ते कस्तान् कात्स्न्येन [9b]वक्ष्यति ॥१॥

झुङ्गन् सङ्घेसः सङ्घेसः सङ्घेसः ।

कसः कसः कसः कसः कसः कसः ।

देवः देवः देवः देवः देवः देवः ।

देवः देवः देवः देवः देवः देवः ॥ २ ॥

किन्तु बीजं विकल्पानां पूर्वाचार्यैः प्रदर्शितं ।

तदेव प्रतिसंस्कर्तुमयमस्मत्परिश्रमः ॥२॥

देवः देवः देवः देवः देवः देवः ।

देवः देवः देवः देवः देवः देवः ।

देवः देवः देवः देवः देवः देवः ।

देवः देवः देवः देवः देवः देवः ॥ ३ ॥

काश्चिन्मार्गविभागार्थमुक्ताः प्रागप्यलंक्रियाः ।

साधारणमलंकारजातमद्य प्रदर्श्यते ॥३॥

ལམ་ རི་ རྣམ་པར་དབྱེ་དོན་དུ །
 གྱུན་ འགའ་ཞིག་ནི་ སྤར་ ཡང་ བསྟན །
 བྱུང་མེད་དག་དུ་ གྱུན་ གྱི་ རི །
 རྩོགས་ འདི་ རབ་དུ་ བསྟན་པར་བྱ ། ३

स्वभावाख्यानमुपमा रूपकं दीपकावृत्ती ।
 आक्षेपोर्थान्तरन्यासो व्यतिरेको विभावना ॥४॥

རང་བཞིན་ བཟོད་ དང་ དཔེ་ དང་ རི །
 གཟུགས་ཅན་ གསལ་བྱེད་ བསྐྱོར་བ་ དང་ །
 འགྲོག་ དང་ དོན་གཞན་བཞེད་པ་ དང་ །
 རྩོག་པ་ཅན་ དང་ སྤྱིད་པ་ཅན ། ८

समासातिशयोक्त्येक्षा हेतुः सूक्ष्मो लवः क्रमः ।
 प्रेयो रसवद्भूजंस्त्रि पर्यायोक्तं समाहितम् ॥५॥

བསྐྱུས་ དང་ སྤལ་བྱུང་ རབ་བདགས་དང་ །
 གྱི་ དང་ སྤ་མོ་ ཆ་ དང་ རིས །

དགའ་ དང་ ཉམས་ལྷན་ གཞི་བཞིན་ཅན་ ।
 རྣམ་གྲངས་ བཞིན་ དང་ ཀྱན་ཏུ་ སན ॥ ༥

उदात्तापह्नुतिस्त्रिष्टविशेषास्तुल्ययोगिता ।
 विरोधाप्रस्तुतस्तोत्रे व्याजस्तुतिनिदर्शने ॥६॥

གྱ་ཆེ་ བསྟོན་དོར་ སྤར་བ་ དང་ ।
 བྱད་པར་ མཆོངས་པར་ སྤོར་བ་ དང་ ।
 འགལ་ དང་ སྐབས་མིན་ བསྟོན་པ་ དང་ ।
 རྩལ་བསྟོན་ ཇིས་པར་ བསྟན་པ་ དང་ ॥ ༧

सहोक्तिः परिवृत्त्याशीः संसृष्टिरथ भाविकं ।
 इति वाचामलंकारा दर्शिताः पूर्वसूरिभिः ॥७॥

ལྷན་ཅིག་ བཞིན་ དང་ ཡོངས་བཞིས་ ཤིས་ ।
 རབ་སྤེལ་ རེ་ནས་ དགོངས་པ་ཅན་ ।
 འདི་དག་ ཆོག་རྣམས་དག་གི་ རི་ ।
 སྤྱན་ཏུ་ སྟོན་གྱི་མཁས་པས་ བསྟན་ ॥ ༨



नानावस्थं पदार्थानां रूपं साक्षाद्विवृण्वती ।

[10a] स्वभावोक्तिश्च जातिश्चेत्याद्या सालङ्कारिर्यथा ॥८॥

དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་ རང་བཞིན་ དང་།

གནས་སྐབས་ སྒྲ་ཆོགས་ དངོས་གསལ་བྱེད་ །

དེ་ནི་རང་བཞིན་བརྗོད་པ་ རང་ །

འཇིགས་ཞེས་ རང་པོའི་གྱུན་ ཡིན་ དཔེར ॥ ༤

तुण्डैराताम्रकुटिलैः पक्षैर्हरितकोमलैः ।

त्रिवर्णराजिभिः कण्ठैरेते मञ्जुगिरः शुकाः ॥६॥

མཆུ་ནི་དམར་ཞིང་གྲག་པ་དང་།

གཤེག་པ་ ལྷང་ རིང་ མཉེན་པ་ དང་ །

མགྲིན་པ་ ཁ་དོག་ གསུམ་འཕྲིང་ཅན །

ནེ་ཙེ་ འདི་དག་ ཚིག་འཇམ་ལྟན ॥ ༦

कलकणितगर्भेण कण्ठेनाघूर्णितेक्षणः ।

पारावतः परिक्षिप्य रिरंसुश्रुम्बति प्रियाम् ॥१०॥

མགྲིན་པའི་ནང་ནས་ སྟན་སྟོགས་ ཤིང་ ।
 སྟན་ རི་ ཀྱན་དུ་ འཕྲུལ་བ་ ཡི།
 དུག་རིན་ ཅེ་འདོད་ དགའ་མ་ལ།
 ཡོངས་སུ་བསྐྱོར་ནས་ མཆུ་དག་སྦྱོར་ ॥ ༡༠

वध्नन्नङ्गेषु रोमाञ्चं कुर्वन्मनसि निर्वृति ।
 नेत्रे चामीलयन्नेव प्रियास्पर्शः प्रवर्तते ॥११॥

དགའ་མ་ཡི་ རི་ དེག་པ་ འདི།
 ལུས་ལ་ སྦྱ་ཡོང་ རྟེན་པ་དང་།
 ཡིད་ རི་ བདེ་བར་བྱེད་པ་ དང་།
 སྟན་དག་ རྟེན་པར་བྱེད་ ཅིང་ འཇུག་ ॥ ༡༡

कण्ठे कालः करस्थेन कपालेनेन्दुशेखरः ।
 जटाभिः स्निग्धताम्राभिराविरासीद् वृषध्वजः ॥१२॥

མགྲིན་སྟོན་ ལག་ན་གྲོད་པ་ནི།
 གསལ་པ་ལྷ་བའི་ཅོད་པན་དང་།

ལྷུ་མ་ ཞིང་ དམར་བའི་ རལ་བ་ཅན།
 བྱ་མཆོག་ རྒྱལ་མཚན་ གསལ་བར་གྱུར། ॥ 22

जातिक्रियागुणद्रव्यस्वभावाख्यानमीदृशम् ।
 शास्त्रेष्वस्यैव साम्राज्यं काव्येष्वप्येतदीप्सितम् ॥१३॥

རིགས་ དང་ བྱ་བ་ ཡོན་5ན་ རྩམ།
 རང་བཞིན་ བཟོད་པ་ འདི་15་ འདི།
 བཟུན་བཅོས་ནམས་ལ་ རྒྱལ་སྤྱིད་ཉིད།
 ལྷན་ངག་ནམས་ལ་ རྒྱལ་སྤྱིད་ཉིད། ॥ 23

यथा कथंचित्सादृश्यं यत्रोद्भूतम्प्रतीयते ।
 उपमा नाम सा तस्याः प्रपञ्चोयं *प्रदर्श्यते ॥१४॥

ཇི་ལྟར་ཅི་ཞིག་ལྟར་ མཚུངས་པར།
 གསལ་བ་ གང་དུ་ ཉོགས་བྱེད་པ།
 དེ་ མི་ དབྱེ་ ཞེས་བྱ་ ལྟེ་ དེའི།
 སྒྲིམ་པ་ འདི་མི་ རབ་བཤད་བྱ། ॥ 24

ཁྱིའི་གཞི་བཞིན་པ་དུ་ནི།
 རྣམ་པར་གྱུས་པར་གྱུར་ཅེས་པ།
 དེ་ནི་གྲགས་པ་བརྗོད་པའི་ཤུར།
 བརྗོད་པའི་དཔེ་ཞེས་བྱ་བར་འདོད། ॥ १७

तवाननमिवाम्भोजमम्भोजमिव ते मुखं ।
 इत्यन्योन्योपमा सेयमन्योन्योत्कर्षशंसिनी ॥१८॥

ཁྱིའི་གཞི་བཞིན་ཅུ་སྐྱེས་དེ།
 ཅུ་སྐྱེས་བཞིན་དུ་ཁྱིའི་ཞལ།
 ཞེས་པ་ཕན་ཚུན་ཁྱད་འཕགས་ནི།
 བརྗོད་པར་བྱེད་འདི་ཕན་ཚུན་དཔེ། ॥ १८

त्वन्मुखं कमलेनैव तुल्यं नान्येन केनचित् ।
 इत्यन्यसाम्यव्यावृत्तेरियं सा नियमोपमा ॥१९॥

ཁྱིའི་ཞལ་པ་དུ་ཉིད་དང་མཚུངས།
 གཞན་ནི་འགའ་ཞིག་དང་ཡང་མིན།

ཞེས་པ་ མཚུངས་པ་ གཞན་ བརྒྱུག་ ཕྱིར་ །
 འདི་ རི་ ཇེས་པ་ཉིད་ཀྱི་དཔེ་ ॥ ༡༩

पद्मान्तावत्तवान्वेति मुखमन्यच्च तादृशं ।
 अस्ति चेदस्तु तत्कारीत्यसावनियमोपमा ॥२०॥

རི་ཞིག་ བྱིད་ གདོང་ བརྒྱ་ཡི་ །
 ཇེས་འགྲོ་ གཞན་ཡང་ རི་འདྲ་བ་ །
 གཡ་དེ་ ཡོད་ན་ རི་ བྱིད་འགྱུར་ །
 ཞེས་པ་ འདི་རི་ ཇེས་མེད་དཔེ་ ॥ ༢༠

समुच्चयोपमाप्यस्ति न कान्त्यैव मुखन्तव ।
 ह्लादनाख्येन चान्वेति कर्मणेन्दुमितीदृशी ॥२१॥

བྱིད་ གདོང་ མཇོས་པ་ ཁོ་ན་ཡིས་ །
 རྒྱ་བའི་ ཇེས་སུ་ འགྲོ་མིན་ དེ་ །
 དགའ་སྐྱིད་ ལས་ཀྱིས་ ཀྱང་ ཞེས་པ་ །
 འདི་འདྲ་ བརྒྱུས་པའི་ དཔེ་ ཡང་ ཡོད་ ॥ ༢༡



त्वय्येव त्वन्मुखं दृष्टं दृश्यते दिवि चन्द्रमाः ।
इत्येत्येव भिदा[।।a]नान्येत्यसावतिशयोपमा ॥२२॥

ཁྱིལ་གྱི་ཞལ་ བི་ ཁྱིལ་ཉིད་ལ།
 མཐོང་གི་ ཟླ་བ་ མཁའ་ལ་ མཐོང་།
 འདི་ཉིད་ ཁོ་ན་ བྱ་དང་ དེ།
 ལཱ་ལྷ་མེད་ ཅེས་ འདི་ ཁྱད་པར་དཔེ། ॥ ༢༢

मय्येवास्या मुखश्रीरित्यलमिन्दोर्विकथनैः ।
पद्मोपि सा यदस्त्येवेत्यसावुत्प्रेक्षितोपमा ॥२३॥

དེ་ཡི་བཞིན་དཔལ་ ང་ཉིད་ལ་ །
 ཡོད་ ཅེས་ ཟླ་བ་ སྒྲིམས་ མི་དགོས་ །
 བརྟུ་ལ་ ཡང་ དེ་ ཡོད་ ཕྱིར་ །
 ཞེས་པ་ འདི་ རི་ རབ་བརྟགས་དཔེ ༥ ༢༢

यदि किञ्चिद्भवेत्पद्मं सुभ्रु विभ्रान्तलोचनं ।
तत्ते मुखश्रियन्धत्तामित्यसावद्भुतोपमा ॥२४॥

གལ་དེ་ བརྒྱ་ འགའ་ཞིག་ ལ །

སྒྲིན་ལེགས་ རྣམ་འབྲུལ་ མིག་ལྡན་ ན །

ཁྱོད་གྱི་ བཞིན་གྱི་ དཔལ་ འཛིན་ དེ །

ཞེས་པ་ འདི་ ནི་ མཛད་བྱང་དཔེ ༥ ༢༥

शशीत्युत्प्रेक्ष्य तन्वद्भि त्वन्मुखन्त्वन्मुखाशया ।

इन्दुमप्यनुधावामीत्येषा मोहोपमा स्मृता ॥२५॥

ལུས་སྤ་ ཁྱོད་ གདོང་ རི་བོང་ཅན །

ཞེས་ བདགས་ ཁྱོད་ གདོང་ བསམ་པ་ ཡིས །

ཟླ་བ་ཡི་ ཡང་ ཇེས་སུ་བསྟེགས །

ཞེས་ འདི་ མཛད་སྤེལ་དཔེ་རུ་ བཤད ༥ ༢༥

किम्पद्ममन्तभ्रान्तालि किन्ते लोलेक्षणं मुखं ।

मम दोलायते चित्तमितीयं संशयोपमा ॥२६॥

པད་ནང་ བྱང་བ་ འཁོར་རམ་ ཅི །

ཁྱོད་ གདོང་ ལ་ མིག་ གཡོ་ འམ་ ཅི །

བདག་གི་སེམས་ནི་རྣམ་པར་གཡོ་
ཞེས་པ་འདི་ནི་གེ་ཚེས་དཔེ ॥ ३५

न पद्मस्येन्दुनिग्राह्यस्येन्दुलज्जाकरी द्युतिः ।
अतस्त्वन्मुखमेवेदमित्यसौ निर्णयोपमा ॥२७॥

ལྷ་པ་སྦྱངས་བྱེད་སེམས་པ་འདི་
ལྷ་བས་ཚར་གཙོད་པར་མིན་
དེ་ཕྱིར་ཁྱོད་ཀྱི་གདོང་ཉིད་དོ་
ཞེས་པ་འདི་ནི་ངེས་པའི་དཔེ ॥ ३७

शिशिरांशुप्रतिद्वन्द्वि श्रीमत्सुरभिगन्धि च ।
अम्भोजमिव ते वक्त्रमिति श्लेषोपमा मता ॥२८॥

བསིལ་ཟེར་ཅན་གྱི་དབྱ་ལྷ་དང་
དཔལ་དང་ལྷན་དང་དྲི་བཟང་གིས་
ཁྱོད་ཀྱི་གདོང་ནི་ཅུ་སྦྱེས་བཞིན་
ཞེས་པ་སྤར་བའི་དཔེ་ཅུ་བཤད ॥ ३८

सरूपशब्दवाच्यत्वात् सा समानोपमा यथा ।

[11b]वालेवोद्यानमालेयं सालकाननशोभिनी ॥२६॥

མཚུངས་པའི་སྒྲ་ཡིས་ བཟོད་བྱའི་ བྱིར་ །

མཉམ་ཉིད་དཔེ་ ཟྱེ་ ཇི་ལྟར་ ན་ །

སྒྱིད་ཚལ་སྒྲེང་ འདི་ བྱ་མོ་ བཞིན་ །

མཇོས་ལྡན་ སྒྲ་ལ་ཀྱ་ན་ན་ ॥ २७

पद्मं बहुरजश्चन्द्रः क्षयी ताम्यान्तवाननम् ।

समानमपि सोत्सेकमिति निन्दोपमा *मता ॥३०॥

པདྨ་ རྒྱལ་ མང་ རྒྱ་བ་ འཇོར་ །

དེ་དག་ ལས་ ནི་ བྱོད་ཀྱི་བཞིན་ །

མཚུངས་པ་ ལ་ ཡང་ བྱུང་པར་བཅས་ །

ཞེས་པ་ སྒྲེད་པའི་ དཔེ་ཅུ་ འདོད་ ॥ ३०

ब्रह्मणोप्युद्भवः पद्मश्चन्द्रः शम्भुशिरोधृतः ।

तौ तुल्यौ त्वन्मुखेनेति सा प्रशंसोप*मेप्यते ॥३१॥

བདུས་ ཚངས་པ་དག་ཀྱང་སྤྱོད་ །
 རྩ་བ་ བདེ་འབྱུང་གཙུག་ན་ འཇོན་ །
 དེ་དག་ བྱོད་གདོང་ མཚུངས་ ཞེས་པ་ །
 དེ་ རི་ བསྐྱུགས་པའི་དཔེར་ བཟོད་ དོ ॥ ३१

चन्द्रेण त्वन्मुखं तुल्यमित्याचिख्यासु मे मनः ।
 सगुणो वास्तु दोषो वेत्याचिख्यासोपमां विदुः ॥३२॥

ཡོན་དན་ལྷན་ རྩ་བ་ སྤྱོད་ འབྱུར་ ཡང་ །
 བྱོད་གདོང་ རྩ་བ་ མཚུངས་ ཞེས་པ་ །
 བཟོད་འདོད་ བདག་གི་ ཡིད་ལ་ཡོད་ །
 ཅེས་པ་ བཟོད་འདོད་དཔེ་ ཞེས་ རིག་ ॥ ३२

शतपत्रं शरच्चन्द्रस्त्वदाननमिति त्रयम् ।
 परस्परविरोधीति सा विरोधोपमोदिता ॥३३॥

འདབ་བརྒྱ་པ་ དང་ སྤྱོད་རྩ་བ་ དང་ །
 བྱོད་ཀྱི་ གདོང་ དང་ གསུམ་པོ་ རི་ །

པན་ཚུན་ རྣམ་པར་ འགལ་ ཞེས་པ།
 དེ་ནི་ འགལ་བའི་དཔེར་ བཟོད་དོ། ॥ ३३

न जातु शक्तिरिन्दोस्ते मुखेन प्रतिगर्जितुम् ।
 कलङ्किनो जडस्येति प्रतिषेधोपमैव सा ॥३४॥

དེ་མ་ལྟར་ ཞིང་ གླུན་གྱུར་པ།
 རྒྱ་བ་ལ་ རི་ བྱོད་ གཤོང་ དང་།
 འགྲན་བའི་ རྣམ་པ་ རྣམ་ཡང་ མེད།
 ཅེས་པ་ དགག་བའི་དཔེ་ ཉིད་དོ། ॥ ३४

मृगेष्वणाङ्कन्त्वद्वक्त्रमृगेणैवांकितः शशी ।
 तथापि सम एवासौ नोत्कर्षीति चटूपमा ॥३५॥

བྱོད་ གཤོང་ རི་དྲགས་མིག་གིས་མཚན།
 རྒྱ་བ་ རི་དྲགས་ཉིད་ཀྱིས་ མཚན།
 དེ་ལྟར་ ཡང་ འདི་ མཚུངས་ཉིད།
 བྱོད་འཕགས་ མིན་ ཞེས་ མཛེས་བའི་དཔེ། ॥ ३५

न पद्मं मुखमेवेदं न भृङ्गौ चक्षुषी[12a] इमे ।
इति विस्पष्टसादृश्यात्तत्वाख्यानोपमैव सा ॥३६॥

འདི་ནི་ བཞིན་ ཉིད་ བརྒྱ་ མིན་ ।
འདི་དག་ བྱང་བ་ མ་ཡིན་ མིག་ ।
ཅེས་པ་ རྣམ་གསལ་ མཚུངས་པ་ ལས་ ।
དེ་ནི་ དེ་ཉིད་བཟོད་པའི་དཔེ་ ॥ ३६

चन्द्रारविन्दयोः कान्तिमतिक्रम्य मुखन्तव ।
आत्मनेवाभवत्तुल्यमित्यसाधारणोपमा ॥३७॥

ཟླ་བ་ བརྒྱ་ དག་གི་ ཉི་ ।
མཛེས་པ་ ལས་ འདས་ བྱིད་ཀྱི་ གདོང་ ।
བདག་རང་ཉིད་ དང་ མཚུངས་པར་གྱུར་ ।
ཞེས་པ་ ཐུན་མཛང་མིན་པའི་དཔེ་ ॥ ३७

सर्वपद्मप्रभासारः समाहृत इव कचित् ।
त्वदाननं विभातीति तामभूतोपमां विदुः ॥३८॥

བདྲ་ མཛེས་པའི་ སྒྲིང་པོ་ ཀྱན །
 འགའ་ཞིག་ དག་ཏུ་ བཟུས་པ་ བཞིན །
 བྱོད་ཀྱི་ གདོང་ ཅི་ རྣམ་མཛེས་ ཞེས །
 དེ་ནི་ བྱང་མིན་དཔེ་ ཞེས་ རིག ༥ ༣༤

इन्दुविम्बादिव विषं चन्दनादिव पावकः ।
 परुषा वागितो वक्त्रादित्यसम्भावितोपमा ॥३६॥

རྩ་བའི་གཟུགས་ ལས་ ཏུག་ བཞིན་ དང་ །
 ཅ་རྒྱན་ ལས་ ཅི་ མེ་བཞིན་ཏུ །
 ཞལ་ འདི་ ལས་ ཅི་ ཏུབ་མེད་ཆོག །
 ཅས་པ་ སྒྲིང་པ་མིན་པའི་དཔེ ༥

चन्दनोदकचन्द्रांशुचन्द्रकान्तादिशीतलः ।
 स्पशस्तवेत्यतिशयं* प्रथयन्ती बहूपमा ॥४०॥

ཅ་རྒྱན་ཏུ་ དང་ རྩ་འོད་ དང་ །
 རྩ་ཞལ་ མོགས་ བཞིན་ བྱོད་ཀྱི་ནི །

རེག་པ་ བསིལ་ ཞེས་ བྱད་པར་ དག །
གསལ་བར་བྱད་པ་ མང་བའི་དཔེ ། གྲྭ་

चन्द्रविम्बादिवोत्कीर्णं पद्मगर्भादिवोद्धृतम् ।
तव तन्वद्भि वदनमित्यसौ विक्रियोपमा ॥४१॥

ལུས་ཕྱ་ བྱོད་ གདོང་ བཞིན་རས་ བྱི
ཟླ་བའི་ དཀྱིལ་འཁོར་ ལས་ བདོན་ བཞིན་ །
བསྐྱེད་ བྱང་ནས་ བྱུང་བ་ བཞིན་ །
ཞེས་པ་ འདི་ བྱི་ བྱས་འགྱུར་དཔེ ། གྲྭ་

पुष्पयातप इवाह्नीव पूषा व्योम्नोव वासरः ।
विक्रमस्त्वय्यधालक्ष्मीमिति मालोपमैव सा ॥४२॥

འོད་ཀྱིས་ ཉི་བཞིན་ ཉི་མ་ ཡིས་ །
ཉིན་བཞིན་ ཉིན་གྱིས་ མཁའ་ལ་ བཞིན་ །
ནས་པར་གཞོན་པས་ བྱོད་ལ་ དཔལ་ །
འཛིན་ ཞེས་ དེ་ནི་ བྱུང་བའི་དཔེ ། གྲྭ་

वाक्यार्थेनैव वाक्यार्थः [12b]कोपि यद्युपमीयते ।

एकानेकेवशब्दत्वात् सा वाक्यार्थोपमा द्विधा ॥४३॥

गदः पदः द्वादिर्गुणः त्रिंशत् ।

गदः पदः द्वादिर्गुणः त्रिंशत् ।

गदः पदः द्वादिर्गुणः त्रिंशत् ।

गदः पदः द्वादिर्गुणः त्रिंशत् ॥ ८३

त्वदाननमधोराक्षमाविर्दशनदीधिति ।

भ्रमद्भ्रमिवालक्ष्यकेसरं भाति पङ्कजं ॥४४॥

त्रिंशत् पदः त्रिंशत् पदः त्रिंशत् ।

त्रिंशत् पदः त्रिंशत् पदः त्रिंशत् ।

त्रिंशत् पदः त्रिंशत् पदः त्रिंशत् ।

त्रिंशत् पदः त्रिंशत् पदः त्रिंशत् ॥ ८८

नलिन्या इव तन्वद्भ्रमास्तस्याः पद्ममिवाननम् ।

मया मधुव्रतेनेव पायम्पायमरम्यत ॥४५॥

བརྒྱ་ཅན་ བཞིན་ ལུས་སྤྲ་མ།
 བརྒྱ་ བཞིན་དུ་ དེ་ཡི་ གདོང་།
 སྤང་ཙྰ་ སྤྱོད་པས་ བཞིན་དུ་ བྱི།
 བདག་གས་ འབྲུངས་ཤིང་ འབྲུངས་ཤིང་ཙྰ་ས། ॥ ༧༥

वस्तु किञ्चिदुपन्यस्य न्यसनात् तत्सधर्मणः ।
 साम्यप्रतीतिरस्तीति प्रतिवस्तूपमा यथा ॥४६॥

དངོས་པོ་ འགའ་ཞིག་ ཉེར་བཞོད་ནས།
 དེ་ཡི་ཚེས་ མཐུན་ རབ་བཞོད་པ།
 མཉམ་པ་ཉིད་དུ་ རྟོགས་པ་ཅན།
 ཟླ་བོ་ དངོས་པོའི་དཔེ་ ཡིན་ དཔེར། ॥ ༧༦

नैकोपि त्वादृशोद्यापि जायमानेषु राजसु ।
 ननु द्वितीयो नास्त्येव पारिजातस्य पादपः ॥४७॥

གྲུལ་པོ་ནམས་ བྱི་ སྤྱིས་གྲུར་ ཀྱང་།
 ད་ལྟ་ བྱོད་ འདྲ་ གཞིག་ ཀྱང་ མེད།

ཡོངས་འདུ་དག་གི་ཀང་འབྱུང་ བྱི །
གཉིས་པ་ དེས་པར་ ཡོད་ས་ཡིན ༥ ༧༧

अधिकेन समाहृत्य हीनमेकक्रियाविधौ ।
यदब्रुवन्ति स्मृता सेयन्तुल्ययोगोपमा यथा ॥४८॥

ལྷག་པས་ དམན་པ་ བྱ་བ་ཡི །
ཆོག་ གཅིག་ ལ་ རབ་བསྐྱུས་ནས །
གང་ སྤྲུམ་ དེ་ནི་ མཚུངས་པ་ དག །
སྦྱོར་བའི་དཔེ་རུ་ བཤད་དེ་ དཔེར ༥ ༧༨

दिवो जागर्ति रक्षायै पुलोमारिर्भुवो भवान् ।
असुरास्तेन हन्यन्ते सावलेपा नृपास्त्वया ॥४९॥

དུ་ལོ་མའི་དགྲ་ མགོ་རིས་ དང་ །
ཁྱོད་ནི་ ས་སྤྱང་ མེལ་ཆེ་བྱེད །
དེ་ཡིས་ དྲིགས་ལྡན་ ལྷ་མིན་ དང་ །
ཁྱོད་ཀྱིས་ མི་ཡི་ བདག་པོ་ འཛོམས ༥ ༧༩

कान्त्या चन्द्रमसं [13a] धाम्ना सूर्यन्धेर्येण चार्णवम् ।
राजन्ननुकरोषीति सैषा हेतूपमा स्मृता ॥५०॥

क्रु'प'स' स'स'स'स'स' ५८ ।
ग'त्रि'त्रि'त्रि'त्रि' ५९ ।
व'द'द'स' क्रु'स'स'स' ६० ।
उ'स'स' ६१ । ५०

न लिङ्गवचने भिन्नं न हीनाधिकतापि वा ।
उपमादूषणायालं यत्रोद्वेगो न धीमतां ॥५१॥

स'स'स' स'स'स'स' ६२ ।
द'स'स' ६३ ।
स'स' ६४ ।
स'स' ६५ । ५१

स्त्रीव गच्छति वण्डोयं वक्तव्यया स्त्री पुमानिव ।
प्राणा इव प्रियोयम्मे विद्या धनमिवार्जिता ॥५२॥

མ་ནིང་ འདི་འགྲོ་ བྱད་མེད་ བཞིན། །
 བྱད་མེད་ འདི་ སྒྲ་ སྒྲིས་པ་ བཞིན། །
 བདག་གི་ གྲོགས་ འདི་ སྒྲོག་རྣམས་ བཞིན། །
 རིག་པ་ རྣམས་ བསྐྱབས་ རོར་བཞིན་ནོ། ॥ ༥༢

भवानिव महोपाल देवराजो विराजते ।
 अलमंशुमतः कक्षामारोढुन्तेजसा नृपः ॥५३॥

ས་གཞི་སྒྲིང་པ་ བྱོད་ བཞིན་དུ། །
 ལྷ་ཡི་རྒྱལ་པོ་ རྣམ་པར་མཛེས། །
 ར་ཟེར་ཅན་གྱི་ རྣམ་པ་ལ། །
 མི་བདག་གཟི་ཡིས་ འགོང་བར་རྣམ། ॥ ༥༣

इत्येवमादि सौभाग्यं न जहात्येव जातुचित् ।
 अस्ति च कचिदुद्वेगः प्रयोगे वाग्विदां यथा ॥५४॥

ཞིས་པ་ དེ་ལྷ་བྱ་ ལ་སྒྲིགས། །
 སྒྲལ་བཟང་ རྣམ་ཡང་ གཏོང་མིན་ཉིད། །

སྒྲིང་བ་ རག་ལ་ རག་རིག་ རྣམས་ །
 མི་དགེས་པ་ ཡོད་ རི་ལྟར་ན་ ॥ ༡༥

हंसीव धवलश्चन्द्रः सरांसीवामलं नभः ।
 भर्तृभक्तो भटः श्वेव खद्योतो भाति भानुवत् ॥५५॥

རང་མོ་ བཞིན་དུ་ རྒྱ་བ་ དཀར་ །
 མཚོ་ རྣམས་ བཞིན་དུ་ མཁའ་རི་མེད་ །
 བྱི་ བཞིན་ དཔའ་བོ་ རི་ལ་ གུས་ །
 ཉི་མ་ བཞིན་དུ་ མི་བྱིར་ གསལ་ ॥ ༡༦

ईदृशं वर्ज्यते सद्भिः कारणं त्वत्र चिन्त्यताम् ।
 इववद्वायथाशब्दाः समाननिभ[13b]सन्निभाः ॥५६॥

འདི་འདྲ་ སྤངས་ཏེ་ མཁའ་ས་རྣམས་ ཀྱིས་ །
 གྲུ་ ཡང་ འདིར་ ཉི་ བསམ་པར་བྱོས་ །
 བཞིན་ལྟར་ལྟ་བུ་རི་ལྟར་སྒྲི་ །
 མཐུན་མཚུངས་ཡང་དག་མཚུངས་ དང་ མཉམ་ ॥ ༡༧

तुल्यसंकाशनीकाशप्रकाशप्रतिरूपकाः ।

प्रतिपक्षप्रतिद्वन्द्विप्रत्यनीकविरोधिनः ॥५७॥

ཡང་དག་གསལ་དང་ངེས་པར་གསལ །

རབ་གསལ་གཟུགས་ཀྱི་ལྷ་པོ་དང་ །

གཉེན་པོ་དང་ནི་དག་ལྷ་དང་ །

སོ་སོར་དྲི་ག་དང་འགལ་དང་འདྲ ॥ ५७

सदृक्सदृशसंवादिसजातीयानुवादिनः ।

प्रतिविम्बप्रतिच्छन्दसरूपसमसम्मिताः ॥५८॥

བརྟ་བཅས་དང་ནི་བསྐྱ་བ་དང་ །

རིགས་མཐུན་ཇིས་སུ་སྐྱ་བ་དང་ །

གཟུགས་བརྟན་དང་ནི་སོ་སོར་སྒྲེབ །

གཟུགས་མཆོངས་མཉམ་དང་ཡང་དག་འཇལ ॥ ५८

सलक्षणसदृक्षाभसपक्षोपमितोपमाः ।

कल्पदेशीयदेश्यादिः प्रख्यप्रतिनिधी अपि ॥५९॥

མཚན་ཉིད་མཐུན་འདྲ་མཚུངས་པ་དང་།
 མཐུན་ཕྱོགས་དཔེར་བྱས་དཔེ་དང་རྟོག་།
 དམན་དང་ཅུང་ཟད་དམན་སོགས་དང་།
 རབ་དུ་སྒྲི་དང་སོ་སོར་བརྒྱུག་༥ ༥

सवर्णतुलितौ शब्दौ ये चान्यूनार्थवाचिनः ।
 समासश्च बहुव्रीहिः शशाङ्कवदनादिषु ॥६०॥

རིགས་མཐུན་མཉམ་བྱས་སྒྲི་དག་དང་།
 གང་ཡང་དམན་མིན་དོན་ཅན་ཆོག་།
 འབྲུ་མང་པོ་ཡི་ཆོག་སྒྲུད་དང་།
 རི་བོང་མཚན་མའི་གཤོང་ཅན་སོགས་༥ ༥

स्पर्धते जयति द्वेष्टि द्रुह्यति प्रतिगर्जति ।
 आक्रोशत्यवजानाति कदर्थयति निन्दति ॥६१॥

འགྲན་དང་གྱུལ་དང་སྐྱང་བ་དང་།
 འཁྱུ་དང་མི་མཐུན་སྒྱོགས་པ་དང་།

འཕྱུ་བ་ ནང་ རི་ འཕྱུ་བ་ ནང་ །

སྒྲ་འབྲེལ་སྒྲིང་ ནང་ སྒྲིང་བ་ ནང་ ॥ ༩༡

विडम्बयति संरुन्धे हसतीर्ष्यत्यसूयति ।

तस्य मुष्णाति सौभाग्यं तस्य कान्तिं विलुम्पति ॥६२॥

ཅེ་འདྲི་བ་ ནང་ འགོག་བ་ ནང་ །

གོད་ ནང་ ལྷག་དོག་ མི་བཟོད་ ནང་ །

དེ་ཡི་ སྒྲ་ལ་བཟང་ འཕྲོག་གྲིང་ ནང་ །

དེ་ཡི་ མཛེས་བ་ རྩམ་གྲིང་ ནང་ ॥ ༩༢

तेन सार्धं विगृह्णाति तुलान्तेना]।4a]धिरोहति ।

तत्पदव्यां पदं धत्ते तस्य कक्षां विगाहते ॥६३॥

དེ་དང་ འགྲན་ ལས་ ཚར་གཅོད་ ནང་ །

དེ་དང་མཚུངས་ ལས་ ལྷག་བར་འཇགས་ །

དེ་ཡི་རྗེས་སུ་ ཀང་འཛོག་ ནང་ །

དེ་ཡི་ནུས་བ་ ལ་ འཛོག་ ནང་ ॥ ༩༣

तमन्वेत्यनुबध्नाति तच्छीलन्तन्निषेधति ।

तस्य चानुकरोतीति शब्दाः सादृश्यसूचिनः ॥६४॥

दे.यि.हिस.रुग्. हिस.सु.रुक्. ।

दे.यि.रु.रु.रु. दे.रु.रु.रु. रु. ।

दे.यि.हिस.सु.रु. रु. रु. ।

रु. रु. रु. रु. रु. रु. रु. रु. रु. रु. ॥ ७०

उपमैव तिरोभूतभेदा रूपकमिष्यते ।

यथा बाहुलता पाणिपद्मश्चरणपल्लवम् ॥६५॥

रु. रु. रु. रु. रु. रु. रु. रु. रु. रु. ।

रु. रु. रु. रु. रु. रु. रु. रु. रु. रु. ।

रु. रु. रु. रु. रु. रु. रु. रु. रु. रु. ।

रु. रु. रु. रु. रु. रु. रु. रु. रु. रु. ॥ ७१

अंगुल्यः पल्लवान्यासन् कुसुमानि नखाचिपः ।

बाहुलते वसन्तश्रीस्त्वन्नः प्रत्यक्षचारिणी ॥६६॥

ལག་པའི་འབྲི་ཤིང་ སོར་སོ་ རྣམས་ ।
 ཡལ་འདབ་ སོན་སོའི་འོད་ཟེར་ རི་ ।
 མི་དོག་དུ་གྱུར་ དཔྱིད་ཀྱི་དཔལ་ ।
 བྱིད་ནི་ དེད་ལ་ མངོན་སུམ་གྱི་ ॥ ༩༩

इत्येतदसमस्ताख्यं समस्तं पूर्वरूपकं ।
 स्मितम्मुखे दोज्योत्स्नेति समस्तव्यस्तरूपकं ॥६॥

ཞེས་པ་ འདི་ནི་ མ་བསྐྱབས་ཏེ་ ।
 སྤྲ་མ་ བསྐྱབས་པའི་གཟུགས་ཅན་ནོ་ ।
 བཞིན་ ཟླ་ འཇུག་པའི་ཟླ་འོད་ཅེས་ ।
 གཟུགས་ཅན་ བསྐྱབས་ དང་ མ་བསྐྱབས་པའོ་ ॥ ༩༧

ताम्राङ्गुलिदलश्रेणि नखदीधितिकेसरं ।
 ध्रियते मूर्ध्नि भूपालैर्भवच्चरणपङ्कजं ॥६८॥

སོར་སོ་དཔར་པའི་ འདབ་ཤིང་དང་ ।
 སོན་སོའི་འོད་ཀྱི་ གེ་སར་ཅན་ ।

ཁྱོད་ཀྱི་ འབས་ཀྱི་ རྩ་སྒྲིམ་ནི།
 ས་སྒྲིང་ནས་ས་ཀྱི་ སྤྱི་བོར་ འཛིན། ॥ ༩༤

अंगुल्यादौ दलादित्वं पादे चारोप्य पद्मताम् ।
 तद्योग्यस्थानवित्यासादेतत्सकलरूपकम् ॥६६॥

སོར་མོ་ ལ་སོགས་ འདབ་ སོགས་ དང་།
 ཀྱང་བས་ བརྩ་ཉིད་ བྱས་ནས།
 དེ་འོས་ བཞས་སུ་ རྩ་བཀོད་པ།
 འདི་ནི་ མཐའ་དག་ བཟུགས་ཅན་ཉིད། ॥ ༩༥

[14b] अकस्मादेव ते चण्डि स्फुरिताधरपल्लवम् ।
 मुखं मुक्तारुचो धत्ते घर्माभःकणमञ्जरीः ॥७०॥

བཀྲམ་མོ་ སྒོ་བུར་ ཉིད་དུ་ནི།
 ཁྱོད་གདོང་ མཆུ་ཡི་ཡལ་འདབ་ བཡོ།
 རྩ་གྱི་རྩ་ཡི་ཐེག་པ་ཡི།
 དོག་པ་ སྤྱི་ག་ འོད་ཅན་ འཛིན། ॥ ༧༠

मञ्जरीकृत्य घर्मांस्तु पल्लवीकृत्य चाधरं ।
नान्यथा कृतमत्रास्यमतोवयवरूपकं ॥७१॥

འདིར་ནི་ རྩལ་ཆུ་ རོག་པར་ བྱས།
མཆུ་ཡང་ ཡལ་འདབ་ཉིད་ བྱས་གྱི།
གཤོང་ནི་ རྣམ་པ་ གཞན་ མ་བྱས།
དེ་ཕྱིར་ ཆ་ཤས་ གཟུགས་ཅན་ནོ ॥ ७१

वल्लितम्बु गलद्धर्मजलमालोहितेक्षणम् ।
विवृणोति मदावस्थामिदं वदनपङ्कजम् ॥७२॥

གཤོང་པའི་ འདམ་སྒྲེས་ སྒྲིན་འཁྱིག་ ཅིང་།
རྩལ་གྱི་ཆུ་ ཟག་པ་ དང་།
མིག་དག་ ཀྱན་དུ་ དམར་པ་ འདི།
སྒྲིས་པའི་གནས་སྐབས་ གསལ་པར་བྱེད ॥ ७२

अविकृत्य मुखाङ्गानि मुखमेवारविन्दताम् ।
आसीद्गमितमत्रेदमतोवयविरूपकम् ॥७३॥

འདིར་ནི་ གདོང་པའི་ཆ་ཤས་དག །
 རྣམ་འགྱུར་ མ་བྱས་ གདོང་པ་ཉིད །
 པརྒྱར་ བཀོད་བྱས་ དེས་ན་ འདི །
 ཆ་ཤས་ཅན་གྱི་ གཟུགས་ཅན་ནོ ༥ ༧༢

मदपाटलगण्डेन रक्तनेत्रोत्पलेन ते ।
 मुखेन मुग्धे सोप्येष जनो रागमयः कृतः ॥७४॥

མཇོས་མ་ སྟོས་པའི་ འཁྱུར་ཆོས་དམར །
 མིག་གི་ བྱུང་ལ་ དམར་པོ་ཅན །
 བྱོད་ཀྱི་ གདོང་གིས་ སྟེ་བོ་ནི །
 འདི་ཡང་ དམར་པའི་ རང་བཞིན་ བྱས ༥ ༧༤

एकाङ्गरूपकञ्चैतदेवं द्विप्रभृतीनि च ।
 अङ्गानि रूपयन्त्यत्र योगायोगौ भिदाकरौ ॥७५॥

དེ་ལྟར་ འདིར་ནི་ གཉིས་ སྟོགས་ཀྱི །
 ཡན་ལག་ རྣམས་ ཀྱང་ གསལ་བྱེད་པ །

འདི་ནི་ ཡན་ལག་གཅིག་གཟུགས་ཅན །

ལྷན་དང་མི་ལྷན་ བ་དད་བྱེད ༥ ༧༥

स्मितपुष्पोज्ज्वलं लोलनेत्रभृंगमिदं मुखं ।

इति [15a] पुष्पद्विरेफाणां सङ्गत्या युक्तरूपकं ॥७५॥

གདོང་ འདི་ འཇུས་པའི་ མི་དོག་འབར །

གཡོ་པའི་ མིག་གི་ བྱང་བ་ཅན །

ཞེས་པ་ མི་དོག་ བྱང་བ་ དག །

འགྲོགས་པས་ལྷན་པའི་གཟུགས་ཅན་ནོ ༥ ༧༥

इदमाद्रस्मितज्योत्स्नं स्निग्धनेत्रोत्पलं मुखं ।

इति ज्योत्स्नोत्पलायोगादयुक्तं नाम रूपकम् ॥७७॥

གདོང་ འདི་ འཇུས་ གཤེད་ རྩེད་དང་ །

སྐྱས་པའི་ མིག་གི་ རྩུལ་ཅན །

རྩེད་དང་ རྩུལ་ མི་འཇུས་པས །

འཇུས་མིན་ཞེས་པའི་ གཟུགས་ཅན་ནོ ༥ ༧༧

रूपणादङ्गिनोङ्गानां रूपणारूपणाश्रयात् ।

रूपकं विषमं नाम ललितं जायते यथा ॥७८॥

ཡན་ལག་ཅན་གཟུགས་ ཡན་ལག་ རྣམས་ ।

གཟུགས་བྱས་ གཟུགས་སྤྱོད་མ་བྱས་ལ།

བདེན་པ་ མི་མཉམ་པ་ ཞིས་པའི།

གཟུགས་ཅན་ མཛེས་པ་ ཡིན་དེ་ དཔེར ॥ ७८

मदरक्तकपोलेन मन्मथस्त्वन्मुखेन्दुना ।

नर्तिते भ्रूलतेनालं मर्दितुम्भुवनत्रयं ॥७९॥

སྤྱོད་པའི་ མཁུར་རྩྭ་རབ་ དཔེར་ཞིང་།

སྤྱིན་མའི་འཁྲི་ཞིང་ གར་བྱེད་པ།

ཁྱེད་ གདོང་ རྩ་བས་ ཡིད་སྤྱོད་ཀྱིས།

འཛིག་དེན་ གསུམ་པོ་ གཞིས་པར་ནུས ॥ ७९

हरिपादः शिरोलग्नजह्नुकन्याजलांशुकः ।

जयत्यसुरनिःशंकसुरानन्दोत्सवध्वजः ॥८०॥

རྩ་རྒྱུ་བྱ་མེད་ཚུ་གོས་ ནི །
 འཕྲོག་བྱེད་ ཀང་པའི་ཅེར་ལྷན་པ །
 ལྷ་མིན་ དོག་མེད་ལྷ་དགའ་བའི །
 དགའ་ཕྱོན་གྱལ་མཚན་ གྱལ་གྱུར་ཅིག ༥ ༥༠

विशेषेणसमग्रस्य रूपं केतोर्यदीदृशं ।
 पादे तदर्पणादेतत् सविशेषणरूपकं ॥८१॥
 ཀང་ཞིག་ བྱེད་པར་ཚོགས་པ་ཡི །
 གཞུགས་ཀྱི་གྱལ་མཚན་ འདི་འདྲ་བ །
 དེ་ནི་ ཀང་པ་ ལ་ བཞོད་ དེ །
 བྱེད་པར་དང་བཅས་གཞུགས་ཅན་ལོ ༥ ༥༡

न मीलयति पद्मानि न नभोप्यवगाहते ।
 त्वन्मुखेन्दुर्ममासूनां हरणायैव प [15b] श्यति ॥८२॥

བདུ་ནམས་ནི་ མི་ཆུམ་ ཞིང་ །
 ནམ་མཁའ་ལ་ ཡང་ མི་འགྲོ་བ །

ཁྱིལ་གཤོང་ཟླ་བས་ བདག་གི་ནི །
 སྒྲིག་ནམས་ འཕྲིག་པ་ ཉིད་དུ་ བཟླ ॥ ༥༢

अक्रिया चन्द्रकार्याणामन्यकार्यस्य च क्रिया ।
 अत्र सन्दर्श्यते तस्माद्विरुद्धनाम रूपकं ॥८३॥

ཟླ་བའི་ བྱ་བ་ བྱ་མིན་ དང་ །
 གཞན་ གྱི་བྱ་བའི་ བྱ་བ་ འདིར །
 ཡང་དག་ བཟླ་ན་ ཉི་ དེ་ ཡི་ སྒྲིར །
 འགལ་བ་ ཞེས་བྱའི་ གཞུགས་ཅན་ནི ॥ ༥༣

गाम्भीर्येण समुद्रोसि गौरवेणासि पर्वतः ।
 कामदत्वाच्च लोकानामसि त्वं कल्पपादपः ॥८४॥

ཁྱིལ་ནི་ ཟབ་པས་སྐྱེ་མཆོ་དང་ །
 བསྐྱེང་བ་ ཉིད་ གྱིས་ རི་བོ་ ཡིན །
 འཇིག་དེན་ རྣམས་ལ་ འདོད་པ་ནི །
 སྒྲིར་ སྒྲིར་ དཔག་ བསམས་ཀྱང་འཕྱང་ངོ་ ॥ ༥༤

गाम्भीर्यप्रमुखैरत्र हेतुभिः सागरो गिरिः ।
कल्पद्रुमश्च क्रियते तदिदं हेतुरूपकं ॥८५॥

འདིར་ནི་ ཟབ་པ་ལ་སྒྲིགས་པའི །
གྲུ་ནམས་ དག་གིས་ གྲུ་མཚོ་ རི །
དཔག་ བསམ་ཤིང་ ཡང་ བྱེད་པས་ན །
འདི་ནི་ གྲུ་ཡི་གཟུགས་ཅན་ནོ ॥ ८५

राजहंसापभोगाहं भ्रमरप्रार्थ्यसौरभं ।
सखि वक्ताम्बुजमिदन्तवेति श्लिष्टरूपकं ॥८६॥

གྲོགས་མོ་ བྱེད་ཀྱི་ གཤོང་ པད་འདི །
རུ་ཇཱི་ས་སས་ ཉེར་ སྐྱེད་འོས །
དྲི་ཞིས་ བྱང་བས་དོན་ གཉེར་འོས །
ཞིས་པ་ སྐྱར་བའི་གཟུགས་ཅན་ནོ ॥ ८६

इष्टं साधर्म्यं वैधर्म्यं दशानादौ ण मुख्ययोः ।
उपमान्यतिरेकाख्यं रूपकद्वितयं यथा ॥८७॥

གཙོ་བོ་ དང་ནི་ སལ་བ་ལ །
 ཆོས་མཐུན་ ཆོས་མི་མཐུན་ མཐོང་བས །
 དཔེ་དང་ རྟོག་པ་ཅན་ ཞེས་པའི །
 གཟུགས་ཅན་ རྣམ་པ་གཉིས་ འདོད་ དཔེར ༥ ༥༧

अयमालोहितच्छायो मदेन मुखचन्द्रमाः ।
 सन्नद्धोदयरगस्य चन्द्रस्य प्रतिगर्जति ॥८८॥

ཕྱིས་པས་ ཀུན་དུ་ དམར་བ་ ཡིས །
 བཀའ་པ་ བཞིན་ གྱི་ རྩ་བ་ འདི །
 འཆར་ཀའི་ དམར་བ་ པན་ཆོགས་པའི །
 རྩ་བ་ལ་ནི་ རབ་དུ་འགྲན ༥ ༥༨

चन्द्रमाः पीयते देवैर्मया त्वन्मुखचन्द्रमाः ।
 असमग्रोप्यसौ [16a] शश्वदयमापूर्णमण्डलः ॥८९॥

ལྷ་ རྣམས་ ཀུས་ ནི་ རྩ་བ་ འཕྱངས །
 བདག་གིས་ ཁྱོད་གདོང་རྩ་བ་ འཕྱངས །

འདི་ནི་ གང་བ་ མ་ཡིན་ ཡང་ །

འདི་ནི་ ཉག་དུ་ དགྲིལ་འཁོར་ རྩོགས་ ॥ ༥༠

मुखचन्द्रस्य चन्द्रत्वमित्थमन्योपतापिनः ।

न ते सुन्दरि संवादीत्येतदाक्षेपरूपकं ॥६०॥

མཛེས་མ་ ཁྱིད་ གདོང་ རྩ་བ་ནི་ །

འདི་ལྟར་ གཞན་ དག་ གདུང་ཁྱིད་པས་ །

རྩ་བ་ཉིད་དུ་ བཛོད་མིན་ ཞེས་ །

དེ་ནི་ སྒྲན་པའི་ གཟུགས་ཅན་ནོ་ ॥ ༥༠

मुखेन्दुरपि ते चण्डि मां निदहति निदयं ।

भाग्यदोषान्ममैवेति तत्समाधानरूपकं ॥६१॥

གདུམ་མོ་ ཁྱིད་ གདོང་ རྩ་བས་ ཀྱང་ །

བཅེ་བ་མེད་པར་ བདག་ སྤྲུག་པ་ །

བདག་ཉིད་ སྐལ་བ་ ཉིད་ཀྱི་ སྒྲོན་ །

ཞེས་འདི་ མཉམ་འཛོག་ གཟུགས་ཅན་ནོ་ ॥ ༥༡

मुखपङ्कजरङ्गेस्मिन् भ्रूलतानर्तकी तव ।
लीलानृत्यं करोतीति रम्यं रूपकरूपकं ॥६२॥

ཁྱེད་གདོང་ འདས་སྐྱེས་ རོ་ར་ འདིར་ ।
སྒྲིན་མའི་ འཁྱི་ཤིང་ གར་མཁན་མ།
རེལ་སྐྱེག་ དགའ་བས་ གར་བྱེད་དོ།
ཞེས་པ་ གཟུགས་ཅན་གྱི་གཟུགས་ཅན་ ॥ ༦༢

नैतन्मुखमिदम्पद्मं न नेत्रे भ्रमराविमौ ।
एतानि केसराण्येव नैता दन्तार्चिषस्तव ॥६३॥

འདི་ནི་ གདོང་མིན་ འདི་ བཟུ་ ।
འདི་དག་ མིག་མིན་ འདི་ བྱང་བ།
འདི་ རྣམས་ གེ་སར་ ཉིད་ ཡིན་ འདི།
ཁྱེད་གྱི་ སོ་ཡི་ འོད་ཟེར་ མིན་ ॥ ༦༣

मुखादित्वं निवर्त्यैव पद्मादित्वेन रूपणात् ।
उद्भाषितगुणोत्कर्षन्तत्त्वापह्नवरूपकं ॥६४॥

གདོང་ ལ་སོགས་པ་ཉིད་ བརྒྱུག་མེ །
 བད་ ལ་སོགས་ གཞུགས་བྱས་པས །
 ཡོན་ཏན་ ཁྱད་འཕགས་ གསལ་བྱེད་པ །
 དེ་ཉིད་ བསྟོན་དོར་ གཞུགས་ཅན་ནི ། ཅ

न पर्यन्तो विकल्पानां रूपकोपमयोरतः ।
 दिङ्मात्रं दर्शितं धीरैरनुक्तमनुमीयताम् ॥६५॥

གཞུགས་ཅན་དཔེ་ཡི་ རྣམ་རྟོག་ རྣམས །
 མཐའ་ཡོད་མ་ཡིན་ དེ་ཡི་ཕྱིར །
 རྩོམ་ན་ རྣམས་ཀྱི་ ཕྱོགས་ཙམ་ བསྟན །
 མ་བརྗེད་ རྩམ་སྐད་ཕག་པར་བྱ ། ཅ

[16b] जातिक्रियागुणद्रव्यवाचिनैकत्र वर्तिना ।
 सर्ववाक्योपकारश्चेत् तमाहुर्दीपकं यथा ॥६६॥

རིགས་ དང་ བྱ་བ་ ཡོན་ཏན་ རྩམ །
 རྩོག་ གཞུག་ ལ་ནི་ གནས་པ་ ཡིས །

གལ་དེ་ ངག་ ཀུན་ལ་ སན་ན །
 དེ་ནི་ གསལ་བྱེད་དུ་བཞུགས་ དཔེར ༥ ༡༩

पवनो दक्षिणः पणं जीर्णं हरति वीरुधाम् ।
 नवाय च नताङ्गीनाम् मानभङ्गाय कल्पते ॥६७॥

ལྷོ་ཡི་རྒྱུད་ གིས་ འཁྱིལ་ལྷོ་གི །
 འདབ་ས་རྩིང་པ་ ལྷགས་པར་བྱེད །
 དུད་པའི་ལུས་ཅན་ས་རྣམས་ཀྱི །
 ཁྱེད་ས་པ་ གསར་དུ་ འཛོམས་པར་བྱེད ༥ ༢༠

चरन्ति चतुरम्भोधिवेलोद्यानेषु दन्तिनः ।
 चक्रवालाद्रिकुञ्जेषु कुन्दभासो गुणाश्च ते ॥६८॥

རྒྱུ་འོ་ རུ་གཏེར་ བཞི་ ངོགས་ཀྱི །
 སྒྱེད་སྐྱོ་ཚལ་དུ་ སྐྱོ་ཅན་དེ །
 ཁྱེད་ལྷག་ རི་བོའི་ ཁྱེད་ས་སུ་ ཡང་ །
 ཁྱེད་ཀྱི་ ཡོན་ཏན་ ཀུན་ལ་ འོད ༥ ༢༡

श्यामलाः प्रावृषेण्याभिर्दिशो जीमूतपङ्क्तिभिः ।
भुवश्च सुकुमाराभिर्नवशाद्वलराजिभिः ॥६६॥

ཨྲེ་བསངས་ཉིད་དོ་ ཡུལ་ས་ནས་ས་ བློ་ བློ་
དབྱར་སྐྱེས་ ཅུ་འཛིན་སྐྱེང་བ་ ཡིས་ བློ་
ས་ ཡང་ ཅུ་ ཨྲེན་ བསངས་བ་ བློ་ བློ་
ཤིན་དུ་ བཞིན་པའི་ སྐྱེང་བས་སོ་ ॥ ७०

विष्णुना विक्रमस्थेन दानवानां विभूतयः ।
कापि नीता कुतोप्यासन्नानीता दैवतर्धयः ॥१००॥

ཁྱབ་འཇུག་ རྣམ་བཞིན་ལ་ བཞིན་པས་ བློ་
དུ་ནུའི་བྱ་ཡི་ འབྱོར་བ་ དག་ བློ་
གང་དུ་ བཞིན་ བློ་ རྣམས་ བློ་ བློ་
ཕན་ཆོགས་ བཞིན་ བཞིན་པ་ སྐྱེངས་ ॥ १००

इत्यादिदीपकान्युक्तान्येवं मध्यान्तयोरपि ।
वाक्ययोर्दर्शयिष्यामः कानिचित्तानि तद्यथा ॥१०१॥

ཞེས་པ་ རང་པོའི་ གསལ་བྱེད་ བཟུན་ ।
 དེ་བཞིན་ བར་ རང་ མཐའ་ ཡི་ ཡང་ ।
 ཆོག་དག་ བདག་གིས་ བཟུན་པར་བྱ།
 དེ་དག་ འགའ་ཞིག་ འདི་ལྟ་སྟེ ॥ ༡༠༡

नृत्यन्ति निचुलोत्सङ्गे गायन्ति च कलापिनः ।
 बध्नन्ति च पयोधेषु दृशो हर्षाश्रु 17a] गर्भिणी ॥१०२॥

གར་བྱེད་ རི་ཚུ་ལ་ པར་བྱ།
 སྒྲུ་ ཡང་ ཡོན་ནི་ མདོངས་མཐའ་ཅན་ ।
 དགའ་བས་ ཐུས་པའི་ མིག་དག་ ཀྱང་ ।
 རྩ་འཛིན་ལ་ རི་ གཏོད་པར་བྱེད་ ॥ ༡༠༢

मन्दो गन्धवहः क्षारो वह्निरिन्दुश्च जायते ।
 चर्चाचन्दनपातश्च शस्त्रपातः प्रवासिनां ॥१०३॥

དི་བཞིན་ དལ་བྱ་ འགྲུ་བྱེད་དེ།
 རྩ་བ་ དག་ ཀྱང་ མི་ཚུ་འགྲུར་ ।

ཅ་ན་གྲག་བ་ ལྷ་བ་ ཡང་ ।

མཆོན་ལྷ་ འབྲམས་བ་ རྣམས་ ལའོ ॥ ༡༠༢

जलं जलधरोद्गीर्णकुलङ्गहशिखण्डिनां ।

चलञ्च तडितान्दाम बलं कुसुमधन्वनः ॥१०४॥

ཅ་འཇོན་ གྲིས་ནི་ རབ་གདོང་ཅུ་ ।

བྲིས་གྲི་ གཙུག་པད་ལྷན་བའི་ ཆོགས་ ।

སྒྲོག་གི་ཐག་བ་ གཡོ་བ་ ཡང་ ।

མེ་དོག་གཞུ་ཅན་དག་གི་ དབྱང་ ॥ ༡༠༣

त्वया कर्णोत्पलं कर्णे स्मरेणास्त्रं शरासने ।

मयापि मरणे चेतस्त्रयमेतत्समं कृतं ॥१०५॥

བྲིད་གྲིས་ ལྷ་ལྷ་ ར་བ་ལ་ ।

འདོད་པས་ མདའ་ རི་ མདའ་སྟན་ལ་ ।

ངས་ ཀྱང་ སེམས་ནི་ འཆི་བ་ ལ་ ।

གསུམ་པོ་ འདི་ནི་ མཉམ་དུ་བྱས་ ॥ ༡༠༤

शुक्लः श्वेताचिषो वृद्धयै पक्षः पञ्चशरस्य सः ।

स च रागस्य रागोपि यूनां रत्युत्सवश्रियः ॥१०६॥

དགར་ཕྱོགས་ཀྱིས་ བི་ རོད་དགར་ཅན །

འཕེལ་བྱེད་ དེ་ཡིས་ མདའ་ལྔ་བ །

དེས་ ཀྱང་ ཆགས་ མདངས་ ཆགས་མདངས་ཀྱིས །

ན་རྒྱང་ དགའ་བའི་ དགའ་སྟོན་དབལ་ ॥ १०६

इत्यादिदीपकत्वेपि पूर्वपूर्वव्यपेक्षिणी ।

वाक्यमाला प्रयुक्तेति तन्मालादीपकं मतं ॥१०७॥

ཞེས་ སོགས་ གསལ་བྱེད་ ཡིན་ མོད་ ཀྱང་ །

ལྔ་མ་ལྔ་མ་ལ་ རྟོས་བའི །

ངག་གི་ སྟང་བ་ རབ་ལྡན་ གྱིར །

དེ་ནི་ སྟང་བའི་གསལ་བྱེད་དོ ॥ १०७

अवलेपमनङ्गस्य वर्धयन्ति वलाहकाः ।

कर्शयन्ति तु धर्मस्य मारुतोद्भूतशीकराः ॥१०८॥

རྒྱུང་གིས་ གཙུབས་པའི་ཆུ་ཐིགས་ཅན །
 སྤྲིན་གྱིས་ ལུས་མེད་དག་གི་ ནི །
 ཡམ་བ་ལེ་བ་ འཕེལ་བར་བྱེད །
 རྒྱལ་གྱི་ དག་ནི་ སེལ་བར་བྱེད ༥ ༡༠༥

अवलेपपदेनात्र वलाहकपदेन च ।
 क्रिये विरुद्धे संयुक्ते [176]तद्विरुद्धार्थदीपकं ॥१०६॥

འདིར་ནི་ སྤྲིན་གྱི་ཆེག་དག་ དང་ །
 ཡམ་བ་ལེ་བའི་ ཆེག་དག་གིས །
 བྱ་བ་ འགལ་བར་ལྷན་པ་ དེ །
 འགལ་བའི་དོན་གྱི་གསལ་བྱེད་དོ ༥ ༡༠༦

हरत्याभोगमाशानां गृह्णाति ज्योतिषां गणम् ।
 आदत्ते चाद्य मे प्राणानसौ जलधरावली ॥११०॥

ཆུ་འཛིན་ དག་གི་ སྤྲེང་བ་ འདིས །
 སྤྲོགས་ནསས་ཀྱི་ ནི་ གོ་སྐབས་ འཕྲོག །

སྒྲུབ་མ་ ཡི་ རི་ རྩོགས་ རྣམས་ འཛིན་ ।
དེང་ཡང་ བདག་གི་སྒྲིག་ རྣམས་ ཡིན ॥ ११०

अनेकशब्दोपादानात् क्रियैवैकात्र दीप्यते ।
यतो जलधरावल्यास्तस्मादेकार्थदीपकं ॥१११॥

གང་ཕྱིར་རྒྱ་ འཛིན་ བྱེད་བ་ཡི་ ।
བྱ་བ་ གཅིག་ ཉིད་ གསལ་བྱེད་ འདིར་ ।
དུ་མའི་ རྒྱ་ཡིས་ ཉིར་སྒྲུབ་པ་ ।
དེ་ཕྱིར་ དོན་གཅིག་གསལ་བྱེད་དོ ॥ १११

हृद्यगन्धवहास्तुङ्गास्तमालश्यामलत्विषः ।
दिवि भ्रमन्ति जीमूता भुवि चैते मतंगजाः ॥११२॥

དྲི་ཡི་བཞུན་པ་ ཡིད་འོང་ མཐོ་ ।
སྒྲིབསངས་ ཏ་སྒྲུ་ལ་ཡི་འོད་ ।
སྒྲིན་ རི་ མཁའ་ལ་ རྒྱ་བྱེད་ དེ་ ।
སྒྲུང་ཆེན་ འདི་དག་ ས་ལའོ ॥ ११२

अत्र धर्मैरभिन्नानामध्राणां दन्तिनामपि ।

भ्रमणेनैव सम्बन्ध इति श्लिष्टार्थदीपकं ॥११३॥

འདིར་ བློ་ ཆས་དག་ བ་དང་ མིན་ ।

སྒྲིན་དང་ སྒྲུང་པོ་ རྣམས་དག་ ཀྱང་ ।

གྲུ་བ་ཉིད་ ཀྱིས་ འབྲེལ་བའི་ སྒྲིར་ ।

སྒྲུར་བའི་དོན་གྱི་ གསལ་བྱེད་དོ ॥ ११३

अनेनैव प्रकारेण शेषाणामपि दीपके ।

विकल्पानामनुगतिर्विधातव्या विचक्षणैः ॥११४॥

རྣམ་པ་ འདི་ཉིད་ ཁོ་ན་ཡིས་ ।

གསལ་བྱེད་ལ་ནི་ རྣམ་རྟོག་པ་ ।

ལྷག་མ་ རྣམས་ ཀྱང་ རྗེས་འགྲོ་ཡིས་ ।

མཁས་པ་ རྣམས་ ཀྱིས་ རྟོགས་པར་བྱ ॥ ११४

अर्थावृत्तिः पदावृत्तिरुभयावृत्तिरित्यपि ।

दीपकस्थान एवेष्टमलंकारत्रयं यथा ॥११५॥

གསལ་བྱེད་གྱི་ རི་ གནས་ཉིད་དུ །
 རོན་བསྐྱོར་ དང་ རི་ ཆོག་བསྐྱོར་ དང་ །
 གཉིས་ཀ་ བསྐྱོར་བ་ ཅེས་པ་ ཡི །
 གྱུན་ གསུམ་པོ་དག་ འདོད་དེ་ དཔེར ༥ ११४

विकसन्ति कदम्बानि स्फुटन्ति कुटजोद्गमाः ।
 उन्मीलन्ति च [18a] कन्दल्यो दलन्ति ककुभानि च ॥११६॥

ཀ་དཔྱ་ རི་ རྣམ་པར་གྱིས །
 ཀྱ་ཏ་ཇོ་རྒྱ་མ་ རབ་གསལ །
 ཀརྱ་ལུ་རི་ རབ་དུ་ བྱེ །
 ཀ་ཀྱ་བྱ་ ཡང་ བྱིས་པར་གྱུར ༥ ११५

उत्कण्ठयति मेघानां माला वर्गङ्कुलापिनां ।
 यूनां चोत्कण्ठयत्यद्य मानसम्मकरध्वजः ॥११७॥

སྒྲིན་གྱི་ བྱང་བ་ དག་གིས་ རི །
 མ་བྱུང་ ཆོགས་ རྣམས་ སྒྲི་སྒྲིག་བྱེད །

ཐུ་སྲིན་ གྲུལ་མཚན་ཅན་ གྲིས་ དེང་ ।

ན་ཐུང་ རྣམས་ ཡིད་ འདོད་ལྡན་བྱེད ॥ ११७

जित्वा विश्वम्भवानथ विहरत्यवरोधनैः ।

विहरत्यप्सरोभिस्ते रिपुवर्गो दिवं गतः ॥११८॥

ཀླན་ལས་ གྲུལ་ནས་ དེ་རིང་ བྱིད་ ।

བཅུན་མོ་ རྣམས་ དང་ ཅེ་བར་བྱེད་ ।

བྱིད་ཀྱི་དབྱ་སྡེ་ མཐོ་རིས་ སྲིང་ ।

ལྷ་མོ་ རྣམས་ དང་ ཅེ་བར་བྱེད ॥ ११८

प्रतिषेधोक्तिराक्षेपस्त्रैकाल्यापेक्षया त्रिधा ।

अथास्य पुनराक्षेप्यमेदानन्त्यादनन्तता ॥११९॥

དགག་བ་ བཛོད་བ་ འགོག་བ་ སྟེ་ ।

དུས་གསུམ་ལ་ལྟོས་ རྣམ་བ་ གསུམ་ ।

ཅེ་སྟེ་ དེ་ཡང་ དགག་བྱ་ཡི་ ।

དབྱེ་བ་ མཐའ་ཡས་ སྤྱིར་ མཐའ་ཡས ॥ ११९

अनङ्गः पञ्चभिः पुष्पैर्विश्वं व्यजयते पुभिः ।

इत्यसंभाव्यमथवा विचित्रवस्तुशक्तयः ॥१२०॥

ལུས་མེད་ཀྱི་ རི་ མེ་དོག་ ལྷི།

མདའ་ལྷམ་ ཀླན་ལས་སྐྱལ་བར་གྱུར།

ཅེས་པ་ མི་སྲིད་ ཡང་ན་ བློ།

དངོས་པོའི་ནས་པ་ རྣམ་པར་བཀྲ། ॥ ༢༩༠

इत्यनङ्गजयायोगबुद्धिर्हेतुबलादिह ।

प्रवृत्तैवं यदाक्षिप्ता वृत्ताक्षेपस्तदोद्दृशः ॥१२१॥

ཞེས་པ་ འདིར་ནི་ རྒྱ་སྟོབས་ ཀྱིས།

ལུས་མེད་ རྒྱལ་བར་མི་རིགས་ གྲོ།

དེ་ལྟར་ བྱུར་ བཀག་ བཀ་གི་ སྤྱིར།

བྱང་པ་ འགོག་པ་ རེ་ འདི་འདྲ་ ॥ ༢༣༡

कुतः कुवलयं कर्णे करोषि कलभाषिणि ।

किमपाङ्गमपर्याप्तमस्मिन्कर्मणि मन्यसे ॥१२२॥

ཀྱི་སྒྲིག་ས་ཀྱི་ས་དམར་ མིག་གི་ས་ནི །

ཁྱོད་ཀྱི་ས་ མཐོང་བར་འགྱུར་ མ་ལག་ས ༥ १३८

सोयं भविष्यदाक्षेपः प्रागेवातिमनस्विनी ।

कदाचिदपराधोस्य भावीत्येवमरुन्ध यत् ॥१२५॥

སྤར་ཉིད་ ཤེན་དྲ་ཁྱེངས་ལྷན་མས །

ནམ་ཞིག་ འདི་ཡིས་ གཞོད་པ་ དག །

འབྱུང་བ་ དེ་ལྟར་ འགོག་བྱེད་པ །

འདི་ནི་ འབྱུང་འགྱུར་ འགོག་པའོ ༥ १३९

तव तन्वङ्गि मिथ्यैव रूढमङ्गेषु मार्दवं ।

यदि सत्यम्मृदून्येव किमकाण्डे रुजन्ति मां ॥१२६॥

ལུས་སྤ་ ཁྱོད་ཀྱི་ ཡན་ལག་ ནམས །

འཇམ་པ་ ཉིད་དུ་ གནས་པ་ བརྟན །

གཡ་དེ་ བདེན་པར་ འཇམ་པ་ན །

སྒྲོ་བྱར་དུ་ བདག་ ཅ་ལ་ གཏུང་ ༥ १३७

धर्माक्षेपोयमाक्षितमङ्गनागात्रमार्दवं ।

कामुकेन यदत्रैवं कर्मणा तद्विरोधिना ॥१२७॥

གང་ཕྱིར་ རེ་ལྟར་ འདོད་ལྟར་ གྱིས། ।

རེ་ ཏང་ འགལ་བའི་ལས་ གྱིས་ བློ ॥ १२७

བྱད་མེད་ ལུས་ འདི་ འཇམ་པ་ ཏག།

འགོག་པ་ འདི་ བློ་ ཚེས་ འགོག་པའོ།

सुन्दरी सा नवेत्येष विवेकः केन जायते ।

प्रभामात्रं हि तरलं दृश्यते तत्र नाश्रयः ॥१२८॥

རེ་བློ་ མཇོས་མ་འམ་ ཡིན་ཞེས། ।

ནམ་རིག་ འདི་བློ་ ཅི་ལས་སྐྱེ། ।

རེར་བློ་ འདོད་ཅམ་ གཡོ་བ་ ཉིད། ।

མཐོང་བར་གྱུར་གྱི་ རེན་མ་ཡིན། ॥ १२८

धर्म्याक्षेपोयमाक्षितो धर्मोऽधर्मं प्रमाहृत्य ।

अनुज्ञायात्र तद्रूपमत्याश्चर्यं विवक्षता ॥१२९॥

གང་ འདིར་ གཟུགས་ཅན་མ་ རོ་མཚར་ ।
 བཛྲོད་པར་ འདོད་པས་ འོད་ཅས་པའི་ ।
 ཆོས་ འདི་ ཁས་སྤངས་ ཆོས་ཅན་ དག་ ।
 འགོག་འདི་ ཁས་སྤངས་ ཆོས་ཅན་ དག་ ॥ ༡༣༠

चभ्रुषी [19a] तव रज्येते स्फुरत्यधरपल्लवः ।
 भ्रुवौ च भ्रुगे न तथाप्यदुष्टस्यास्ति मे भयं ॥१३०॥

བྱོད་ཀྱི་ མིག་ནི་ དམར་གྱུར་ ཅིང་ ।
 མཆུ་ཡི་ ཡལ་འདབ་ གཡོ་བ་ དང་ ।
 སྒྲིན་མ་ འབྱོག་མེ་ དེ་ལྟ་ནའང་ ।
 ཉེས་པ་ མེད་པས་ བདག་ མི་འཇིགས་ ॥ ༡༣༠

स एष कारणाक्षेपः प्रधानं कारणं भियः ।
 स्वापराधो निषिद्धोत्र यत्प्रियेण पटीयसा ॥१३१॥

གང་གྱིར་ མཇེའ་བོ་ མཁས་པ་ ཡིས་ ।
 འདི་དག་ འདིར་ནི་ སྐྱུ་ འགོག་པའོ་ ।

འཛིགས་པ་ ཡི་ནི་ རྒྱ་ཡི་གཙོ།

རང་གི་ ཉེས་པ་ འགོག་བྱེད་པ་ ॥ 232

दूरे प्रियतमः सोयमागतो जलदागमः ।

दृष्टाश्च फुल्ला निचुला न मृता चास्मि किं न्वहं ॥१३२॥

མཇེའ་བོ་ དག་ ནི་ རིང་ན་ གནས།

རྒྱ་འཛིན་ བགོད་ལྗན་ འདི་ནི་ འཇོས།

ནི་ཚུ་ལ་ ཡང་ རྒྱས་པར་ མགྲོང་།

བདག་གི་ མིན་པ་ འདི་ ཅི་ག། ॥ 233

कायाक्षेपः स कायस्य मरणस्य निवर्त्तनात् ।

तत्कारणमुपन्यस्य दारुणं जलदागमं ॥१३३॥

དེ་རྒྱ་རྒྱ་འཛིན་ བགོད་པ་ ནི།

མི་བཟད་པ་ དག་ ཉེར་ བགོད་ གས།

འབྲས་བུ་ འཆི་བ་ བརྗོག་པའི་ཕྱིར།

དེ་ནི་ འབྲས་བུ་ འགོག་པ་འོ། ॥ 233

न चिरं मम तापाय तव यात्रा भविष्यति ।
यदि यास्यसि यातव्यमलमाशंकयात्र ते ॥१३४॥

गल'ङे' गल्लेगल'ङ' गल्लेगल'ङ' ऋँ' ।
सुँ'गु' वल्ले'ङ' वल'ङ' वल'ङ' ३ ।
गल'ङ' व' लुङ'ङ' २' २' २' २' २' ।
२' २' सुँ'ङ' ३' ३' ३' ३' ३' ॥ १३८

इत्यनुज्ञामुखेनैव कान्तस्याश्लिष्यते गतिः ।
मरणं सूचयन्त्येव सोऽनुज्ञाक्षेप उच्यते ॥१३५॥

ले'ङ' २' २' २' २' २' २' २' २' २' ।
ले'ङ' २' २' २' २' २' २' २' २' २' ।
ले'ङ' २' २' २' २' २' २' २' २' २' ।
ले'ङ' २' २' २' २' २' २' २' २' २' ॥ १३५

धनञ्च बहु लभ्यन्ते सुखं क्षेमं च वत्सनि ।
न च मे प्राणसं[19b]देहस्तथापि प्रिय मास्म गाः ॥१३६॥

རོར་ནི་ མང་པོ་ རྟེན་ འགྲུར་ ཞིང་ །
 ལམ་དུ་ ཡང་ནི་ བདེ་ ཞིང་ དག།
 བདག་སྟོན་ལ་ ཡང་ བྲེ་ཆོས་མེད།
 འོན་ཀྱང་ མཇུག་པོ་ འགྲོ་མི་བྱ། ॥ १३५

प्रत्याचक्षाणया हेतून् प्रिययात्राविवन्धनः ।
 प्रभुत्वेनैव रुद्धस्तत्प्रभुत्वाक्षेप ईदृशः ॥१३७॥

མཇུག་པོ་ འགྲོ་བར་ སྟོར་བ་ ཡི།
 གྱུ་ རྣམས་ དག་ རི་ རབ་བཤད་ནས།
 དབང་ཉིད་ ཀྱིས་ རི་ དེ་ འགོག་པ།
 འདི་འདྲ་ དབང་གིས་ འགོག་པ་འོ། ॥ १३७

जीविताशा बलवती धनाशा दुर्बला मम ।
 गच्छ वा तिष्ठ वा कान्त स्वावस्था तु निवेदिता ॥१३८॥

བདག་ནི་ གསོན་རེ་ སྟོབས་དང་ལྡན།
 རོར་གྱི་ བསམ་པ་ སྟོབས་ལྡན་མིན།

མཇའ་བོ་གཤེགས་སམ་བཞུགས་ལགས་སམ།

རང་གི་གནས་སྐབས་སྒྲིམ་པ་ལགས། ॥ १३८

असावनादराक्षेपो यदनादरवद्वचः ।

प्रियप्रयाणं रुन्धत्या प्रयुक्तमिह रक्तया ॥१३९॥

གང་ཕྱིར་འདིར་ནི་ཆགས་ལྡན་སམ།

མཇའ་བོའི་བགོད་པ་འགོག་བྱེད་ཅིང་།

མ་གུས་བཞིན་དུ་ཆོག་སྦྱར་བ།

འདི་ནི་མ་གུས་པས་འགོག་པའོ། ॥ १३९

गच्छ गच्छसि चेत्कान्त पन्थानः सन्तु ते शिवाः ।

ममापि जन्म तत्रैव भूयाद्यत्र गतो भवान् ॥१४०॥

མཇའ་བོ་གཡ་དེ་གཤེགས་ན་བཞུད།

ཁྱོད་ཀྱི་ལམ་ནི་ཤིས་གུར་ཅིག།

གང་དུ་ཁྱོད་ནི་གཤེགས་པ་དེར།

བདག་ཀྱང་སྦྱོར་ནི་དགུར་ཅིག། ॥ १४०

इत्याशीर्वचनाक्षेपो यदाशीर्वादवर्त्मना ।

स्वावस्थां सूचयन्त्येव कान्तयात्रा निषिध्यते ॥१४१॥

दे०ङ्क० षे०स०व०ङ्गे०द०ल०स० ग्री०स० षा० ।

र०द०गी० षा०क०स०ल०व०स० षा०स०ल०ग्री०द०स०स० ।

स०ङ्गे०द०व०दे० व०ग्री०द०ष० र०ग्री०ग०ग्री०द०ष० ।

र०दे०ङ्के० षे०स०व०ङ्गे०द० ग्री०स० र०ग्री०ग०षा०दे० ॥ १८१

यदि सत्यैव यात्रा ते काप्यन्या मृग्यतां त्वया ।

अहमद्यैव रुद्धास्मि रन्ध्रापेक्षेण मृत्युना ॥१४२॥

षा०ल०५० ग्री०द०र०ग्री० व०दे०ङ्के०ङ्गे० ५० ।

ग्री०द०ग्री०स० षा०क०ङ्के०ष० र०षा०र०ल०षा० क०ङ्के० ।

व०द०षा०ङ्के० ल०षा०क०ङ्के० र०क०ङ्के०ष०ङ्के० ।

दे०ङ्के० ५० ५० र०ग्री०ग०षा०र०र०ग्री० ॥ १८२

इत्येष [20a] परुषाक्षेपः परुषाक्षरपूर्वकम् ।

कान्तस्याक्षिप्यते यस्मात्प्रस्थानं प्रेमनिघ्नया ॥१४३॥

གང་ཕྱིར་ མཛེར་བའི་ དབང་གུར་མས། །

མཛེར་བའི་ བགོད་པ་འགོག་བྱེད་པ། །

ཆོག་ཅུབ་ ཡི་གེ་ སྤྱོན་འགོ་ཅན། །

འདི་ནི་ ཅུབ་ མེས་ འགོག་པ་འོ། ॥ ༡༦༣

गन्ता चेद्गच्छ तूर्णान्ते कर्णं यान्ति पुरा रवाः ।

आर्तबन्धुमुखोद्गीर्णाः प्रयाणप्रतिबन्धिनः ॥१४४॥

གཡ་དེ་ གཤེགས་ན་ སྤུར་དུ་ བཞུད། །

ཕྱི་ནས་ གཉིན་ འདུན་ འབྲུགས་པའི་ཁས། །

བསྐྱགས་པའི་ཆོ་ངེ་ འགོ་བ་ ཡི། །

གོགས་གུར་ ཁྱིད་ཀྱི་ རྩ་བར་ འོང་། ॥ ༡༦༤

साचिव्याक्षेप एवैष यदत्र प्रतिषिध्यते ।

प्रियप्रयाणं साचिव्यं कुर्वत्येकान्तरक्तया ॥१४५॥

གང་ཕྱིར་ འདིར་ནི་ མཐའ་གཅིག་དུ། །

ཆགས་མས་ གོས་ཉིད་ བྱེད་པ་ ཡིས། །

མཇེང་བོའི་ བགོད་པ་ འགོག་པ་ འདི།
གྲོས་ཉིད་ ཀྲིས་ནི་ འགོག་པ་འོ། ॥ १८४

गच्छेति वक्तुमिच्छामि मत्प्रियं त्वत्प्रियैषिणी ।
निर्गच्छति मुखाद्वाणी मा गा इति करोमि किम् ॥१४६॥

བཞུད་ཅེས་ བྱིད་དགྲོས་ བཛྲོད་ འདོད་ཀྱང་།
བདག་ཉིད་ དགའ་བར་བྱེད་པའི་ ཚོག་།
ས་གཤེགས་ ཅེས་པ་ ཁ་ནས་ནི།
བྱུང་བར་ བྱུང་ལ་ བདག་ ཅི་ བྱེད་ ॥ १८५

यत्नाक्षेपस्स यत्नस्य कृतस्यानिष्टवस्तुनि ।
विपरीतफलोत्पत्तेरानथंक्योपदर्शनात् ॥१४७॥

མི་འདོད་ དངོས་ལ་ འབད་བྱས་པས།
འབྲས་བྱ་ བྱིན་ཅི་ལོག་ བསྐྱེད་པས།
དོན་མེད་ ཉེ་བར་ བསྐྱེད་པའི་ བྱིར།
དེ་ནི་ འབད་པས་ འགོག་པའོ། ॥ १८६

क्षणदर्शनविघ्नाय पक्षमस्पन्दाय कुप्यतः ।

प्रेम्णः प्रयाणन्त्वं ब्रूहि मया तस्येष्टमिष्यते ॥१४८॥

སྒྲིང་ཅིག་ལྟ་བུ་བའི་ གོགས་བྱེད་བའི་ ।

ཇི་མ་ བསྐྱོད་པ་ལ་ ཁྱོ་བ་ ।

བྱེད་ཀྱིས་ མཇེའ་བར་ འགྲོ་བ་ སྒྲིས་ ।

བདག་ནི་ དེ་ཡི་ འདོད་པ་ འདོད་ ॥ ༡༤༨

अयं परवशाक्षेपो यत्प्रेमपरतन्त्र[20b]या ।

तया निषिध्यते यात्रेत्यस्यार्थस्योपसूचनात् ॥१४९॥

གང་ཕྱིར་ མཇེའ་བའི་ གཞན་དབང་མ་ ।

དེ་ཡིས་ བསྐྱོད་པ་ འགྲོག་བྱེད་ཅིང་ ।

དོན་ འདི་ ཉེ་བར་གསལ་བྱེད་ ཕྱིར་ ।

འདི་ནི་ གཞན་དབང་ འགྲོག་པ་འོ་ ॥ ༡༤༩

सहिष्ये विरहं नाथ देहादृश्याञ्जनं मम ।

यदतलेत्राङ्कुन्दर्पः प्रहन्तुं मां न पश्यति ॥१५०॥

མགོན་པོ་ འབྲེལ་བ་ བཟོད་པར་ བགྱི།
 གང་གིས་ མིག་ བསྐྱོས་ བདག་ལ་ནི།
 འདོད་པས་ བསྐྱུན་དུ་ མི་མཐོང་བའི།
 མཐོང་མིན་ མིག་སྒྲན་ བདག་ལ་ སྦྱོལ ॥ ༡༣༠

दुष्करं जीवनोपायमुपन्यस्योपरुध्यते ।
 पत्युः प्रस्थानमित्याहुरुपायाक्षेपमीदृशं ॥१५१॥

འཆོ་བའི་ཐབས་ ནི་ དཀའ་བ་དག།
 ཉེ་བར་བཀོད་ནས་ བདག་པོ་ནི།
 འགྲོ་བ་ འགོག་པར་བྱེད་པའི་ སྤྱིར།
 འདི་འདྲ་ ཐབས་ ཀྱིས་ འགོག་པར་བཟོད་ ॥ ༡༣༡

प्रवृत्तैव प्रयामीति वाणी बल्लभ ते मुखात् ।
 अयतापि त्वयेदानीम् मन्दप्रेम्णा ममास्ति किम् ॥१५२॥

རོ་བོ་ ཁྱིད་ཀྱི་ ཞལ་ནས་ ཆོག།
 བདག་ འགྲོ་ ཞེས་པ་ ཇེས་པར་བྱུང་།

མཇེའ་བ་ དམན་པ་ ཁྱིད་ཀྱིས་ དེ།

མ་ཕྱིན་ན་ ཡང་ བདག་ལ་ཅི ༥ ༡༣༩

रोषाक्षेपोयमुद्रिक्तस्नेहनिर्यन्त्रणात्मया ।

संरब्धया प्रियारब्धं प्रयाणं यन्निवार्यते ॥१५३॥

མཇེའ་བ་ རྒྱས་པས་ མ་བསྐྱམས་པའི།

བདག་ཉིད་ ཁྱོ་བས་ མཇེའ་བོ་ཡི།

འགྲོ་བ་ ཅེས་པ་ བརྗེས་པ་ གང་།

འདི་ནི་ ཁྱོ་བས་ འགོག་པ་འོ། ༥ ༡༣༩

नाघ्रातं न कृतं कर्णे स्त्रीभिर्मधुनि नार्पितं ।

त्वद्दिषां दीर्घिकास्वेव विशीर्णञ्जीर्णमुत्पलं ॥१५४॥

མ་བསྐྱམས་ བུ་མེའི་ན་བ་ལ།

མ་བྱས་ ཆང་ལ་ མ་བདབ་པར།

ཁྱིད་ཀྱི་ དགྲ་ཡི་ ཇིང་ ཉིད་དུ།

ཡུལ་ སྤོན་པ་ ཟེགས་པར་གུར། ༥ ༡༤༠

असावनुक्रोशाक्षेपः सानुक्रोशमिवोत्पले ।

व्यावर्त्य कर्म तद्योग्यं शोच्यावस्थोपदर्शनात् ॥१५५॥

स्त्रीदृष्टेः वत्सलं वत्सलं वत्सलं वत्सलं ।

देः देः वत्सलं वत्सलं वत्सलं वत्सलं ।

सुन्दरं देः वत्सलं वत्सलं वत्सलं वत्सलं ।

देः देः वत्सलं वत्सलं वत्सलं वत्सलं ॥ १५५ ॥

अथो न संभृतः कश्चिन्न वि[21a]द्या काचिदर्जिता ।

न तपः संचितं किंचिद्रूतञ्च सकलं वयः ॥१५६॥

देः देः वत्सलं वत्सलं वत्सलं वत्सलं ।

देः देः वत्सलं वत्सलं वत्सलं वत्सलं ।

देः देः वत्सलं वत्सलं वत्सलं वत्सलं ।

देः देः वत्सलं वत्सलं वत्सलं वत्सलं ॥ १५६ ॥

असावनुशयाक्षेपो यस्मादनुशयोत्तरं ।

अर्थाज्जुनादेव्यवृत्तिर्दशितेह गतायुषा ॥१५७॥

གང་ཕྱིར་ འདིར་ནི་ ཆོ་སང་བས། །
 དོན་སྐྱབ་ ལ་སོགས་ འགོག་པ་ནི། །
 འགྱོད་པ་ གཙོ་བོར་ སྟོན་བྱེད་པ། །
 འདི་ནི་ འགྱོད་པས་ འགོག་པ་འོ། ॥ ३१७

किमयं शरदंभोदः किं वा हंसकदम्बकम् ।
 रुतन्मुरसंवादि श्रूयते तन्न तोयदः ॥१५८॥

ཅི་འདི་ སྟོན་གྱི་རྩ་འཛིན་ ནས། །
 ཡང་ན་ ངང་པའི་ཆོགས་སས་ཅི། །
 སྐྱ་ནི་ ཀང་གདུབ་གྱི་ འདྲ་བ། །
 བྲོས་པས་ དེ་ནི་ རྩ་འཛིན་ མིན། ॥ ३१८

इत्ययं संशयाक्षेपः संशयो यन्निवर्त्यते ।
 धर्मेण हंससुलभेनास्पृष्टघनजातिना ॥१५९॥

ཆོས་འདི་ ངང་པ་ལ་ ཡོད་ཅིང་། །
 སྟོན་གྱི་ རིགས་ལ་ མ་རིག་པས། །

གང་ཞིག་ བེ་ཚེས་ རྒྱུ་བྱེད་པ།
འདི་ནི་ བེ་ཚེས་ འགོག་པ་འོ། ॥ १४०

अमृतात्मनि पद्मानां द्वेष्टरि स्निग्धतारके ।
मुखेन्दौ तव सत्यस्मिन्नपरेण किमिन्दुना ॥१६०॥

བདུད་ཅིའི་ བདག་ ཉིད་ བརྒྱ་ལ།
སྒང་ ཞིང་ སྐྱུ་མ་པའི་ དུ་ར་གེ།
བྱིད་ གདོང་ རྒྱ་བ་ འདི་ ཡོད་ བཞིན།
རྒྱ་བ་ གཞན་གྱིས་ ཅི་ཞིག་ བྱ། ॥ १५०

इति मुख्येन्दुराक्षिसो गुणान्गौणेन्दुवर्त्तिनः ।
तत्समानदर्शयित्वेति स्निष्टाक्षेपस्तथाविधः ॥१६१॥

པལ་པའི་རྒྱ་བ་ལ་ བདེན་པ།
དེ་ མཚུངས་ ཡོན་དན་ བཟུན་བྱས་ནས།
གཙོ་བོའི་རྒྱ་བ་ འགོག་བྱེད་པ།
ནས་པ་ དེ་ལྟར་ སྐྱར་བས་ འགོག། ॥ १५१

चित्रमाक्रान्तविश्वोपि विक्रमस्ते न तृप्यति ।

कदा वा दृश्यते तृप्तिरुदीर्णस्य हविर्भु[21b]जः ॥१६२॥

स्रस'उद'सक' अ' सु'गु' ॥

क'म'क'क' क'स'प' स'द'प' स'क' ।

अ'क' व'स'ग'उ' अ'व'प'प' ।

क'स'प'द'ग' क' क'स'ग'ग' स'स' ॥ १६३

अयमर्थान्तराक्षेपः प्रक्रान्तोयं निवर्त्यते ।

विस्मयोऽर्थान्तरस्येह दर्शनात्तत्सधर्मणः ॥१६३॥

ग'प'प' अ'द'क' क' क' ग'ग'ग' ।

द'प' क'स' स'क'स' व'स'ग'ग'ग' ।

अ'स'क' क'स'प' अ'ग'ग'ग'ग' ॥

अ'द'क' क' क' ग'ग'ग' अ'ग'ग'ग'ग' ॥ १६४

न स्तूयसे नरेन्द्र त्वं ददासीति कदाचन ।

स्वमेव मत्वा गृह्णन्ति यतस्त्वद्धनमर्थिनः ॥१६४॥

སྒྲིན་པ་པོ་ ཞེས་ རྣམ་ཡང་ རི །
 མི་དབང་ བྱོད་ལ་ མི་བསྟོད་དེ །
 གང་ཕྱིར་ སྒྲོང་བས་ བྱོད་ཀྱི་ལོར་ །
 རང་གི་ ཉིད་དུ་ བསམས་ནས་ ལེན ༥ ༡༩༩

इत्येवमादिराक्षेपो हेत्वाक्षेप इति स्मृतः ।
 अनयैव दिशान्येपि विकल्पाः शक्यमूहितुं ॥१६५॥

ཅས་པ་ ལ་སོགས་ འགོག་པ་ནི །
 རྒྱས་ འགོག་པ་ ཞེས་ བཤད་པ་སྟེ །
 ཕྱོགས་ འདི་ཉིད་ཀྱིས་ རྣམ་པར་རྟོག་ །
 གཞན་པ་ དག་ ཀྱང་ དཔག་པར་རྒྱས་ ॥ ༡༩༩

शेषः सौथान्तरन्यासो वस्तु प्रस्तुत्य किञ्चन ।
 तत्साधनसमर्थस्य न्यासो योन्यस्य वस्तुनः । १६६॥

གང་ཞིག་ དངོས་ འགའ་ རབ་བཞོད་ནས་ །
 དེ་ཡི་ རྒྱབ་བྱེད་ རྒྱས་པ་ཅན་ །

དངོས་པོ་ གཞན་དག་ འགོད་པ་དེ །

དོན་གཞན་ བཀོད་པར་ ཤེས་པར་བྱ ། ༡༩༩

विश्वव्यापी विशेषस्थः श्रेषाविद्धो विरोधवान् ।

अयुक्तकारी युक्तात्मा युक्तायुक्तो विपर्ययः ॥१६७॥

ཀུན་ཁྱབ་ ཁྱད་པར་ལ་ གནས་ དང་ །

སྤར་བ་ཅན་ དང་ འགལ་བ་ཅན །

མི་འོས་བྱེད་ དང་ འོས་པའི་བདག །

འོས་དང་ མི་འོས་ བརློག་པ་འོ ། ༡༩༠

इत्येवमादयो भेदाः प्रयोगेष्वस्य लक्षिताः ।

उदाहरणमालैषां रूपव्यक्त्यै निदर्शयते ॥१६८॥

འདི་ཡི་ དབྱེ་བ་ དེ་ལྟ་ སྟགས །

སྤྱོར་བ་ རྣམས་ལ་ རབ་དུ་མཆོན །

འདི་རྣམས་ རང་བཞིན་ གསལ་བྱའི་ཕྱིར །

དཔེར་ བཟོད་ སྤང་བ་ བཟླས་པར་བྱ ། ༡༩༡

भगवन्तौ जगन्नेत्रे सूर्यचन्द्रमसावपि ।

पश्य गच्छत ए[22a]वास्तं नियतिः केन लङ्घ्यते ॥१६६॥

ལེགས་ལྷན་ འགྲོ་བ་ནམས་ཀྱི་མིག་ ।

ཉི་མ་ དང་ནི་ རྒྱ་བ་ ཡང་ ।

ནུབ་པར་གྱུར་བ་ ཉིད་ལ་ ལྟོས་ ।

ངེས་པ་ལ་ ནི་ སུ་ཡིས་ འགོངས་ ॥ १६७

पयोमुचः परीतापं हरन्त्येते शरीरिणां ।

नन्वात्मलाभो महतां परदुःखोपशान्तये ॥१७०॥

ཐུ་འཛིན་ འདི་དག་ ལུས་ཅན་ གྱི་ ।

ཡོངས་སུ་གདུང་བ་ འཕྲོག་པར་བྱེད་ ।

ཆེན་པོ་ནམས་ ཀྱིས་ བདག་ ཐོབ་ གྲགས་ ।

གཞན་ གྱི་ སུག་བསྐྱལ་ ནི་ སྤྲོད་ཀྱི་ ॥ १७०

उत्पादयति लोकस्य प्रीतिं मलयमारुतः ।

ननु दाक्षिण्यसम्पन्नः सर्वस्य भवति प्रियः ॥१७१॥

མ་ལ་ཡ་ཡི་ རྒྱང་གིས་ རི །
 འཇིག་རྟེན་ དགའ་བ་ སྐྱེད་པར་བྱེད །
 དྲ་ཁྲི་རྒྱ་ དང་ ཡང་དག་ལྡན །
 ཀུན་གྱི་ སྐྱིང་སྤྲུག་ མ་ཡིན་ནམ ༥ ॥ २०१ ॥

जगदाह्लादयत्येष मलिनोपि निशाकरः ।
 अनुगृह्णाति हि परान् सदोषोपि द्विजेश्वरः ॥१७२॥

མཚན་མོར་ བྱེད་ འདི་ རི་མ་ དང་ །
 ལྡན་ཡང་ འགྲོ་བ་ དགའ་བ་སྐྱེད །
 གཉིས་སྐྱེས་དབང་པོ་ སྐྱོན་ལྡན་ ཡང་ །
 གཞན་དག་ རིས་སྤྲུ་འཇིན་པར་རྒྱས ༥ ॥ २०२ ॥

मधुपानकलात्कण्ठान्निर्गतोप्यलिनां ध्वनिः ।
 कटुर्भवति कर्णस्य कामिनां पापमीदृशम् ॥१७३॥

རྒྱང་ཅི་ འཕྲངས་པའི་ མགྲིན་ སྐྱོན་ ལས །
 བྱང་བ་ བྱང་བའི་ སྤྲ་དག་ ཀྱང་ །

ན་བར་ ཅུབ་པ་ ཉིད་ འགྱུར་བ་ །
འདོད་ལྷན་ རྣམས་ཀྱི་ སྒྲིག་ འདི་འདྲ་ ॥ ༡༧༢

अयं मम दहत्यङ्गमम्भोजदलसंस्तरः ।
हुताशनप्रतिनिधिर्दाहात्मा ननु युज्यते ॥१७४॥

ཅུ་སྒྲིག་འདབ་མའི་མལ་སྟན་ འདིས་ །
བདག་གི་ ལུས་ འདི་ གདུང་བར་བྱེད་ །
སྒྲིག་པའི་ བདག་ ཉིད་ བསྒྲིག་ཟ་ དང་ །
འདྲ་བས་ རིགས་པ་ མ་ཡིན་ རྣམ་ ॥ ༡༧༣

क्षिणोतु कामं शीतांशुः किं वसन्तो दुनोति मां ।
मलिनाचरितं कर्म सुरभेर्नन्वसाम्प्रतम् ॥१७५॥

བསིལ་ཟེར་ཅན་གྱིས་ ཉམས་བྱེད་ མེད་ །
དབྱིད་ ཀྱིས་ བདག་ནི་ ཅི་ལ་ གདུང་ །
དི་མ་ཅན་གྱིས་ སྒྲིད་པའི་ ལས་ །
དག་པས་ མི་འོས་པ་མིན་རྣམ་ ॥ ༡༧༤

कु[22b]मुदान्यपि दाहाय किमङ्ग कमलाकरः ।
न हीन्दुगृह्येषूप्रेषु सूर्यगृह्यो मृदुर्भवेत् ॥१७६॥

गु.सु.५.३३. ५८. श्रेण.सु.५.३ ।
५८.३.३.सु.५.३.३. ३.३.३.३.३ ।
३.३.३. ३.३.३.३.३. ३.३.३.३.३ ।
३.३.३. ३.३.३.३. ३.३.३.३.३. ॥ २०५

शब्दोपात्ते प्रतीते वा सादृश्ये वस्तुनोर्द्वयोः ।
तत्र यद्भेदकथनं व्यतिरेकः स कथ्यते ॥७७॥

३.३.३.३.३.३. ३.३.३.३.३. ३.३.३.३.३.३ ।
३.३.३.३. ३.३.३.३. ३.३.३.३.३. ३.३.३.३.३.३ ।
३.३.३. ३.३.३.३. ३.३.३.३.३. ३.३.३.३.३.३ ।
३.३.३. ३.३.३.३.३. ३.३.३.३.३.३. ॥ २००

धैर्यमाहात्म्यलावण्यप्रमुखैस्त्वमुदन्वतः ।
गुणैस्तुल्योसि भेदस्तु वपुषैवेदशेन ते ॥१७८॥

བདན་ དང་ ཆེ་བའི་ བདག་ཉིད་དང་ ।

ལ་བ་ཏུ་ སྐྱེས་པ་ ཡོན་ཏན་གྱིས་ ।

ཁྱོད་དང་ གྱུ་མཆོ་ མཆོངས་ བ་དད་ ।

ཁྱོད་ལུས་ འདི་འདྲ་ ཉིད་ གྱིས་སོ ॥ ༡༧༤

इत्येकव्यतिरेकोयं धर्मेणैकत्र वर्तिना ।

प्रतीतिविषयप्राप्तेर्भेदस्योभयवर्त्तिनः ॥१७६॥

གཅིག་ལ་ གནས་པའི་ཆོས་ གྱིས་ནི་ ।

གཉི་ག་ལ་ གནས་ བ་དད་ དག་ ।

དྲི་གས་པའི་ ལྷ་ལ་དུ་གྱུར་པའི་ སྤྱིར་ ।

འདི་ནི་ གཅིག་གི་ ཁྲི་ག་པ་ཅན་ ॥ ༡༧༥

अभिन्नवेलौ गम्भीरावम्बुराशिर्भवानपि ।

असावज्जनसङ्काशस्त्वन्तु चामीकरच्छविः ॥१८०॥

ཆུ་ཡི་ཕུང་པོ་དག་ དང་ ཁྱོད་ ।

མཆོས་ས་ ལས་ མི་འདྲ་ ཟབ་པ་སྟེ་ ।

འདི་ནི་ མིག་སྒྲན་ དང་ མཚུངས་ལ།
 བྱིད་ནི་ གསེར་གྱི་ མདོག་ཅན་ནོ། ༡༥༠

उभयव्यतिरेकोयमुभयोर्भेदकौ गुणौ ।
 काण्यं पिशंगता चोभौ यत्पृथग्दर्शिताविह ॥१८१॥

གང་གྱིར་ འདིར་ནི་ གཉི་ག་ཡི།
 འབྱེད་བྱེད་ ཡོན་ཏན་ བག་པོ་ དང་།
 སེར་པོ་དག་ནི་ བ་དད་ བསྟན།
 འདི་ནི་ གཉི་གའི་ རྩོག་པ་ཅན་། ༡༥༡

त्वं समुद्रश्च दुर्वारौ महासत्त्वसतेजसौ ।
 इयता युवयोर्भेदः स ज[23a]लात्मा पटुर्भवान् ॥१८२॥

བྱིད་དང་ གྱ་མཚོ་ ཏུ་བླ་རོ།
 མདུ་སྐྱ་ ཏི་ཇ་ བཅས།
 འདི་ཡིས་ བྱིད་ གཉིས་ བ་དད་དེ།
 དེ་ནི་ རུ་བདག་ བྱིད་མཁས་སོ། ༡༥༢

རི་སྒྲིང་གྲུ་མཚོར་ བཅས་པ་ཡི།
 ས་གཞི་ མཐའ་དག་ འཛིན་ མེད་ཀྱང་།
 ལག་འགྲོན་མས་ ཀྱི་ རྩེར་ གྲུར་ ཕྱིར།
 ལྷག་མ་ཅན་ནི་ བྱིད་པས་དམན། ॥ १८४

शब्दोपादानसादृश्यो व्यतिरेकोयमीदृशः ।
 प्रतीयमानसादृश्योप्यस्ति सोनुविधीयते ॥१८६॥

རྒྱ་དག་ འཇུག་པར་ མཚུངས་པ་ཡི།
 རྩོག་པ་ཅན་ནི་ འདི་འདྲ་ཉི།
 རྟོགས་པར་གྲུར་པ་ མཚུངས་པ་ ཡང་།
 ཡོད་པ་ དེ་ནི་ རྩེས་སུ་སྒྲུབ། ॥ १८५

त्वन्मुखद्वुमलं चेति द्वयोरप्यनयोभिदा ।
 कमलं जलसंरोहि त्वन्मुखं त्वदुपाश्रयं ॥१८७॥

བྱིད་ཀྱི་ གཤོང་དང་ པདྲ་ཉི།
 འདི་ གཞིས་ཀྱི་ ནི་ བྱིད་པར་ ཡང་།

པདྨ་ཁུ་ལས་ སྒྲིམ་པ་ དང་ ।

ཁྱིེ་ གཏོང་ ཁྱིེ་ལ་ བཏེན་པ་འོ ॥ ༢༤༧

अभ्रविलासमस्पृष्टमदरागम् मृगोक्षणं ।

इदन्तु नयनद्वंद्वं तव तद्गुणभूषितम् ॥१८८॥

རི་དྲགས་ སྒྲིམ་པ་ སྒྲིམ་ སྒྲིམ་ དང་ ।

སྒྲིམ་པ་འོ་དམར་བས་ རིག་པ་མེད་ ।

ཁྱིེ་གྱི་ སྒྲིམ་ནི་ གཏོང་པ་ འོ་འོ་ ।

ཡོན་དན་ རི་དག་ ཁྱིེ་གྱིས་ བཏེན ॥ ༢༤༨

पूर्वस्मिन्भेदमात्रोक्तिरस्मिन्नाधिक्यदर्श[23b]नं ।

सादृश्यव्यतिरेकश्च पुनरन्यः प्रदर्श्यते ॥१८९॥

སྒྲིམ་པ་ དབྱེ་བ་ཙམ་ རིག་ བཏེན་ ।

འོ་འོ་ནི་ སྒྲིམ་པ་ ཁྱིེ་ བཏེན་ཏོ་ ।

སྒྲིམ་པ་ མཐུངས་པ་འོ་ རིག་པ་ཙན་ ।

གཏོང་དག་ རིག་དྲ་བཏེན་པ་བྱེ ॥ ༢༤༩

त्वन्मुखमपुण्डरीकश्च फुल्ले सुरभिगन्धिनी ।
भ्रमद्भ्रमरमम्भोजं लोलदृष्टि मुखन्तु ते ॥१६०॥

ཁྱེད་ཀྱི་གདོང་དང་བསྐྱ་དཀར་།
རྒྱལ་གྱི་ལྷོ་རྒྱ་བཟང་ལྷན་པ་མེ།
བསྐྱ་ལ་ནི་བྱང་བ་འཁོར་།
ཁྱེད་ཀྱི་གདོང་ལ་མིག་རབ་གཡོ། ॥ १००

चन्द्रोयमम्बरोत्तंसो हंसोयन्तोयभूषणं ।
नभो नक्षत्रमालीदमिदमुत्कुमुदम्पयः ॥१६१॥

ལྷོ་བ་འདི་ནི་མཁའ་ཡི་རྒྱན་།
དང་བ་འདི་ནི་རྒྱ་ཡི་རྒྱན་།
མཁའ་འདི་རྒྱ་སྐར་ཕྱེང་བ་ཅན་།
རྒྱ་འདི་ཀུམ་དང་རྒྱལ་པ་ཅན་ ॥ १०१

प्रतीयमानशैक्लयादिसाम्ययोर्वियदम्भसोः ।
कृतः प्रतीतशुद्धयोश्च भेदोस्मिंश्चन्द्रहंसयोः ॥१६२॥

འདིར་ རི་ རྒྱ་བ་ རང་པ་ དག །
 དཀར་བ་ཉིད་ སོགས་ ཉོགས་པ་ དང་ །
 མཁའ་དང་ རྩ་ རི་དག་པར་ ཡང་ །
 ཉོགས་པར་ མཚུངས་པའི་ དབྱེ་བ་ གུས ༥ ༡༠༢

पूर्वत्र शब्दवत्साम्यमुभयत्रापि भेदकम् ।
 भृङ्गनेत्रादि तुल्यन्तत्सादृशव्यतिरेकता ॥१६३॥

ལྷ་མ་ལ་ རི་ ལྷ་ལྷན་ མཚུངས་ །
 གཉི་ག་ ལ་ ཡང་ ཐ་དད་ དབྱེ །
 བྱང་བ་ མིག་ལ་ སོགས་པ་ མཚུངས་ །
 དེ་ཕྱིར་ མཚུངས་པའི་ ལྷོག་པ་ཅན ༥ ༡༠༣

अरुल्लालोकसंहार्यमवार्यं सूर्यरश्मिभिः ।
 दृष्टिरोधकरं यूनां यौवनप्रभवन्तमः ॥१६४॥

རིན་ཆེན་ ལྷང་བས་མི་འཕྲོག་ ཅིང་ །
 ཉི་མའི་འོད་ཀྱིས་ མི་རྒྱོག་པ་ །

ལང་ཚོ་ ལས་ བྱང་ ན་ རྒྱང་གི།

མུན་པས་ ལྷ་བ་འགོག་པར་བྱེད། ॥ १०८

सजातिव्यतिरेकोयन्तमोजातेरिदन्तमः ।

दृष्टिरोधितया तुल्यं भिन्नमन्यैरदर्शयत् ॥१६५॥

མུན་པའི་རིགས་ལས་ མུན་པ་ འདི།

ལྷ་བ་འགོག་པ་ ཉིད་ ཀྱིས་ མཚུངས།

གཞན་དག་གིས་ ནི་ བྱ་དང་ བཟུན།

འདི་ནི་ རིགས་མཐུན་ལྷོག་པ་ཅན། ॥ १०९

प्रसिद्धहेतुव्यावृत्त्या यत्किञ्चित्कारणान्त[24a]रं ।

यत्र स्वाभाविकत्वं वा *विभाव्यं सा विभावना ॥१६६॥

རབ་དུ་གྲགས་པའི་ རྒྱ་བརྒྱུག་ནས།

གང་ཞིག་ རྒྱ་ གཞན་ རྒྱང་ཟད་དམ།

གང་དུ་ རང་གི་ ངོ་བོ་ ཉིད།

ལྷོན་པ་ དེ་ནི་ ལྷོད་པ་ཅན། ॥ ११०

अपीतक्षीवकादम्बमसंमृष्टामलाम्बरं ।

अप्रसादितसूक्ष्माम्बु जगदासीन्मनोहरम् ॥१६७॥

स'रुद्रस' सु'स'वरि' ॥ १६७ ॥

स'सु'स'द्वि'स'स'वरि' स'रुद्र ।

सु'द्रस'वर' स'सु'स' रु'द्रस'वरि'कु ।

रु'द्रो'वरि' यि'र'रि' रु'द्रो'वर'सु'द्र ॥ १६८ ॥

अनञ्जितासिता दृष्टिभ्रू रनावर्जिता नता ।

अरञ्जितारुणश्चायमधरस्तव सुन्दरि ॥१६८॥

सु'र'स'व'सु'स'वर' ॥ १६८ ॥

स'र'र'वर' स'स'वर' सु'र'स' ॥ १६८ ॥

सु'र' स'व'सु'स'वर' रु'द्रस'वर' ॥ १६८ ॥

स'स'स'स' सु'द्र'गु' स'रु' रु'द्रि' ॥ १६८ ॥

यदपीतादिजन्यं स्यात् क्षीवत्वाद्यन्यहेतुकं ।

अहेतुकञ्च तस्येह विवक्षेत्यविरुद्धता ॥१६९॥

གང་ཕྱིར་ མ་འབྱུངས་ ལ་སྟོགས་ སྟེན་ །
 སྟོན་པ་ཉིད་ སྟོགས་ སྟེན་ཉིད་ །
 སྟེན་མེད་ དག་ཀྱང་ བཟོད་ འདོད་པ་ །
 དེ་ལ་ འདིར་ནི་ འགལ་བ་མེད་ ॥ ༡༩༩

वक्तुं निसर्गसुरभि वपुरव्याजसुन्दरं ।
 अकारणरिपुश्चन्द्रो निर्निमित्तसुदृत्स्मरः ॥२००॥

རང་བཞིན་ སྟེན་ནི་ ཁ་ ཉི་ཞིས་ །
 ཟེལ་མེད་པར་ཡང་ ལུས་པོ་ མཛེས་ །
 སྟེན་མེད་ དག་ཏུ་ གླིང་བ་ དག་ །
 སྟེན་མཚན་མེད་པར་ འདོད་པ་ སྟོགས་ ॥ ༢༠༠

निसर्गादिपदैरत्र हेतुः साक्षान्निवर्तितः ।
 उक्तञ्च सुरभित्वादिफलं तत्सा विभावना ॥२०१॥

རང་བཞིན་གྱི་སྟོགས་ ཆོག་གིས་ འདིར་ །
 སྟེན་ནི་ དངོས་སུ་ རབ་བསྐྱོག་ ཅིང་ །

རི་ཞིས་ ཉིད་ སྒྲིགས་ འབྲས་བུ་ བཟོད་ །

དེ་ཕྱིར་ དེ་ནི་ སྤྲིད་པ་ཅན་ ॥ ༢༠༡

वस्तु किञ्चिदभिप्रेत्य तत्तुल्यस्यान्यवस्तुनः ।

उक्तिसंक्षिप्तरूपत्वात् सा समासोक्तिरिष्यते ॥२०२॥

དངོས་པོ་ འགའ་ལ་ བསམས་བྱས་ནས་ །

དེ་དང་ མཚུངས་པའི་དངོས་པོ་གཞན་ །

བསྐྲུས་པའི་ཚུལ་གྱིས་ བཟོད་བྱེད་པ་ །

དེ་ནི་ བསྐྲུས་པ་ བཟོད་པར་ འདོད་ ॥ ༢༠༢

[24b]पिवन्मधु यथाकामं भ्रमरः फुल्लपङ्कजे ।

अप्यसन्नद्धसौरभ्यं पश्य चुम्बति कुङ्कुलं ॥२०३॥

བྱང་བ་ ཇི་ལྟར་འདོད་པ་བཞིན་ །

པདྨ་ ཀྲིས་ལ་ སྤྲང་ཅི་ འབྲུངས་ །

རི་ཞིས་ ཀྲིས་པ་མ་ཡིན་ ཡང་ །

མེ་དྲག་ཁ་མ་བྱེ་ སྤྱིར་ ལྟོས་ ॥ ༢༠༣

इति प्रौढाङ्गनावद्धरतिलोलस्य रागिणः ।

कस्याश्चिदिह बालायामिच्छावृत्तिर्विभाव्यते ॥२०४॥

ཆགས་ལྷན་ བྱད་མེད་ དར་མ་ལ།

དགའ་བའི་ རྩེ་དགས་ བཅིངས་པ་ དག།

བྱ་མོ་ འགའ་ཞིག་ དག་ལ་ ཡང་།

འདོད་པ་ འཕེལ་བ་ ལྷན་པར་བྱེད་ ॥ २०४

विशेष्यमात्रभिन्नापि तुल्याकारविशेषणा ।

अस्त्यसावपराप्यस्ति भिन्नाभिन्नविशेषणा ॥२०५॥

བྱད་པར་ཅན་ ཅམ་ བ་དད་ ཅིང་།

བྱད་པར་ རྣམ་པ་ མཚུངས་པའང་ ཡོད།

བྱད་པར་ བ་དད་ བ་དད་ མིན།

འདི་ནི་ གཞན་པ་ དག་ ཀྱང་ ཡོད་ ॥ २०५

रूढमूलः फलभरैः पुष्पैर्निशमर्थिनः ।

सान्द्रच्छायो महावृक्षः सायमासादितो मया ॥२०६॥

ཅ་བདྟན་ འབྲས་བུའི་ ཁྲུང་གིས་ བློ་
 སྒྲིང་ནམས་ དྲག་ཏུ་ རྒྱས་པར་བྱེད་ །
 གྲིབ་མ་ སྤྲུམ་པའི་ རྩོན་པ་ཆེ་ །
 འདི་ནི་ བདག་གིས་ ཡང་དག་ ཐོབ་ ॥ ༢༠༩

अनल्पविटपाभोगः फलपुष्पसमृद्धिमान् ।
 सच्छायः स्थैर्यवान्दैवादेव लब्धो मया द्रुमः ॥२०९॥

ཡལ་གའི་ བྱིན་ནི་ མི་རྒྱུང་ཞིང་ །
 མེ་དྲོག་ འབྲས་བུ་ སྤྲུམ་པའི་ཆོགས་ །
 དམ་པའི་ གྲིབ་བསྐལ་ བདྟན་ལྡན་པའི་ །
 གྲིང་འདི་ བདག་གིས་ སྤྲུམ་པས་ རྩོད་ ॥ ༢༡༠

उभयत्र पुमान्कश्चिद्वृक्षत्वेनोपवर्णितः ।
 सर्वे साधारणा धर्माः पूर्वत्रान्यत्र तु द्वयं ॥२०८॥

གཉི་ག་ ལ་ ཡང་ སྤྲུམ་བུ་འགའ་ །
 རྩོན་པ་ཉིད་ གྲིས་ ཉི་བར་བསྐྲུགས་ །

ཆོས་རྣམས་ བསམས་ཅད་ ལྟ་མ་ལ།

བྱུང་མེད་ གཞན་ལ་ རྣམ་པ་ གཉིས། ॥ ३०८

निवृत्तव्यालसंसर्गो निसर्गमधुराशयः ।

अयमम्भोनिधिः कष्टङ्कालेन परिशोष्यते ॥२०६॥

སྤྱལ་ངན་ འགྲོགས་པ་ དང་ བྲལ་ཞིང་།

རང་བཞིན་གྱིས་ ནི་ མངར་བའི་གཞི།

ཀྱེ་མ་ རུ་ ཡི་ གདེར་ འདི་ ནི།

དུས་ཀྱིས་ ཡོངས་སུ་བསྐྱས་པར་འགྱུར། ॥ ३०९

इत्यपूर्वसमासोक्तिः[25a] पूर्वधर्मनिवर्तनात् ।

समुद्रे तत्समानस्य पुंसो व्यावृत्तिसूचने ॥२१०॥

གྲུ་མཚོ་ ལ་ ནི་ དེ་ མཚུངས་པ།

སྐྱེས་བུའི་ རྩོག་པ་ གསལ་བྱེད་ཅིང་།

སྤྲ་མའི་ཆོས་ ནི་ བསྐྱོག་པའི་ ཕྱིར།

འདི་ནི་ སྤྱིན་མེད་ བསྐྱས་པར་ བརྗེད། ॥ ३१०

विवक्षा या विशेषस्य लोकसीमातिवर्त्तिनी ।

असावतिशयोक्तिः स्यादलङ्कारोत्तमा यथा ॥२११॥

सुद-पद- श्रु- री- वहे- र- र- व- ।

र- र- र- र- र- र- र- र- र- र- ।

सु- र- र- र- र- र- र- ।

श्रु- श्रु- र- र- र- र- ॥ २११ ॥

मल्लिकामालभारिण्यः सर्वाङ्गीनार्द्रचन्दनाः ।

क्षोमवत्यो न लक्ष्यन्ते ज्योत्स्नायामभिसारिकाः ॥२१२॥

स- र- र- र- र- र- ।

स- र- र- र- र- र- ।

र- र- र- र- र- ।

स- र- र- र- र- ॥ २१२ ॥

चन्द्रातपस्य बाहुल्यमुक्तमुत्कर्षवत्तथा ।

संशयातिशयादीनां व्यक्त्य किञ्चिन्निदश्यन्ते ॥२१३॥

ལྷ་བའི་ འདྲ་ནི་ ལྷ་ག་པ་ ཉིད།
 བྱད་འཕགས་ལྷན་ བཟོད་ དེ་བཞིན་དུ།
 བྲེ་ཚོམ་ སུལ་བྱང་ ལ་སོགས་ ཀྱང་།
 གསལ་ སྤྱིར་ ཅུང་ཟད་ བསྟན་པར་བྱ། ॥ ३१३

स्तनयोर्जघनस्यापि मध्ये मर्ध्यं प्रिये तव ।
 अस्ति नास्तीति संदेहो न मेद्यापि निवर्त्तते ॥२१४॥

དགའ་མ་ བྱིད་ཀྱི་ རུ་མ་ དང་།
 དཀྱི་ཡི་ བར་ན་ སྐད་པ་ ནི།
 ཡོད་ དང་ མེད་ ཅེས་ བདག་གི་ ནི།
 བྲེ་ཚོམ་ ད་དུང་ ལྷོག་མ་གྱུར། ॥ ३१४

निर्णेतुं मध्यमस्तीति शक्यन्तव नितम्बिनि ।
 अन्यथानुपपत्त्यैव पयोधरभरस्थितेः ॥२१५॥

ནི་དཀྱི་ནི་ བྱིད་ ལ་ ནི།
 སྐད་པ་ ཡོད་ ཅེས་ ཇེས་པར་རུས།

འོ་མ་འཛིན་པའི་བྱུང་བ་གནས་པ།
ནམ་པ་གཞན་དུ་སྤྱིད་མ་ཡིན། ॥ ३१४

अहो विशालम्भूपालभुवनत्रितयोदरं ।
माति मातुमशक्नोपि यशोराशिर्यदत्र ते ॥२१६॥

ཁྱིེད་ཀྱི་གྲགས་པའི་སྤང་པོ་ནི།
དབག་ནས་མིན་ཡང་འདིར་ཤོང་བ།
ས་སྤྱིང་སྤྱིད་པ་གསུམ་གྱི་ནི།
ཁོངས་དག་ཨོམ་གྱིན་དུ་ཡངས། ॥ ३१५

अलंकारान्तराणा[25b]मप्याहुरेकं परायणं ।
वागीशमहितामुक्तिमिमामतिशयाह्वयाम् ॥२१७॥

ངག་གི་དབང་པོས་མཆོད་གྱུར་པ།
སྤྱལ་བྱུང་ནིས་བྱ་བཟོད་པ་འདི།
གྱུན་ནི་གཞན་པ་ནམས་ཀྱི་ཡང་།
གཅིག་ཕུ་དཔུང་གཉིན་ཉིད་དུ་བཟོད། ॥ ३१६

अन्यथैव स्थिता वृत्तिश्चेतनस्येतरस्य वा ।

अन्यथोत्प्रेक्ष्यते यत्र तामुत्प्रेक्षां विदुर्यथा ॥२१८॥

सोमसः पूरः दवाः वासः उवाः प्रेक्षाः गृहः ।

कसः चः वाक्कः दुः वाक्कः चरिः कुलः ।

वाक्कः दुः कसः वाक्कः चः चरिः चः ।

देः देः चः चरिः दुः चरिः दवाः ॥ २१८

मथ्यन्दिनार्कसन्तप्तः सरसीं गाहते गजः ।

मन्ये मार्तण्डगृह्याणि पद्मान्युद्धर्तुमुत्सुकः ॥२१९॥

देः वाक्कः देः कसः वाक्कः चः चरिः ।

वाक्कः चः दवाः देः कसः चरिः कुलः ।

देः कसः प्रेक्षाः वाक्कः चरिः कसः ।

वाक्कः चरिः चरिः चः चरिः कसः कुलः ॥ २१९

स्नातुं पातुं विसान्यतुं करिणो जलगाहनम् ।

तद्वैरनिष्क्रयायेति कविनोत्प्रेक्ष्य वर्ण्यते ॥२२०॥

ཁྱུ་སྐྱོ་དང་བདུང་དང་བད་ཅ་དག །

བཟའ་ཕྱིར་ལག་ལྟན་རྩེ་འཇུག་པ།

དེ་ནི་ཁོ་ལྟན་སྒྲན་ཕྱིར་ཞེས།

སྒྲན་ངག་མཁན་གྱིས་རབ་བདག་ས་བཟོད་ ॥ २२०

कर्णस्य भूषणमिदं मदायतिनिरोधिनः ।

इति कर्णोत्पलं प्रायस्तव दृष्ट्या विलङ्घ्यते ॥२२१॥

འདི་ནི་བདག་གི་རིང་བ་དག །

འགོག་བྱེད་ན་བའི་གྱུན་ཞེས་དེ།

བྱེད་ཀྱི་མིག་གིས་ན་བ་ཡི།

ཞུད་ལ་དག་ལ་འགོངས་པ་འདྲ་ ॥ २२१

अपाङ्गभागवातिन्या दृष्टेरंशुभिरुत्पलं ।

स्पृश्यते वा नचैवन्तु कविनोत्प्रेक्ष्य कथ्यते ॥२२२॥

མིག་རྩེར་ཆར་ནི་ལྷུང་གྱུར་པ།

མིག་གི་འོད་ཀྱིས་ཞུད་ལ་ཡི།

རེག་གས་ མིན་ ཡང་ སྒྲན་ངག་མཁན་ ।
དེ་ལྟར་ རབ་དུ་བདགས་དེ་ བཟོད་ ॥ २२२

लिम्पतीव तमोद्गानि वर्पतीवांजनं नभः ।
इतीदमपि भूयिष्ठमुत्प्रेक्षालक्षणांनितं ॥२२३॥

སྒྲན་པ་ ལུས་ ལ་ འབྲུག་པ་ བཞིན་ ।
མཁའ་ནི་ མིག་སྒྲན་ ཆར་འབབས་ བཞིན་ ।
ཞེས་འདི་ ཡང་ ཇོ་ རབ་ཏོག་གི་ ।
མཚན་ཉིད་ལྡན་པ་ ཤིན་དུ་ མང་ ॥ २२३

केवांचिदुपमाभ्रान्ति[26a]रिवश्रुत्येह जन्यते ।
नोपमानं तिङन्तेनेत्यतिक्रम्याप्तभाषितं ॥२२४॥

འདིར་ནི་ བཞིན་གྱི་སྒྲ་ཡིས་ འགའ་ ।
དེང་ ཡི་ མཐའ་ ཡིས་ དག་ མ་ ཡིན་ ।
ཞེས་པ་ ཡིད་ཆེས་ གསུངས་ འདས་ནས་ ।
དག་ཉིད་དུ་ བྱི་ འབྲུག་པ་ རྟེན་ ॥ २२४

གཡ་དེ་ བྱེད་པ་ དཔེ་ ཡིན་ ན །
 བྱ་ཆོག་ ལ་ འདི་ དབང་བྱལ་ འགྱུར་ །
 རང་གི་ བྱ་ རྒྱུ་ སི་ནུས་པ་ །
 གཞན་གྱི་ ཁྱེས་བྱར་ སི་འགྱུར་རོ ༥ ३३७

यो लिप्यत्यमुना तुल्यं तम इत्यपि शंसतः ।
 अङ्गानीति न सम्यद्धं सोपि मृग्यः समो गुणः ॥२२८॥

གང་གིས་ འབྲུག་པ་ འདི་ དང་ ནི །
 སུན་པ་ མཚུངས་ ཞེས་ རྒྱ་ ན་ ཡང་ །
 ལུས་ལ་ ཞེས་པ་ མ་འབྲེལ་ དེ །
 དེ་ ཡང་ ཡོན་ཏན་ མཚུངས་པ་ བཟུ ༥ ३३८

यथेन्द्रुरिव ते वक्रमिति कान्तिः प्रतीयते ।
 न तथा लिप्यतौ लेपादन्यदत्र प्रतीयते ॥२२९॥

དཔེར་ན་ བྱིད་ གདོང་ རྒྱ་པ་ བཞིན་ །
 ཅེས་པས་ མཛེས་པ་ དོགས་འགྱུར་ དེ །

དེ་བཞིན་ འབྲུག་པ་ འདི་ ལ་ ནི །

འབྲུག་པ་ ལས་ གཞན་ རྟོགས་ ས་ཡིན ། ༢༢༠

तदुपश्लेषणार्थं लिम्पतिद्वान्तकर्तृकः ।

अङ्गकर्मा च पुंसैवमुत्प्रेक्षित इतीष्यते ॥२३०॥

དེ་ཕྱིར་ འབྲུག་པ་ འདི་ ནང་ ནི །

སྐྱུ་པ་ བྱེད་པ་ ལུས་ ཀྱང་ ལས །

ཉེ་བར་སྐྱུར་དོན་ སྐྱེས་བུ་ ཡིས །

དེ་ལྟར་ རབ་བརྟགས་ ཞེས་ འདོད་བྱ ། ༢༢༡

मन्ये श[26b]ङ्के ध्रुवं प्रायो नूनमित्येवमादिभिः ।

उत्प्रेक्षा व्यज्यते शब्दैरिवशब्दोपि तादृशः ॥२३१॥

སྐྱུས་ ནང་ རྟོགས་ ནང་ ཇེས་ ནང་ འདྲ །

སྐྱུ་ནས་ ཞེས་པ་ ལ་སྐྱེས་པ་འདྲི །

སྐྱ་ ཡིས་ རབ་བརྟགས་ གསལ་བར་བྱེད །

བཞིན་ གྱི་ སྐྱ་ ཡང་ དེ་དང་འདྲ ། ༢༢༢

हेतुश्च सूक्ष्मलेशौ च वाचामुत्तमभूषणं ।

कारकज्ञापकौ हेतू तौ च नैकविधौ यथा ॥२३२॥

कुं ५८० घुं ५८० कं ५८० ३ ।

कुं ५८० घुं ५८० कं ५८० ३ ।

कुं ३० घुं ३० कं ३० ३ ।

५८० घुं ५८० कं ५८० ३ ॥ २३३ ॥

अयमान्दोलितप्रौढचन्दनद्रुमपल्लवः ।

उत्पादयति सर्वस्य प्रीतिं मलयमारुतः ॥२३३॥

५८० घुं ५८० कं ५८० ३ ।

५८० घुं ५८० कं ५८० ३ ।

५८० घुं ५८० कं ५८० ३ ।

५८० घुं ५८० कं ५८० ३ ॥ २३३ ॥

प्रीत्युत्पादनयोगस्य रूपस्यात्रोपबृंहणं ।

अलंकारतयोद्दष्टं निवृत्तावपि तत्समं ॥२३४॥

དགའ་བ་ སྐྱེད་བར་ རོས་བ་ ཡི །
 རང་བཞིན་ ཉེ་བར་སྐྱར་བ་ འདི །
 གྱུན་ ཉིད་ ཀྱིས་ བློ་ རབ་བསྐྱར་དེ །
 རྒྱུ་བ་ དག་ ཀྱང་ དེ་དང་སུངས ༥ २३८

चन्दनारण्यमाधूय स्पृष्ट्वा मलयनिर्झरान् ।
 पथिकानामभावाय पवनोयमुपस्थितः ॥२३५॥

ས་ལ་ཡ་ ཡི་ རྒྱ་གྱུན་ ལ །
 རིག་ ཅིང་ ཅ་རྒྱན་ བགས་ བསྐྱེད་ནས །
 རྒྱང་ འདི་ འགྲོན་པོ་ བསམས་ དག་ བློ །
 ཉམས་བར་བྱ་བྱིར་ ཉེ་བར་གནས ༥ २३९

अभावसाधनायालमेवम्भूतो हि मारुतः ।
 विरहज्वरसंभूतमनोज्ञारोचके जने ॥२३६॥

དེ་ལྟར་ གྱུང་བའི་ རྒྱང་ གྱིས་ བློ །
 འབྲུལ་བའི་ རིསས་ ལས་ གྱུང་གྱུར་བ །

སྒྲིབ་ ཡིད་འོང་ ལ་ སྒྲིབ་པ།

ཉམས་པ་ སྒྲིབ་པ་བྱེད་པར་ནུས། ॥ ३३७

निर्वर्त्य च विकाय च हेतुत्वन्तदपेक्षया ।

प्राप्ये तु कर्मणि प्रायः क्रियापेक्षैव हेतुता ॥२३७॥

འགྲུབ་པར་བྱ་ དང་ ཉམས་འགྲུར་ ལ།

དེ་ཉིད་ ལ་ ལྟོས་ སྒྲིབ་དེ།

འཕྲོལ་པའི་ ལས་ ལ་ གལ་ཆེར་ ནི།

བྱ་བ་ ལ་ ལྟོས་ སྒྲིབ་དོ། ॥ ३३८

हेतुनिर्वर्त्तनीयस्य दर्शितः शेषयोर्द्वयोः ।

दत्त्वो[27a]दाहरणद्वन्द्वं ज्ञापको वर्णयिष्यते ॥२३८॥

འགྲུབ་པར་བྱེད་པའི་ སྒྲིབ་ དག་ ནི།

བསྟན་དེ་ ལྟོས་མ་ གཉིས་པོ་ ཡི།

དཔེར་ བཟོད་ གཉིས་ ནི་ བཞེད་བྱས་ནས།

ཤེས་པར་བྱེད་པ་ བསྟན་པར་བྱ། ॥ ३३९

उत्प्रवालान्यरण्यानि वाप्यः संकुलपङ्कजाः ।

चन्द्रः पूर्णश्च कामेन पान्थदृष्टिविषङ्कृतं ॥२३६॥

ལོ་འདབ་གསར་འབྱུངས་ནགས་ཚལ་དང་།

འདབ་བརྒྱ་རབ་དུ་རྒྱས་བའི་ཇིང་།

ཟླ་བ་རྒྱས་བ་འདོད་པ་ཡིས།

འགྲོན་པོ་ལྷ་བའི་དུག་དུ་བྱས། ॥ ३३७

मानयोग्यां करोमीति प्रियस्थाने कृतां सखीम् ।

वाला भ्रूभङ्गजिह्वाक्षी पश्यति स्फुरिताधरं ॥२४०॥

ཁེངས་པ་གོམས་བར་བྱའོ་ཞེས།

གྲོགས་མོ་མཇེའ་བོའི་གནས་བཞེད་ལ།

བུ་མོ་སློན་འབྲོག་མིག་ཡོན་གྱིས།

མུ་ནི་གཡོ་ཞིང་ལྷ་བར་བྱེད། ॥ ३ॣ०

गतोस्तमर्को भातीन्दुर्यान्ति वासाय पक्षिणः ।

इतीदमपि साध्वेव कालावस्थानिवेदने ॥२४१॥

ཉི་མ་ རྒྱུ་གྲུ་ ལྷ་བ་ མཛེས།
 འདབ་ཆགས་ རྣམས་ ཉི་ གནས་སུ་ མཛོང་།
 ཞེས་པ་ འདི་ ཡང་ ཏུས་ ཀྱི་ སྐབས།
 གོ་བར་བྱེད་པ་ ལེགས་པ་ ཉིད། ॥ ३༮

*अवश्यैरिन्दुपादानामसाध्यैश्चन्दनाभिसाम् ।
 देहोष्मभिः सुबोधं ते सखि कामातुरं मनः ॥२४२॥

གོ་གས་མོ་ འདོད་པས་ གཟེར་བའི་ ཡིད།
 ལྷ་བའི་ ཟེར་ ཀྱིས་ མི་ལྷོག་ ཅིང་།
 ཅ་རྒྱན་ རྒྱ་ ཡིས་ མི་བཟོད་པ།
 ལུས་ ཀྱི་ རྩོད་ ཀྱིས་ ལེགས་པར་རྟོགས། ॥ ३༯

इति लक्ष्याः प्रयोगेषु रम्यां ज्ञापकहेतवः ।
 अभावहेतवः केचिद्व्याक्रियन्ते मनोहराः ॥२४३॥

ཞེས་པའི་ སྦྱོར་བ་ རྣམས་ ལ་ ཉི།
 ཡིད་འོང་ ཞེས་བྱེད་ རྒྱ་ དག་ མཆོད།

དངོས་མེད་ ལྷ་ རི་ ཡིད་ འཕྲོག་པ་ །
འགའ་ཞིག་ རབ་དུ་བསྐྱུ་པར་བྱ ༥ ༢༧༢

अनभ्यासेन विद्यानामसंसर्गेण धीमतां ।
अनिग्रहेण चाक्षाणां जाय[27b]ते व्यसनं नृणां ॥२४४॥

རིག་པ་ རྣམས་ རི་ མ་གཤམས་ དང་ །
ཁྲོ་ལྷན་ རྣམས་ དང་ མ་འགྲོགས་ དང་ །
དབང་པོ་ རྣམས་ རི་ མ་བསྐྱམས་པས་ །
མི་ རྣམས་ རབ་དུ་གདུང་བར་ བྱུར ༥ ༢༧༣

गतः कामकथोन्मादो गलितो यौवनज्वरः ।
क्षतो मोहश्च्युता तृष्णा कृतं पुण्याश्रये मनः ॥२४५॥

འདོད་པའི་ གདམ་ གྲིས་ ཁྲོས་པ་ མོང་ །
ལང་ཚོ་ཡི་ རི་ རིམས་ དག་ རྣམས་ །
མོངས་པ་ ཟད་ ཅིང་ སྤེད་པ་ འཕྲོས་ །
བསོད་རྣམས་གནས་ ལ་ ཡིད་ དག་ བྱས ༥ ༢༧༤

वनान्यमूनि न गृहाण्येता नद्यो न योषितः ।

मृगा इमे न दायादास्तन्मे नन्दति मानसं ॥२४६॥

ནགས་ཚལ་ འདི་དག་ ཁྱིམ་ མ་ཡིན།

ཅུ་གྲང་ འདི་དག་ བྱད་མེད་ མིན།

རི་དྲགས་ འདི་དག་ བྱ་ཚ་ མིན།

དེ་ཕྱིར་ བདག་ གི་ ཡིད་དགའ་འོ ॥ ३८६

अत्यन्तमसदार्याणामनालोचितचेष्टितं ।

अतस्तेषां विवर्धन्ते सततं सर्वसंपदः ॥२४७॥

ཤིན་དུ་ མ་བདགས་ སྤྱོད་པ་ བློ།

འཕགས་པ་ རྣམས་ ལ་ ཡིད་ མ་ཡིན།

དེ་ཕྱིར་ དེ་དག་ རྣམས་ ཀྱི་ བློ།

ཕུན་ཚེགས་ བསམ་ཅད་ དྲག་དུ་ འཕྲེལ། ॥ ३८७

उद्यानसहकाराणामनुद्भिन्ना न मञ्जरी ।

देयः पथिकनारीणां सतिलः सलिलाञ्जलिः ॥२४८॥

སྒྲིང་ཚལ་ ས་ན་གྲ་ར་ རྣམས་ ।
 སྒྲི་མ་ ས་འབྲུངས་པ་ མིན་ ན་ ।
 འགྲོན་པོ་ རྣམས་ གྲི་ བྱད་མེད་ བློ་ ।
 དེལ་བཅས་ཁྱོར་ཅུ་ སྒྲིན་བྱར་འགྱུར་ ॥ ༢༨༥

प्रागभावादिरूपस्य हेतुत्वमिह वस्तुनः ।
 भावामावस्वरूपस्य कार्यस्योत्पादनमप्रति ॥२४६॥

ཡོད་ དང་ མེད་པའི་ རང་བཞིན་ གྲི་ ।
 འབྲས་བུ་ སྒྲིང་པ་ དག་ ལ་ འདིར་ ।
 སྒྲིན་མེད་ ལ་སྒྲིགས་ རང་བཞིན་ གྲི་ ।
 དངོས་པོ་ ཡི་ བློ་ སྒྲི་ ཉིད་དོ ॥ ༢༨༦

दूरकार्यस्तत्सहजः कार्यान्तरजस्तथा ।
 अयुक्तयुक्तकारी चेत्यसंख्याश्चित्रहेतवः ॥२५०॥

རིང་འབྲས་ དེ་དང་ལྷན་ཅིག་སྒྲིས་ ।
 དེ་བཞིན་ འབྲས་ ས་ཐག་ སྒྲིས་དང་ ।

རིགས་ མིན་ རིགས་པ་བྱེད་ ཅེས་པ།
 མཚར་བའི་ རྒྱ་ རྣམས་ བྲངས་མེད་དོ། ॥ ३४०

तेमी प्रयोगमार्गेषु गौण[28a]वृत्तिव्यपाश्रयाः ।
 अत्यन्तसुन्दरा दृष्टास्तदुदाहृतयो यथा ॥२५१॥

འདི་ དག་ སྐྱོར་བའི་ ལམ་ རྣམས་ ལ།
 སལ་བའི་ འཇུག་པ་ ལ་ བརྟེན་པ།
 འིན་དུ་ མཛེས་པ་ དག་ མཐོང་སྟེ།
 དེ་ཡི་ དཔེར་བཞིན་ ཇི་ལྟར་ན། ॥ ३४१

त्वदपाङ्गाह्वयं जैत्रमङ्गजाख्यं यदंगने ।
 मुक्तन्तदन्यतस्तेन सोप्यहं मनसि क्षतः ॥२५२॥

ལུས་ཅན་ ཁྱིད་ མིག་རྩུར་ ཅེས་པ།
 རྒྱལ་བྱེད་ ལུས་སྦྱིས་ དག་ གི་ མཚོན།
 བཤ་ དེ་ བཞུན་ ལ་ རབ་འཕངས་པ།
 དེ་ ཡིས་ བདག་ གི་ ཡིད་ཀྱང་ བཅོས། ॥ ३४२

आविर्भवति नारीणां वयः पर्यस्तशैशवं ।
सहैव विविधैः पुंसामङ्गजोन्मादविभ्रमैः ॥२५३॥

श्लेष्वांशुः श्लेष्वांशुः श्लेष्वांशुः श्लेष्वांशुः ।
कृष्णः कृष्णः कृष्णः कृष्णः कृष्णः ।
शुभ्रः शुभ्रः शुभ्रः शुभ्रः शुभ्रः ।
श्लेष्वांशुः कृष्णः कृष्णः कृष्णः ॥ ३४३

पश्चात्पर्यस्य किरणानुदीर्णञ्चन्द्रमण्डलं ।
प्रागेव हरिणाक्षीणामुदीर्णो रागसागरः ॥२५४॥

श्लेष्वांशुः कृष्णः कृष्णः कृष्णः ।
कृष्णः कृष्णः कृष्णः कृष्णः कृष्णः ।
श्लेष्वांशुः कृष्णः कृष्णः कृष्णः ।
श्लेष्वांशुः कृष्णः कृष्णः कृष्णः ॥ ३४८

राज्ञां हस्तारविन्दानि कुम्भलीकुरुते कुतः ।
देव त्वच्चरणद्वन्द्वरागवालातपः स्पृशन् ॥२५५॥

ལྷ་ཅིག་ བྱོད་ཀྱི་ ཞབས་ གཉིས་པོ་ ।
 དམར་བ་ ཉི་ གཞོན་ ལ་ རིག་པས་ ।
 རྒྱལ་པོ་ རྣམས་ ཀྱི་ ལག་པ་ ཡི་ ।
 བདྲ་ རྩམ་པར་བྱེད་པ་ ཅི ॥ ३४४

पाणिपद्मानि भूपानां संकोचयितुमोशते ।
 त्वत्पादनखचन्द्राणामर्चिषः कुन्दनिर्मलाः ॥२५६॥

བྱོད་ ཀྱི་ ཞབས་ སེན་ལྷ་བ་ ཡི་ ।
 འོད་ཟེར་ ཀྱུན་ད་ རི་མེད་ རྣམས་ ।
 ས་སྦྱོང་རྣམས་ཀྱི་ ལག་པ་ ཡི་ ।
 བདྲ་ རྩམ་པར་བྱེད་ ལ་ དབང་ ॥ ३४५

इति हेतुविकल्पस्य दर्शिता गतिरीदृशी ।
 इङ्गिताकारलक्ष्योर्थः सौक्ष्म्यात्सूक्ष्म इति स्मृतः ॥२५७॥

ཞེས་པ་ རྒྱ་ ཡི་ རྣམ་རྟོག་ གི་ ।
 ལྷགས་ བློ་ འདི་འདྲ་ དག་ཏུ་ བཟུན་ ।

ཟུར་དང་ རྣམ་པས་ མཚན་པའི་ དོན །

ཕྱ་ ཕྱིར་ ཕྱ་མོ་ ཞེས་པར་ བཤད ༥ ༣༡༧

कदा नौ[28b]सङ्गमो भावीत्याकीर्णं वक्तुमक्षमः ।

अवेत्य कान्तमबला लीलापद्मं न्यमीलयत् ॥२५८॥

ནས་ ཞིག་ འུ་ཅག་ འགྲོགས་འགུར་ ཞེས །

ཚོགས་སུ་ བཞིད་པ་ མ་བཟེད་པའི །

མཇེའ་བོ་ རིག་ནས་ བྱད་མེད་ ཀྱིས །

ཅེ་ དགའི་ བསྐྱ་ ཟུམ་པར་བྱས ༥ ༣༡༨

पद्मसंमीलनादत्र सूचितो निशि सङ्गमः ।

आश्वासयितुमिच्छन्त्या प्रियमंगजपीडितम् ॥२५९॥

ལུས་སྦྱིས་ དག་ གིས་ གཟིར་བ་ ཡི །

མཇེའ་བོ་ དབྱགས་ དབྱང་ འདོད་པ་ ཡིས །

བསྐྱ་ ཟུམ་པར་བྱས་པ་ ལས །

འདིར་ ཅི་ མཚན་མོ་ འགྲོགས་པར་ བཟུན ༥ ༣༡༩

त्वदर्पितदृशस्तस्या गीतगोष्ठ्यामवर्धत ।

उद्दामरागतरला च्छाया कापि मुखाम्बुजे ॥२६०॥

ग्रां यीं सद्गुणं सारं त्रिंशं लं शिवा ।

गणनं वसं गदिनं गीं कुश्लेसं देव ।

कणसं वं नवरं विदं कृषं वं यी ।

सहसं वं उं यदं सुदं वरं गुर ॥ २६०

इत्यनुद्भिन्नरूपत्वाद्रत्युत्सवमनोरथः ।

अनुलङ्घ्यैव सूक्ष्मत्वमभृदत्राप्यवस्थितः ॥२६१॥

नदिनं यदं रदं वलिं सं वहेनं वर ।

नगां वदिं नगां सुं नदिनं वं नगा ।

देसं वरं गणसं वं उं गुरं व ।

सुं सौं उं यदं वसं ग्रां सं यीं ॥ २६१

लेशो लेशेन निर्भिन्नवस्तुरूपनिगूहनं ।

उदाहरण एवास्य रूपमाविर्भविष्यति ॥२६२॥

ཚ་ནི་ཚ་ ཡིས་ དངོས་པོ་ ཡི །
 རང་བཞིན་ ཇིས་པར་གསལ་བ་སྟེན །
 དཔེར་བཅོམ་ཉིད་ ཀྱིས་ འདི་ ཡི་ ནི །
 རང་བཞིན་ ཇིས་པར་གསལ་བར་བྱ ༥ ༢༩༢

राजकन्यानुरक्तं मां रोमोद्धेदेन रक्षकाः ।
 अवगच्छेयुरा ज्ञातमहो शीतानिलं वनम् ॥२६३॥

གྲུ་ལ་པོ་འདི་ བྱ་མོ་ ལ་ ཚགས་ བདག །
 སྤྱུ་ལོང་ གྲུས་པ་ སྤྱུང་པ་པོས །
 རིག་པར་གྱུར་ལ་ ཀྱི་མ་ ཚལ །
 བསིལ་བའི་སྤྱུང་ལྷན་ ཡིན་པར་ ཤེས ༥ ༢༩༣

आनन्दाश्रु प्रवृत्तं मे कथं दृष्ट्वैव कन्यकाम् ।
 अक्षि [29a] मे पुष्परजसा वातोद्धूतेन दूषितं ॥२६४॥

ཅི་ལྟར་ བྱ་མོ་ མཐོང་ ཉིད་ ནི །
 བདག་ ལ་ དགའ་བའི་ མཆི་ མ་བྱུང་ །

རྒྱུང་གིས་གཙུག་པའི་མེད་ཀྱི་གི།
 རྒྱུ་གིས་བདག་མིག་སྤྲོ་ཕྱང་ངོ་ ॥ ༢༩༮

इत्येवमादौ स्थानेऽयमलंकारोतिशोभते ।
 लेशमेकेचिदुन्निन्दां स्तुतिं वा लेशतः कृतां ॥ २६५ ॥

ཞེས་པ་ལ་སོགས་སྐབས་སུ་ནི།
 གྱུན་འདི་ཤིན་ཏུ་མཛོས་པ་ཡིན།
 ཁ་ཅིག་ཆ་ལས་སྤྲོ་པ་འཇམ།
 བསྐྱོད་པ་བྱས་པ་ཆ་ཞེས་བཛོད་ ॥ ༢༩༩

युवेव गुणवान् राजा योग्यस्ते पतिरुर्जितः ।
 रणोत्सवे मनः सक्तं यस्य कामोत्सवादपि ॥ २६६ ॥

གང་ཡིད་གཡུལ་གྱི་དགའ་སྤྱོད་ལ།
 འདོད་པའི་དགའ་སྤྱོད་པས་ཀྱང་ཆགས།
 གཟི་ལྡན་ལང་ཆོ་ཡོན་ཏན་ཅན།
 གྱུ་འདི་ཁྱོད་གྱི་བདག་པོར་འཇམ ॥ ༣༠༠

वीर्योत्कण्ठस्तुतिर्निन्दैवास्मिन् भावनिवृत्तये ।
कन्यायाः कल्पते भोगान्निर्विविक्षोर्निरन्नरान् ॥

བཅོམ་འགྲུས་ ཁུད་འཕགས་ བསྟོད་པ་ འདིར་ ।
སྒྲུང་པ་ ཉིད་ནི་ ལོངས་སྟོད་ལ་ ।
སྐྱུན་དུ་ སྟོད་འདོད་ བུ་མོ་ཡི་ ।
བསམས་པ་ དག་ནི་ བརྗེས་པར་ནུས་ ॥ २५०

चपलो निदंयश्चासौ जनः किन्तेन मे सखि ।
आगःप्रमार्जनायैव चाटवो येन शिक्षिताः ॥ २६८

གཞོན་པ་ རབ་ གཞིལ་ ཉིད་ ཀྱི་ བྱིར་ ।
གང་གིས་ སྐྱུན་པར་ སྒྲུང་པ་ བསྐྱབས་ ।
སྐྱེ་བོ་ འདི་ནི་ བཅོམ་སྟོད་ གཡོ་ ।
གྲོགས་མོ་ རི་ཡིས་ བདག་ལ་ ཅི་ ॥ २५१

दोषाभासो गुणः कोपि दर्शितश्चादुकारिता ।
मानं सखीजनोद्दिष्टं कर्तुं रागादशक्त्या ॥ २६९ ॥

སྒྲི་བོ་ གྲོགས་མོས་ རབ་བཟུན་ ཁེངས། །
 རྒྱལ་ས་ སྒྲིར་ སྒྲེད་པ་ མ་ནས་ནས། །
 སྒྲིན་ ལྟར་ སྒྲུང་ཡང་ ཡོན་ཏན་ གང་། །
 སྒྲིན་པར་ སྒྲུ་བ་ ཉིད་ ཀྱང་ བཟུན། ॥ २७०

उद्दिष्टानां पदार्थानामनुदेशो यथाक्रमं ।
 यथासंख्यमिति प्रोक्तं संख्यानङ्कम इत्यपि ॥ २७०

དངོས་པོ་ རབ་དུ་བཟུན་པ་ རྣམས། །
 རིས་པ་ བཞིན་དུ་ རྒྲེས་སྒྲིན་པ། །
 གྲུངས་ དང་ རིས་པ་ བཞིན་ ཅེས་པ། །
 གྲུངས་ བཞིན་ ཅེས་པར་ རབ་དུ་བཟུན། ॥ २७०

[29b] ध्रुवन्ते चोरिता तन्वि स्मितेक्षणमुखद्युतिः ।
 स्नातुमग्भःप्रविष्टायाः कुमुदोत्पलपङ्कजैः ॥ २७१ ॥

བྱུས་ལ་ རུར་ནི་ རབ་བྱུགས་ས། །
 སྒྲིད་ཀྱི་ རྒྲུངས་ མིག་གཏོང་ མཛོས་ནི། །

ཀྱ་མུན་ ལྷན་ལ་ བསྐྱ་ལས།
བཀྱས་པར་ ངེས་སོ་ གཟུགས་ཅན་ས། ॥ ༣༧༢

प्रेयः प्रियतराख्यानं रसवत् रसपेशलं ।
ऊर्जस्वि रूढाहंकारं युक्तोत्कर्षं च तन्नयं ॥ २७२ ॥

དགའ་བ་ མཆོག་ཏུ་ དགའ་བར་ བཟོད།
ཉམས་ལྡན་ ཡིད་འོང་ ཉམས་དང་ལྡན།
གཟི་བཟིད་ ང་ཀྱལ་ སྐྱེས་པ་ལྟེ།
དེ་གསུམ་ བྱད་འཕགས་དག་དང་ལྡན། ॥ ༣༧༣

अद्य या मम गोविन्द जाता त्वयि गृहागते ।
कालेनेषा भवेत्प्रीतिस्तवैवागमनात्पुनः ॥ २७३ ॥

གོ་བོད་ བྱིད་ བྱིས་ འོངས་པ།
དེང་ བདག་ དགའ་བ་ སྐྱེས་པ་ གང་།
དགའ་བ་ འདི་ནི་ སྐར་ཡང་ བྱིད།
དུས་ཀྱིས་ འོངས་ན་ འགྱུང་བར་ འགྱུར། ॥ ༣༧༤

མངོན་སྲུང་ བྱས་པའི་ ལྷ་ལ་ནི །
 གྱལ་པོ་ དགའ་བའི་གོ་རྒྱུ་ ཡིས།
 དགའ་བ་ རབ་དུ་གསལ་བྱས་ གང་ །
 དེ་ ཡང་ དགའ་བར་ རྗེས་རྟོགས་བྱ ༥ ༢༧༩

मृतेति प्रेत्य संगंतुं यथा मे मरणम्मत्तम् ।
 सैवावन्ती मया[30a]लब्धा कथमत्रैव जन्मनि ॥१७७॥

ཤི་བ་ རྗེས་བྱ་ ག་རོལ་དུ །
 གང་ དང་ འགྲོགས་སྤྱིར་ བདག་ འཆི་འདོད།
 ལ་བཞི་དེ་ བདག་ གིས་ ནི །
 རྩེ་ འདི་ཉིད་ལ་ རི་ལྟར་ ཐོབ ༥ ༢༨༠

प्राक्प्रोतिर्दर्शिता सेयं रतिः शृंगारतां गता ।
 रूपबाहुल्ययोगेन तदिदं रसवद्वचः ॥२७८॥

དགའ་བ་ ཉིད་དུ་ ལྟར་ བསྟན་ འདིར།
 དགའ་བ་ རྩེག་པ་ ཉིད་ གྱུར་པའི།

རང་བཞིན་ གྲུས་དང་ལྡན་པས་ན །
 འདི་ནི་ ཉམས་དང་ལྡན་པའི་ ཆོག ༥ ༣༧

निगृह्य केशोष्वाकृष्टा कृष्णा येनाग्रतो मम ।
 सोयं दुःशासनः पापो लब्धः किं जीवति क्षणं ॥२७६॥

བཀང་གིས་ ཉག་མོ་ བདག་ མདུན་ནས །
 སྒྲན་ས་ བཟུང་ཏེ་ དྲངས་གུར་པ །
 བཟུན་དཀར་ སྒྲིག་ཅན་ ཐོབ་པ་ འདི །
 སྒྲན་ཅིག་ འཆོ་བར་ གུར་རས་ ཅི ༥ ༣༨

इत्यारुह्य परां कोटीं क्रोधो रौद्रात्मतां गतः
 भीमस्य पश्यतः शत्रुमित्येतद् रसवद्वचः ॥२८०॥

ཅས་པ་ འཛིགས་ སྒྲེ་ དགྲ་དག་ལ །
 ལྷ་བའི་ ཁྲོ་བ་ མཆོག་གི་ མཐར་ །
 འཛིགས་པ་ དག་པོའི་བདག་ཉིད་ གུར །
 འདི་ ནི་ རོ་དང་ལྡན་པའི་ ཆོག ༥ ༣༩

अजित्वा सार्णवामुर्वीमनिष्ठा विविधैर्मखैः ।
अदत्त्वा चार्थमर्थिभ्यो भवेयं पार्थिवः कथम् ॥२८१॥

सर्केरः वउसः सःलः सःक्रुलः बैरः ।
कसःसरः सकेरःकःसु सःसुसःलः ।
सुँरः लः केरःकससः सःसुँरःवरः ।
सःसुँरःदुः वरनः ईःकुरःअगुरः ॥ २८१

इत्युत्साहः प्रकृष्टात्मा तिष्ठन्वीररसात्मना ।
रसत्त्ववङ्किरामासां समर्थयितुमीश्वरः ॥२८२॥

उसःवः सुँवः सुँरःअधनः वरनः ।
दवअःवैरः कससःसुँरः वरनःकुरः वरनः ।
कससःवरः कुरःदुः कुरःवः लः ।
केरः अरःदवःकुरः दवःवः वरनः ॥ २८२

यस्याः कुसुमशय्यापि कोमलाङ्गया रुजाकरो ।
साधिशेते कथं देवी हुताशनवतीं चिताम् ॥ २८३ ॥

ལུས་འཇམ་གང་ལ་བརྟེན་པའི།
 མལ་ལྷན་དག་ཀྱང་རྩལ་བྱེད་མ།
 ལྷ་མོ་དེ་ནི་རོ་ཁང་དག།
 སྤྱི་ག་ཟ་ལྷན་པར་ཇི་ལྟར་ཉལ། ॥ १८३

इति कारुण्यमुद्रिक्तमलं [30b] कारतया स्मृतम् ।
 तथा परेपि वीभत्सहास्याद्भुतभयानकाः ॥ १८४ ॥

ཅེས་པ་སྤྱིང་ཇི་སྤྱིས་པ་ཡི།
 སྤྱིན་ཉིད་དུ་ནི་རབ་དུ་བཤད།
 དེ་བཞིན་གཞན་ཡང་མི་སྤྱིག་དང་།
 བཞད་གད་མིད་བྱང་འཇིགས་རུང་ངོ་ ॥ १८ॣ

पायं पायं तवारीणां शोणितं करसंपुटैः ।
 कौणपाः सह नृत्यन्ति कवन्धैरन्त्रभूषणाः ॥ १८५ ॥

སྤྱི་མས་བསྤྱིན་པའི་སྤྱིན་པོ་ནམས།
 མགོ་མེད་རོ་དང་ལྷན་ཅིག་དུ།

ལག་པ་ སྤར་བས་ ཁྱོད་ དགའི་ ཁྱུང་ །
འབྲུང་ཞིང་ འབྲུང་ཞིང་ གར་བྱེད་དོ ॥ ༢༤༥

इदममृगमालाया लग्नं स्तनतटे तव ।
छाद्यतामुत्तरीयेण नवन्नखपदं सखि ॥ २८६ ॥

གྲོགས་མོ་ མེ་དོག་ མ་རྒྱུངས་མ་ །
ཁྱོད་ཀྱི་ རུ་མའི་ ངོས་ལ་ནི་ །
སེན་རྩེས་ སར་བ་ ཆགས་བ་ འདི་ །
སྤྱོད་གཡོགས་ ཀྱིས་ ནི་ སྒྲིབ་བར་མཛོད་ ། ༢༤༦

अंशुकानि प्रवालानि पुष्पं हारादिभूषणं ।
शाखाश्च मन्दिराण्येषां चित्रन्नन्दनशाखिनां ॥ २८७ ॥

དགའ་ཚལ་ སྒྲོན་བ་ འདི་རྣམས་ ཀྱི་ །
འདབ་མ་ གསར་བ་ གོས་ བཟང་ དང་ །
མེ་དོག་ དོ་ཤལ་ ལ་ སོགས་ཅན་ །
ཡལ་འདབ་ ཁང་བར་གྱུར་བ་ མཚར་ ॥ ༢༤༧



इदं मधोनः कुलिशं धारासंनिहितानलं ।

स्मरणं यस्य दैत्यस्त्रीगर्भपाताय कल्पते ॥ २८८ ॥

ཕེ་མོ་ དག་ལ་ མེ་གནས་པ།

བརྒྱ་ཕྱིན་གྱི་ ཉི་ རྗེ་ གང་ །

འདི་ནི་ སྒྲ་ལྷ་མོ་གྱི།

ལྷན་མེད་ མངལ་ རི་ རྒྱང་པར་བྱེད ༥ ༣༤༤

वाच्यस्याग्राम्यता योनिर्माधुर्ये दशितो रसः ।

इह त्वष्टरसायन्ता रसवन्ता स्मृता गिरां ॥ २८६ ॥

ལྷན་པ་ བྲོང་པ་ ཉིད་མིན་ རྩེས། །

བརྗེད་བྱ་ཡི་ནི་ ཉམས་ དག་ བཟུན།

འདིར་ནི་ ཉམས་ བསྐྱད་ དབང་བྱས་ནི །

ཆོག་རྣམས་ ཉམས་དང་ལྷན་པར་ བཤད ༥ ༣༥༠

अपक्ताहमस्मीति हृदि ते मा स्म भूद्वयम् ।

विमुखेषु न मे खङ्गः प्रहर्तुं जातु वाञ्छति ॥ २६० ॥

བདག་ནི་ གནོད་པ་བྱེད་པ་ ཞེས།
 བྱོད་ཀྱི་ སྒྲིང་ལ་ འཛིགས་ མ་བྱུང་།
 བདག་གི་ རལ་གྱི་ཕྱིར་ ཕྱོགས་ནམས།
 རྣམ་ཡང་ འཛེམས་པར་ འདོད་ མ་ཡིན། ॥ २९०

[31a] इति मुक्तः परो युद्धे निरुद्धो दर्पशालिना ।
 पुंसा केनापि तज्ज्ञयमूर्जस्वीत्येवमादिकं ॥ २९१ ॥

ཞེས་པ་ སྒྲིས་བྱ་ རྒྱུགས་ལྡན་ འགས།
 བཤུལ་དུ་ བཞན་ནི་ བཀག་བྱས་ནས།
 གདོང་བ་ དེ་ལྟ་བུ་ ལ་སོགས།
 བཞི་བཞིན་ལྡན་པར་ ཤེས་པར་བྱ། ॥ २९१

अर्थमिष्टमनाख्याय साक्षात्तस्यैव सिद्धये ।
 यत्प्रकारान्तराख्यानं पर्यायोक्तन्तदिष्यते ॥ २९२ ॥

འདོད་དོན་ དངོས་སུ་ མ་བཞིན་པར།
 དེ་ཉིད་ འགྲུབ་པར་བྱ་བའི་ ཕྱིར།



རྣམ་པ་ གཞན་དག་ བཟོད་པ་ གང་།

དེ་ནི་ རྣམ་གྲངས་ བརྗེད་པར་ འདོད ॥ ༢༧

दशत्यसौ परभृतः सहकारस्य मञ्जरोम् ।

तमहं वारयिष्यामि शुवाभ्यां स्वैरमास्यताम् ॥ २६३ ॥

ས་དྭ་ཀ་པའི་ ཧྲེ་ས་རྣམས། །

གཞན་གྱིས་གསེལ་ འདིས་ ཟ་བར་བྱེད།

དེ་ནི་ བདག་གིས་ བརྒྱུག་པར་བཤི།

ཁྱེད་གཉིས་དལ་གྱིས་འདུག་པར་མཛོད་॥ ༩༧༩

संगमय्य सखीं यूना संकेते तद्रतोत्सवम् ।

निर्वर्त्तयितुमिच्छन्त्या कयाप्यपसृतं ततः ॥ २६४ ॥

ཤོགས་མེ་ རྩེས་པན་ པན་བུས་ནས།

དེ་དག་འདུས་པར་ དགའ་བ་ཡི།

དགའ་ཕྱོད་ ལྷུང་དུ་ གཞུག་ འདོད་པས །

འགའ་ཞིག་ རེ་ནས་ སོང་བར་གྱར ༥ ༥༧

किंविदारभमाणस्य कार्यं दैवबलात्पुनः ।

तत्साधनसमापत्तिर्या तदाहुः समाहितम् ॥ २६५ ॥

བྱ་བ་ འགའ་ཞིག་ ཚུམ་པ་ལ།

སྐལ་བ་ཡི་ རི་ སྟོབས་ལས་ ཀྱང་།

དེ་ཡི་ སྐབ་བྱེད་ སྟན་ཚུགས་ གང་།

དེ་ རི་ ཀྱན་དུ་པན་པར་བཟློད་ ॥ २०४

मानन्तस्या निराकर्तुं पादयोर्मै नमस्यतः ।

उपकाराय दिष्ट्येदमुदीर्णं घनगर्जितं ॥ २६६ ॥

ཁེངས་པ་ གཞོམ་གྱིར་ དེ་ཡི་ རི།

ཀྱང་པ་དག་ལ་ སྟག་འཚལ་བ།

བདག་ལ་ པན་གྱིར་ སྐལ་བ་ཡི།

འབྲུག་གི་ སྐྱ་ འདི་ གྲགས་པར་ བྱུར་ ॥ २०५

आशयस्य विभूतेर्वा यन्महत्त्वमनुत्त[3।b]रं ।

उदात्तं नाम तम्प्राहुरलंकारं मनीषिणः ॥ २६७ ॥

བསམ་པ་ འམ་ རི་ འབྱོར་པ་ ཡི།

ཆེན་པོ་ ཉིད་རི་ གླ་མེད་ བཅང་།

དེ་ རི་ རྒྱ་ཆེ་ ཞེས་པ་ཡི།

རྒྱན་དུ་ མཁས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ བཟློང་ ॥ ༢༠༧

गुरोः शासनमत्येतुं न शशाक स राघवः ।

यो रावणशिरच्छेदकार्यभारेप्यविक्रवः ॥ २६८ ॥

རྒྱ་བ་ཆ་ཡི་ མགོ་གཅོད་པའི།

བྱ་བའི་ ཁུར་ ཡང་ བཟོད་པ་ཡི།

ར་གླུ་བྱ་ དེས་ གླ་མ་ཡི།

བཀའ་ལས་ འདྲ་བར་ རྣམས་མ་ བྱུར་ ॥ ༢༠༨

रत्नभित्तिषु संक्रान्तैः प्रतिबिम्बशतैर्वृतः ।

ज्ञातो लङ्केश्वरः कृच्छ्रादाञ्जनेयेन तरुवतः ॥ २६९ ॥

རིན་ཆེན་ རིག་པ་ ལ་ འཕྲོས་པའི།

གཟུགས་བརྒྱན་ བརྒྱ་ཡིས་ བསྐྱོར་བྱུར་པ།

ལྟོ་འོ་དབང་ཕྱུག་ རེ་ ཁོ་ན །

ཨ་ཁྱ་ན་ བྱས་ དྲུག་པས་ ཤེས ༥ ༢༠༠

पूर्वत्राशयमाहात्म्यमत्राभ्युदयगौरवं ।

सुव्यञ्जितमतिव्यक्तमुदात्तद्वयमप्यदः ॥ ३००

ཕྱ་མར་ བསམ་པའི་ བདག་ཉིད་ཆེ །

འདིར་ནི་ མངོན་པར་ འབྱོར་པས་ བརྗོད་ །

གྱུ་ཆེ་ གཉིས་པོ་ འདི་དག་ ཀྱང་ །

རབ་དུ་ གསལ་བར་ མཆོན་པ་ ཡིན ༥ ༣༠༠

अपहृतिरपहृत्य किञ्चिदन्यार्थदर्शनं ।

न पञ्चेषुः स्मरस्तस्य सहस्रं पत्रिणामिति ॥ ३०१ ॥

བསྟོན་དོར་དག་ བྱི་ བསྟོན་བྱས་ནས །

དོན་གཞན་ ཅུང་ཟད་ བརྗོད་པ་ ལྟེ །

འདོད་པ་དག་ནི་ མདའ་ལྔ་པ །

མ་ཡིན་ སྒྲི་ལྔ་ སྒྲིང་ཕྱག་ ཡིད ༥ ༣༠༡

चन्दनं चन्द्रिका मन्दो गन्धवाही च दक्षिणः ।
सेयमग्निमयी सृष्टिश्शीता किल परान्प्रति ॥३०२॥

ཅན་ རྒྱ་འོད་ དལ་བུ་ ཡི །
མྱོ་ ཕྱོགས་ ཅི་ཡི་ བཞེན་པ་ འདི །
མེ་ཡི་ རང་བཞེན་ སྒྲོ་བ་ མྱེ །
གཞན་གྱི་ རོང་ནི་ བསིལ་ ཞེས་ བྲགས་ ॥ ३०२

शैशिर्यमभ्युपेत्यैवं परेष्व्वात्मनि कामिना ।
औष्णप्रदर्शनात्तस्य संपा विषयनिहृतिः ॥३०३॥

འོད་ལྡན་གྱིས་ བྱི་ གཞན་ ལ་ རེ །
བསིལ་བར་ ཁས་སྒྲངས་ བདག་ཉིད་ལ །
ཚ་བ་ ཉིད་དུ་ རབ་བསྐྱན་ ཕྱིར །
འདི་ནི་ ཡུལ་ལ་ བསྐྱོན་དོར་རོ ॥ ३०३

अमृतस्यन्दि[32a]किरणश्चन्द्रमा नाम नो मतः ।
अन्य एवायमर्थात्मा विषनिष्यन्दिदीधितिः ॥३०४॥

བདུད་ཅི་ ཟག་པའི་ འོད་ཟེར་ཅན།
 རྒྱ་བ་ ཞེས་པར་ བདག་ཅག་ འདོད།
 དོན་གྱི་ བདག་ཉིད་ འདི་ནི་ གཞན།
 དུག་ཟག་ ཟེ་དང་ ལྷན་པ་ ཉིད། ॥ ३०८

इति चन्द्रत्वमेवेन्दोरनिवर्त्यार्थान्तरात्मना ।
 उक्तं स्मरात्तनेत्येषा स्वरूपापह्नुतिर्मता ॥३०५॥

ཅེས་པ་ རྒྱ་བའི་ རྒྱ་ དངོས་ ཉིད།
 བརྒྱུག་ནས་ དོན་ གཞན་ བདག་ཉིད་ ནི།
 འདོད་པས་ གཟིར་བ་ བརྒྱུད་པའི་ སྤྱིར།
 འདི་ནི་ རང་བཞིན་ བསྟོན་དོར་ འདོད། ॥ ३०५

उपमापह्नुतिः पूर्वमुपमास्वेव दशिता ।
 इत्यपह्नुतिभेदानां लक्ष्यो लक्ष्येषु विस्तरः ॥३०६॥

དབེ་ཡི་ བསྟོན་དོར་ སྤྱིར་ ཉིད་དུ།
 དབེ་ནས་ས་ ལ་ ནི་ རབ་བསྟན་དོ།

འདི་ཡིས་ བསྟོན་ རོར་ དབྱེ་བ་ རྣམས།
མཆོན་བྱ་དག་ ལ་ རྒྱ་ཆེར་ མཆོན་ ॥ ༣༠༩

श्लिष्टमिष्टमनेकार्थमेकरूपान्वितं वचः ।
तदभिन्नपदं भिन्नपदप्रायमिति द्विधा ॥३०७॥

སྐར་བ་ གཟུགས་གཅིག་ལྟ་བུའི་ ཆོག་ ।
དུ་མའི་ དོན་ཅན་ ཉིད་དུ་ འདོད་ ।
དེ་ཆོག་ བྲ་དད་ མིན་པ་ དང་ ।
བྲ་དད་ ཆོག་ འདྲ་ རྣམ་པ་གཉིས་ ॥ ༣༡༠

असावुदयमारूढः कान्तिमान् रक्तमण्डलः ।
राजा हरति लोकस्य हृदयं मृदुभिः करैः ॥३०८॥

ཤུ་ད་ཡ་ གནས་ མཛེས་པ་ཅན་ ।
དཀྱིལ་འཁོར་ ལ་ ཆགས་ རྒྱལ་པོ་ འདི་ ।
མི་དུ་ཀ་རས་ འཛིག་དེན་ གྱི་ ।
ཡིད་ནི་ རབ་དུ་འཕྲོག་པར་བྱེད་ ॥ ༣༡༡

दोषाकरेण सम्यङ्जनक्षत्रपथवर्तिना ।

राज्ञा प्रदोषो मामित्थमप्रियं किञ्च बाधते ॥३०६॥

सु'ल्ल' ल' ल' र' व' व' व' व' ।

स'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल' ।

सु'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल' ।

र' व' व' व' व' व' व' व' व' ॥ ३०७

उपमारूपकाक्षे[32b]पव्यतिरेकादिगोचराः ।

प्रागेव दर्शिताः श्लेषा दृश्यन्ते केचनापरे ॥३१०॥

र' व' र' व' व' व' व' व' व' ।

सु'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल' ।

सु'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल' ।

र' व' र' व' र' व' र' व' र' व' ॥ ३१०

अस्त्यभिन्नक्रियः कश्चिद्विरुद्धक्रियोपरः ।

विरुद्धकर्मा वास्त्यन्यः श्लेषो नियमवानपि ॥३११॥

འགའ་ཞིག་ བྱ་བ་ བླ་དད་མིན།
 གཞན་པ་ བྱ་བ་ འགའ་མིན་ ཡོད།
 འགའ་བའི་ ལས་ཅན་དག་ ཀྱང་ གཞན།
 སྐར་བ་ ཇིས་པ་ཅན་ ཡང་ ཡོད། ॥ ३११

नियमाक्षेपरूपोक्तिरविरोधी विरोध्यपि ।
 तेषां निदर्शनेष्वेव रूपमाविर्भविष्यति ॥३१२॥

ཇིས་པ་ འགོག་པ་ གཞུགས་ བཟོད་ དང་།
 འགའ་མེད་ འགའ་བ་ཅན་ ཡང་སྟེ།
 དེ་དག་ རྣམས་ཀྱི་ རང་བཞིན་ ཡང་།
 དཔེ་བར་ཟོད་ དག་ལ་ གསལ་བར་འགྱུར། ॥ ३१२

वक्रस्वभावमधुराः शंसन्त्यो रागमुल्लवणम् ।
 दृशो दूत्यश्च कर्षन्ति कान्ताभिः प्रेषिताः प्रियान् ॥३१३॥

འབྲིག་ཅིང་ ཡིད་འོང་ རང་བཞིན་ཅན།
 རྒྱགས་པ་ གསལ་བ་སྟོན་པ་བྱེད་མ།



མཛེས་མས་ བསྐྱལ་བའི་ མེག་ དང་ ཉི །

པོ་ཉ་མོས་ ཀྱང་ མཇེལ་བོ་ འགྲུགས། ॥ ༢༢

मधुरा रागवर्धिन्यः कोमलाः कोकिलागिरः ।

आकर्ष्यन्ते मदकलाः शिल्प्यन्ते चासितेक्षणाः ॥३१४॥

ཡིད་འོང་ ཆགས་པ་འཕེལ་བར་བྱེད།

འཇམ་ཞེང་ མེས་པའི་ བཀའ་སློན་ཅན།

ཁུ་བུལ་གླ་ནི་ བློས་གུར་དེ།

དཀར་མིན་མེག་ཅན་དག་ལ་ རུའུ་ ॥ ༣༥

रागमादर्शयन्नेष वारुणोयोगवर्धितः ।

पराभवति घर्मांशुरङ्गजस्तु विजृम्भते ॥३१५॥

ཅ་ས་ རྟ་ ལྟ་ རྟེན་བ་ཡི།

དམར་བ་ རབ་ཏུ་ཕྱིན་བྱེད་ ཅིང་ །

ཚ་ཟེར་ཅན་ འདི་ རྒྱ་གྲུང་དེ།

ལུས་སྒྲེས་ དག་ ཉི་ རྣམ་པར་གྱུས་ ॥ ༢༧

निस्त्रिशत्वमसावेव धनुष्येवास्य वक्रता ।
शरेष्वेव नरेन्द्रस्य [33a] मार्गणत्वञ्च वर्त्तते ॥३१६॥

रलः श्रुतिः लः किं स्त्रीः ॥
गङ्गा श्रुतिः लः किं अस्ति गः श्रुतिः ।
मिः दवः अदिः यीः सुक्ताः ॥
मदः कृष्णः श्रुतिः लः गङ्गाः वः यीः ॥ ३१७

पद्मानामेव दण्डेषु कण्टकस्त्वयि रक्षति ।
अथवा दृश्यते रागिमिथुनालिंगनेष्वपि ॥३१७॥

श्रुतिः श्रुतिः वसुन्धराः लः कुरुः मः किं ।
वसुन्धराः यः वः श्रुतिः लः ॥
रेङ्गः गुरुः कृष्णः उरुः अस्ति गः वः ॥
असुन्दः वः गुरुः वः कृष्णः लः ॥ ३१८

महीभृद्भूरिकटकस्तेजसो नियतोदयः ।
दक्षः प्रजापतिश्चासीत् स्वामी शक्तिधरश्च सः ॥३१८॥

ས་འཛིན་ ཀ་ཏ་ཀ་ མང་ཞིང་ ।
 གཟི་བཞིན་ལྷན་པ་ དེས་པར་དར་ ।
 ཟླ་དགུའི་བདག་ བྱང་ སྐར་བ་ལྟེ་ ।
 རྩེ་བོ་ རྣམ་པ་ འཛིན་ ཡང་དེ ॥ 322

अच्युतोप्यवृषोच्छेदी राजाप्यविदितक्षयः ।
 देवोप्यविबुधो जह्ने शंकरोप्यभुजंगवान् ॥३१६॥

རྩམས་མེད་ ཡིན་ ཡང་ ཆོས་གཙོད་མིན་ ।
 རྒྱལ་པོ་ ཡིན་ ཡང་ ཟད་མི་ཤེས་ ।
 བདེ་བྱེད་ཡིན་ ཡང་ ལག་འགྲོ་མེད་ ।
 ལྷ་ཡང་ བོ་བུ་དྲུ་ མིན་ཤེས་ ॥ 320

गुणजातिक्रियादीनां यद्वैकल्यदर्शनं ।
 विशेषदर्शनायैव सा विशेषोक्तिरिष्यते ॥३२०॥

བྱད་པར་ རབ་དུ་ བསྐྱན་པའི་ཕྱིར་ ।
 ཡོན་དན་ རིགས་ དང་ བྱ་བ་ སོགས་ ।

གང་དུ་ མ་ཚང་ཉིད་ བསྟན་པ།
 དེ་ནི་ བྱད་པར་ བཟོད་པར་ འདོད་ ॥ ३३०

न कठोरं न चातीक्ष्णमायुधं पुष्पधन्वनः ।
 तथापि जितमेवासीदमुना भुवनत्रयं ॥३२१॥

མེ་དོག་ གཞུ་ཅན་ དག་གི་ མཚོན།
 ཅུབ་པ་མ་ཡིན་ རྗེ་བའང་མིན།
 དེ་ལྟ་ན་ ཡང་ འདི་ཡིས་ནི།
 ས་གསུམ་དག་ལས་ གྲུལ་བར་གྱུར་ ॥ ३३१

न देवकन्यका नापि गन्धर्वकुलसंभवा ।
 तथाप्येषा तपोभङ्गं विधातुं वेधसोप्यलं ॥३२२॥

འདི་དག་ ལྷ་ཡི་ བྱ་མོ་ མིན།
 རྒྱ་ཟེའི་ རིགས་ལས་ བྱང་བའང་ མིན།
 དེ་ལྟ་ མོད་ཀྱི་ ཚངས་པའི་ ཡང་།
 དཀའ་བྱུང་ གཞོམ་པ་ སྐྱབ་པར་ རུས་ ॥ ३३२

न बद्धा भुक्नु[33b]दिर्नापि स्फुरितो दशनच्छदः ।
न च रक्ताभवदृष्टिर्वस्तश्च द्विषतां कुलं ॥३२३॥

सिंहादेरं दगादेरं सवसुसं सैदं ।
संयं गायंसां गृहं सवसुदेवं ।
सिंहादेरं दगादेरं सवसुदेवं ।
दगादेरं सवसुदेवं ॥ ३२३

न रथा न च मातंगा न हया न च पत्तयः ।
स्त्रीणामपाङ्गदृष्ट्यैव जीयते जगतां त्रयं ॥३२४॥

सैदं दं सैदं सैदं सैदं सैदं ।
दं सैदं सैदं सैदं सैदं ।
सैदं सैदं सैदं सैदं ।
सैदं सैदं सैदं सैदं ॥ ३२४

एकचक्रो रथो यन्ता विकलो विषमा हयाः ।
आक्रामत्येव तेजस्वी तथाप्यर्को जगत्त्रयं ॥३२५॥

ཤེང་དྲ་ རཁོར་ལོ་གཅིག་པ་དང་ ।
 ཁ་ལོ་པ་ ཉམས་ དྲ་མི་མཉམ་ ।
 དེ་ལྟ་ན་ ཡང་ གཟི་བྱིན་ཅན་ ।
 ཉི་མས་ རགྲོ་བ་ གསུམ་པོ་ མནན་ ॥ ३३४

सैषा हेतुविशेषोक्तिस्तेजस्वीतिविशेषणात् ।
 अयमेव क्रमोन्येषां भेदानामपि कल्प्यते ॥३२६॥

གཟི་བྱིན་ཅན་ སྒྲིགས་ བྱུང་པར་ལས་ ।
 རདི་ནི་ ལྷ་ཡི་ བྱུང་པར་ བཟོད་ ।
 རིས་པ་ རདི་ཡིས་ གཞན་གྱི་ ནི་ ।
 དབྱེ་བ་ནམས་ ཀྱང་ བདག་པར་བྱ་ ॥ ३३५

विवक्षितगुणोत्कृष्टैर्यत्समीकृत्य कस्यचित् ।
 कीर्त्तनं स्तुतिनिन्दार्थं सा स्मृता तुल्ययोगिता ॥३२७॥

བཟོད་ རདོད་ ཡོན་དྲན་ བྱུང་ལམ་གས་ དང་ ।
 མཆོངས་པར་ བྱས་ནས་ རག་འཁྱིལ་ནི་ ।

བཟློང་སྒྲོ་དོན་དུ་བསྒྲགས་པ་གང་།

དེ་ནི་མཚུངས་པར་སྟོར་པར་བཤད་॥ ३३७

यमः कुबेरो वरुणः सहस्राक्षो भवानपि ।

विभ्रत्यनन्यविषयां लोकपाला इति श्रुतिम् ॥३२८॥

གཤེན་ཇི་ལུས་ངན་ཅུ་ལྟ་དང་།

མིག་སྟོང་པ་དང་ཁྱོད་ཉིད་ཀྱང་།

འཇིག་དོན་སྟོང་པ་ཞེས་པའི་སྒྲ།

ཡུལ་གཞན་མེད་པར་ནམ་པར་འཇིན་॥ ३३८

संगतानि मृगाक्षीणां तडिद्विलसितन्यपि ।

क्षणद्वयन्न तिष्ठ[34a]ति घनरब्धान्यपि स्वयं ॥३२९॥

རི་དགས་མིག་དང་འགྲོགས་པ་དང་།

སྟོག་གི་ཅེ་དགའ་དག་དང་ནི།

སྟོན་གྱི་ཅུས་པའང་རང་བཞིན་གྱིས།

སྒྲ་ཅིག་གཉིས་པར་མི་གནས་སོ། ॥ ३३९

विरुद्धानाम्पदार्थानां यत्र संसर्गदर्शनं ।
 विरोधसाधनायैव स विरोधः स्मृतो यथा ॥३३०॥

འགལ་ལྷོ་ ལྷུབ་བྱིད་ སྤྲུལ་དུ་ནི།
 གང་དུ་ དངོས་པོ་ འགལ་བ་ རྣམས།
 ཡང་དག་ འགྲོགས་པར་ རབ་བསྐྱན་པ།
 དེ་ནི་ འགལ་བ་ བཤད་ དེ་ དཔེར ॥ ३३०

कूजितं राजहंसानां वर्द्धते मदमञ्जुलं ।
 क्षीयते च मयूराणां रुतमुत्क्रान्तसौष्ठवं ॥३३१॥

ངང་པའི་ ལྷུལ་པོ་ རྣམས་དག་ནི།
 ལྷུས་པའི་ གང་ངས་སྐྱོན་ ཅ་ཅོ་ འཕྲིལ།
 མ་བྱ་རྣམས་ཀྱི་ ལྷུ་དག་ནི།
 ཡིད་འོང་ ཉིད་དང་ བྲལ་བས་ཉམས། ॥ ३३१

प्रावृषेण्यैर्जलधरैरम्बरं दुर्दिनायते ।
 रागेण पुनराक्रान्तं जायते जगतां मनः ॥३३२॥

དབྱར་སྒྲིལ་ རྩ་འཛིན་དག་གིས་ནི །
 ཉམ་མཁའ་ ཡུལ་ངན་ ལྷ་བྱར་ སྤྱོད་ །
 ཆགས་པ་ ཡིས་ ཀྱང་ འགྲོ་བ་ཡི །
 ཡིད་ནི་ ཀྱན་དུ་ ཆགས་པར་གྱུར ༥ ३३३

तनुमध्यं पृथुश्रोणि रक्तौष्ठमसितेक्षणं ।
 नतनाभि वपुः स्त्रीणां कं न हन्युन्नतस्तनं ॥३३३॥

སྒྲིལ་པ་ ལྷ་ རིང་ རོ་སྒྲིལ་ སྤྱོད་ །
 མཆུ་དམར་ མིག་ནི་ དཀར་བ་ མིན་ །
 ལྷ་པ་ དམར་ རིང་ རྩ་མ་ མཐོ་ །
 བྱད་མེད་ ལུས་ ཀྱིས་ སྤུ་ མ་ བཅོམ་ ॥ ३३३

मृणालबाहु रम्भोरु पद्मोत्पलमुखेक्षणं ।
 अपि ते रूपमस्माकं तन्वि तापाय कल्पते ॥३३४॥

བད་ཅའི་ ལག་པ་ རྩ་ཤིང་ བརྒྱ །
 བརྒྱའི་གདོང་ དང་ ལྷ་དྲུལ་ མིག །

ཁྱིའི་གཞུགས་ཀྱིས་ བདག་ཅག་ནམས།
 གདུང་ནས་ མེན་ནས་ ལུས་ཅན་ས། ॥ ३३८

उद्यानमारुतोद्धूताश्चूताश्चम्पकरेणवः ।
 उदश्रयन्ति पान्यानामस्पृशन्तोपि लोचनम् ॥३३५॥

སྒྲིའི་ཆལ་ རྒྱུང་གིས་ རབ་བསྐྱེད་པ།
 རྒྱ་དུ་ཅས་ཀྱི་ཡི་དུལ།
 རིག་པ་མེན་ ཡང་ འགྲོན་པོ་ཡི།
 མིག་ལ་ མཆི་ས་ཟག་པར་བྱེད། ॥ ३३९

कृष्णार्जुनानुरक्तापि दृष्टिः कर्णा[34b]वलम्बिनी ।
 याति विश्वसनीयत्वं कस्य त कलभाषिणि ॥३३६॥

ལྷན་པར་སྒྲིགས་ས་ ཁྱིའི་མིག།
 ལག་དཀར་ཇེས་སུ་དམར་བ་ ཡང་།
 ལ་བ་དག་ལ་ བརྟེན་པ་ ལི།
 སུ་ཡི་ ཡིད་བདན་ཉིད་དུ་འགྱུར། ॥ ३३७

इत्यनेकप्रकारोयमलंकारः प्रतीयते ।

अप्रस्तुतप्रशंसा स्यादप्रक्रान्तेप्सितास्तुतिः ॥३३७॥

दे'ङ्ख'न्'क्रु'न्'अ'दि'क'स'प' वै ।

दु'स'ङ्गि'द'दु' र'व'ङ्गे'ग'स'पु ।

स'व'स' स'ि'न्' अ'दि'द'प'स' व'ङ्गे'द'प' वै ।

स'व'स'सु' स'व'व' व'ङ्गे'द'प' य'ि'न् ॥ ३३८ ॥

सुखं जीवन्ति हरिणा वनेष्वपरसेविनः ।

अर्थैरयत्नसुलभैर्जलदर्भाङ्कुरादिभिः ॥३३८॥

ग'ल'ग'स'ि'व'ङ्गे'द'प' र'ि'द'ग'स'क'स'स' ।

अ'व'द'स'े'द' ङ्गे'द'प'र'सु'व'दि'र'े'र' ।

ङ्ग'द'र'ङ्ग'य'ि'सु'ग'स'े'ग'स'गु'स' ।

ग'ग'स'क'स'स'सु' वै' व'दे'व'र' अ'ङ्गे ॥ ३३९ ॥

सेयमप्रस्तुतैवात्र मृगवृत्तिः प्रशस्यते ।

राजानुवर्त्तनक्लेशनिर्विण्णेन मनस्विना ॥३३९॥

ཀྱལ་པོའི་རྗེས་འབྲངས་ ཉམ་མོངས་པ།

ལྷན་དུ་སྒྲིབའི་ ཡིད་ཅན་གྱིས།

སྐབས་སུ་ མ་བབ་ཉིད་དུ་ འདིར།

རི་དྲགས་ སྤྱོད་ཚུལ་ འདི་དག་ བསྐྱགས། ॥ ३३७

यदि निन्दन्निव स्तौति व्याजस्तुतिरसौ स्मृता ।

दोषाभासा गुणा एव लभन्ते ह्यत्र सन्निधिं ॥३४०॥

གལ་དེ་ སྐད་པ་ བཞིན་ བསྤྱོད་ནས།

སྒྲིན་ ལྷན་ སྐང་བའི་ ཡིན་དན་ཉིད།

གང་དུ་ ཉེ་བར་ཐོབ་གུར་པ།

འདི་ནི་ ཟོལ་གྱིས་བསྤྱོད་པར་ བཤད། ॥ ३ॣ०

तापसेनापि रामेण जितेयं भूतधारिणी ।

त्वया राज्ञापि सैवेयं जिता मा भून्मदस्तव ॥३४१॥

རྒྱ་མ་དཀར་ཐུབ་པ་ཡིས་ ཀྱང་།

འབྲང་པོ་ འཛིན་མ་ འདི་ལས་ཀྱལ།

དེ་ཉིད་ རྒྱལ་པོ་ ཁྱོད་ཀྱིས་ ཀྱང་ །

འདི་ལ་ ཁྱོད་ནི་ རྒྱགས་ ས་ མཇེད་ ॥ ༣༠༡

पुंसः पुराणादाच्छ्रुय श्रीस्त्वया परिभुज्यते ।

राजसिद्धवाकुवंशस्य किमिदं तव युज्य[35a]ते ॥३४२॥

སྤྱོད་ཀྱི་སྤྱེས་བུ་ ལས་ བཅད་ནས་ །

དབལ་འདི་ཁྱོད་ཀྱིས་ ཡོངས་སུ་སྤྱོད་ །

རྒྱལ་པོ་ བུ་རས་ཤིང་བའི་རྒྱད་ །

ཁྱོད་ཀྱི་ འདི་ནི་ རིགས་སྐྱེ་ཅི་ ॥ ༣༠༢

भुजंगभोगसंसक्ता कलत्रं तव मेदिनी ।

अहंकारः पराङ्मोहिमारोहति कुतस्तव ॥३४३॥

ཁྱོད་ཀྱི་ བཅུན་མོས་ བཞི་ནི་ །

ལག་འགྲོའི་སྒྲོ་ག་དག་ལ་རྒྱགས་ །

ཅི་སྤྱད་ ཁྱོད་ཀྱི་ང་རྒྱལ་ནི་ །

མཆོག་གི་མཐའ་ཅུ་ འཇེགས་པར་གྱུར་ ॥ ༣༠༣

इति श्लेषानुविद्धानामन्येषां चोपलक्ष्यताम् ।
व्याजस्तुतिप्रकाराणामपर्यन्तः प्रविस्तरः ॥३४४॥

दे'ङ्कर' ठे'वर' सके'ङ'प'लस ।
सु'र'व'उ'र'द'न'ग'र'र'द'ग'नी ।
वे'ल'ग्री'स'व'सु'र'द'र'र'र'र'र'र' ।
र'व'र'र'र'र'र'र'र'र'र'र'र' ॥ ३४४ ॥

अर्थान्तरप्रवृत्तेन किञ्चित्तत्सदृशं फलं ।
सदसद्वा निदर्शयेत यदि स्यात्तन्निर्दर्शनं ॥३४५॥

ग'ल'र' दे'र'ग'र'र'र'र'र'र' ।
दे'र'र'र'र'r'र'r'r'r' ।
स'के'ग'ग'स' स'के'ग'र'र' सु'र'र'र' ।
दे'र'र' र'स'r'r'r'r'r' ॥ ३४५ ॥

उदयन्नेव सविता पद्मेष्वर्पयति श्रियं ।
विभावयितुमृद्धीनां फलं सुहृदनुग्रहं ॥३४६॥

ཉི་མ་ འཆར་བ་ཉིད་ཀྱིས་ བྱི །

པདྨ་ནམས་ལ་ དཔལ་ལྷོང་བྱེད །

པུན་ཚེགས་ནམས་ཀྱི་ འབྲས་བྱ་དག །

གྲོགས་པོ་ཇེས་འཛིན་ བལྟན་པའི་ཕྱིར ༥ ༣༥༩

याति चन्द्रांशुभिः स्पृष्टा ध्वान्तराजी पराभवम् ।

सद्योराजविरुद्धानां सूचयन्ती दुरन्ततां ॥३४७॥

ལྷ་བའི་ཟེར་གྱིས་ རེག་པ་ན །

ཐུན་པའི་ཕྱིང་བ་ རུབ་པར་འགྱུར །

འབྲལ་ལ་རྒྱལ་པོ་ དང་ འགལ་ནམས །

ངན་པའི་མཐར་འགྱུར་ གསལ་བར་བྱེད ༥ ༣༥༨

सहोक्तिः सहभावस्य कथनं गुणकर्मणां ।

अर्थानां यो विनिमयः परिवृत्तिस्तु सा यथा ॥३४८॥

ཡོན་དན་ལས་ནམས་ ལྷན་ཅིག་གི །

དངོས་པོ་ བཛྲོད་པ་ ལྷན་ཅིག་བཛྲོད །

རོན་རྣམས་ བསྐྱེལ་བ་ གང་ ཡིན་པ་ །
 ཡོངས་བརྒྱུས་ཡིན་ཏི་ དེ་དག་ དཔེར་ ॥ ༣༥༤

सह दीर्घा मम[35b] श्वासैरिमाः संप्रति रात्रयः ।
 पाण्डुराश्च ममैवाङ्गैः सह ताश्चन्द्रभूषणाः ॥३४६॥

དེ་ནི་ མཚན་མོ་ འདི་དག་རྣམས་ །
 བདག་གི་དབྱགས་དང་ ལྷན་ཅིག་རིང་ །
 རྒྱ་བའི་གྲོན་ལྷན་མ་རྣམས་ ཀྱང་ །
 བདག་ལུས་ཉིད་ དང་ ལྷན་ཅིག་ སུ ॥ ༣༥༥

वर्द्धते सह पान्थानां मूर्च्छया चूतमञ्जरी ।
 पतन्ति च समन्तेषामश्रुभिर्मलयानिलाः ॥३५०॥

འགྲོན་པོ་རྣམས་ཀྱི་ མྱོངས་པ་ དང་ །
 ལྷན་ཅིག་ རྒྱ་དའི་དོག་པ་གྲུས་ །
 དེ་དག་ མཆི་མ་ དང་ མཉམ་དུ་ །
 མ་ལ་ལ་ཡི་རྒྱང་དག་ འབབ་ ॥ ༣༥༠

कोकिलालापसुभगाः सुगन्धिवनवायवः ।
यान्ति साधं जनानन्दैर्वृद्धिं सुरभिवासराः ॥३५१॥

ཁ་བྱུག་ སྒྲོགས་པའི་སྐལ་བཟང་ ༥༨ །
ནགས་ཀྱི་རྒྱང་ ནི་ རི་བཟང་ ༥༨ །
དབྱིད་ཉིན་ སྒྲི་བའི་ཀྱན་དགའ་རྣམས་ །
ལྷན་ཅིག་དག་ཏུ་ འཕེལ་བར་འགྱུར་ ॥ ३५२

इत्युदाहृतयो दत्ताः सहोक्तेरत्र काश्चन ।
क्रियते परिवृत्तेश्च किञ्चिद्रूपनिरूपणं ॥३५२॥

དེ་ལྟར་ ལྷན་ཅིག་བཟོད་པ་ཡི་ །
དཔེར་བཟོད་ འགའ་ཞིག་ འདིར་ བྱས་དེ་ །
ཡོངས་སུ་བཟོས་པའི་ རང་བཞིན་ ཡང་ །
ངས་པར་བསྟན་པ་ ཅུང་ཟད་བྱ་ ॥ ३५३

शस्त्रप्रहारन्ददता भुजेन तव भूभुजां ।
चिरार्जितं हृतं तेषां यशः कुमुदपाण्डरं ॥३५३॥

ས་སྒྲིད་རྣམས་ལ་ མཚོན་ བསྟན་པ་ །
ལྷན་བྱེད་ ཁྱིད་ཀྱི་ལག་པ་ཡིས་ །

དེ་དག་ གྲགས་པ་ ཀྱ་མུང་ དཀར་ ।

ཡུན་རིང་དག་ཏུ་ བསྐྱབས་པ་ ཐོགས་ ॥ ३४३

आशीर्नामाभिलषिते वस्तुन्याशंसनं यथा ।

पातु वः परमज्योतिरवाङ्मनसगोचरम् ३४४॥

མངོན་པར་འདོད་པའི་དངེས་པོ་ལ་ ।

སྒྲོན་པ་ ཤིས་བཞེད་ ཅེས་བྱ་ དཔེར་ ।

ངག་ཡིད་ སྒྲིད་ཡུལ་ མ་ཡིན་པའི་ ।

སྒྲུང་བ་ དམ་པས་ བྲིད་ལ་ སྒྲུངས་ ॥ ३४८

अनन्वयससंदेहावुपमास्वेव दर्शितौ ।

उपमा रूपकं[36a]चापि रूपकेष्वेव कीर्तितम् ॥३५५॥

ཇེས་འགྲོ་མེད་དང་གེ་ཚེས་ཅན་ ।

དག་ནི་ དཔེ་རྣམས་ཉིད་ལ་ བཟུན་ ।

དཔེ་ཡི་གཞུགས་ཅན་ དག་ ཀྱང་ འདིར་ ।

གཞུགས་ཅན་རྣམས་ལ་ ཇེས་པར་བསྐྱབས་ ॥ ३४४

उत्प्रेक्षाभेद एवासावुत्प्रेक्षावयवोपि च ।
नानालंकारसंसृष्टिः संसृष्टिः कथ्यते पुनः ॥३५६॥

རབ་རྟོག་ཆ་ཤས་ འདི་ ཡང་ རི །
རབ་རྟོག་དག་གི་དབྱེ་བ་ཉིད །
ཐ་དད་གྲུན་ནམས་བསྐྱེས་པ་རི །
སྤྲེལ་མ་དག་ཏུ་ བཟོད་པ་སྟེ ། ३५७

अङ्गाङ्गिभावसंस्थानं सर्वेषां समकक्षता ।
इत्यलङ्कारसंसृष्टौ लक्षणीया द्वयी गतिः ॥३५७॥

ཡན་ལག་ཡན་ལག་ཅན་དངོས་ཀྱི །
སྐབས་ དང་ ཐམས་ཅད་ སྟོབས་མཚུངས་ཉིད །
ཅས་པའི་ལྷགས་ གཉིས་ སྤྲེལ་མ་ཡི །
གྲུན་དག་ལ་ རི་ མཆོན་པར་བྱ ། ३५८

आक्षिपन्त्यरविन्दानि तव मुग्धे मुखश्रियं ।
कोपदण्डसमप्राणां किमेवामस्ति दुष्करं ॥३५८॥

མཛེས་མ་ ཁྱིད་གྱི་ བཞིན་གྱི་ དཔལ།
 དབྱ་དག་གིས་ འགོག་པར་བྱེད།
 མཛེད་དང་ ཡུ་བ་ སུན་ཚེགས་པ།
 འདི་ལ་ བྱ་ དཀར་ ཅི་ ཞིག་ ཡོད། ॥ ༣༥

श्लेषः सर्वासु पुष्पाति प्रायो वक्रोक्तिषु श्रियं ।
 भिन्नं द्विधा स्वभावोक्तिर्वक्रोक्तिश्चेति वाङ्मयं ॥३५६॥

རང་བཞིན་ བཛེད་དང་ འབྲིག་ བཛེད་ཅེས།
 ངག་གི་ རང་བཞིན་ ཐ་དད་ གཉིས།
 འབྲིག་པོར་ བཛེད་པ་ ཐམས་ཅད་ལ།
 པལ་ཆེར་ སྦྱར་བས་ དཔལ་གྱིས་བྱེད། ॥ ༣༦

भाविकत्वमिति प्राहुः प्रबन्धविषयं गुणः ।
 भावः कवेरभिप्रायः काल्येष्वासिद्धि यः स्थितः ॥३६०॥

སྒྲན་ངག་མཁན་ བསམ་དགོངས་པ་ སྟེ།
 སྒྲན་ངག་ གྲུབ་པར་ གང་ གནས་པ།

རབ་སྒྲིང་ ཡུལ་གྱི་ཡོན་ཏན་ཅན །

དེ་ནི་ དགོངས་པ་ཅན་ ཞེས་ བཟློང་ ॥ ३५०

परस्पररोपकारित्वं सर्वेषां वस्तुपर्वणाम् ।

विशेषणानां व्यर्थानामक्रिया [36b] स्थानवर्णनं ॥ ३६१

དངོས་པོ་ཡི་ ནི་ ཆོགས་ནམས་ཀྱན །

ཕན་ཚུན་ ཕན་པར་བྱེད་པ་ ཉིད །

དོན་དང་ བྲལ་བའི་ ཁྱད་པར་ ནམས །

ས་བྱས་ གནས་སྲུ་ བསྐྱགས་པ་ དང་ ॥ ३५१

व्यक्तिरुक्तिक्रमबलाद्गम्भीरस्यापि वस्तुनः ।

भावायत्तमिदं सर्वमिति तं भाविकं विदुः । ३६२

བཟློང་རིས་ ལྷོབས་ ལས་ དངོས་པོ་ ནི །

ཟབ་མོ་དག་ ཀྱང་ གསལ་བ་སྟེ །

དེ་ཀྱན་ དགོངས་པའི་དབང་གྱུར་ ལྷིར །

དེ་དག་ དགོངས་པ་ཅན་ ཞེས་ རིག་ ॥ ३५२

यच्च सन्ध्यङ्गवृत्त्यङ्गलक्षणाद्यागमान्तरे ।
व्यावर्णितमिदं चेष्टमलङ्कारतयैव नः ॥ ३६३

गद'अद' सळसस' सुँर' अर'अग' दद' ।
अहुग'पदि'अर'अग' सळर' छिद' सगस ।
अद' गअर' दग'दु' वहेँद' अदि' अद' ।
गुर'छिद'दु' री' वदग'अग' अदिँद' ॥ ३६३

पन्था स एष विवृतः परिमाणवृत्त्या संहृत्य विस्तरमनन्तमलंक्रियाणां ।
वाचामतीत्य विषयं परिवर्त्तमानानभ्यास एव विवरीतुमलं विशेषान् ॥ ३६४

गुर'के' सअर'अस' रव'वसुस'ळद'दु' गुर'प'अ ।
गुर'रसस' दग'गी'अस' अदि'छिद' री'रस'पद'अ ।
वहेँद'पदि'अअ'अस' अदस'पद' अँदस'सु'गअर'प'अ ।
अद'पद'रसस'री' गअस'प'छिद'गुर'स' दगुर'पद'रुस ॥ ३६४

इत्याचार्यदण्डिनः कृतौ काव्यादर्शोऽर्थालङ्कारो नाम द्वितीयः परिच्छेदः ॥

रिस' सुँव'दपे'र' दगुर'प'अर'गुर'स' सहेँद'प' सुँर'अग' स ।
अँद'अस' री'र'गुर' अस'गुर'प' अँदस'सु'वअद'प' गुर'स'पदिँ ॥

CHAPTER III

अव्यपेतव्यपेतात्मा व्यावृत्तिर्वर्णसंहतेः ।
यमकं तच्च पादानामादिमध्यान्तगोचरं ॥१॥

བར་མ་ཆོད་དང་ བར་ཆོད་ བདག །
ཡི་གེ་ ཆོགས་པ་ བསྐྱར་བ་ནི །
ཟུང་ལྟན་ དེ་ཡང་ ཀྱང་པ་ཡི །
དང་པོ་ བར་ མཐའ་ སྟོད་ལྷལ་ཅན ། १

एकद्वित्रिचतुष्पादयमकानां विकल्पनाः ।
आदिमध्यान्तमध्यान्तमध्याद्याद्यन्तसर्वतः ॥२॥

གཅིག་ གཉིས་ གསུམ་ བཞི་ ཀྱང་པ་ཡི །
ཟུང་ལྟན་རྣམས་ཀྱི་ རྣམ་རྟོག་ནི །
གྲོག་མ་ བར་ མཐའ་ བར་ དང་ མཐའ་ །
བར་དང་ གྲོག་མ་ གྲོག་མཐའ་ ཀུན ། २

[37a] अत्यन्तबहवस्तेषां भेदाः संभेदयोनयः ।
सुकरा दुष्कराश्चैव दृश्यन्ते तत्र केचन ॥३॥

गुणः ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ।
५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ।
५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ।
५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ॥ ३

मानेन मानेन सखि प्रणयोभूत्प्रिये जने ।
खण्डिता कण्ठमाश्लिष्य तमेव कुरु सत्रपम् ॥४॥

गुणः ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ।
५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ।
५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ।
५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ॥ ५

मेघानादेन हंसानां मदनोमदनोदिना ।
नुन्नमानं मनः स्त्रीणां सह रत्या विगाहते ॥५॥

ངང་པ་ནམས་གྱི་ རྟེན་ས་ འཛེམས་པ་ །

སྒྲིན་གྱི་ སྒྲ་ ཡིས་ སྒྲིས་བྱེད་ནི་ །

དགའ་མ་ དང་ བཅས་ བྱད་མེད་གྱི་ །

ཁངས་བྲལ་ཡིད་ལ་ འཇུག་པར་བྱེད་ ॥ ༥

राजन्वत्यः प्रजा जाता भवन्तं प्राप्य साम्प्रतं ।
चतुरं चतुरंभोधिरसनोर्वीकरग्रहे ॥६॥

ཐུ་གཏེར་བཞི་ཡི་ སྒྲ་རགས་ཅན་ །

ས་ཡི་ལག་ དབྱ་འཛིན་ལ་ མཁས་ །

ཁྱེད་ཉིད་ ཐོབ་ནས་ ད་ལྟ་ནི་ །

སྒྲི་དགུ་ སྒྲལ་པོ་ བཟང་ལྡན་གྱུར་ ॥ ༥

अरण्यं कैश्चिदाक्रान्तमन्यैः सद्य दिवौकसां ।
पंदातिरथनागाश्वरहितैरहितैस्तव ॥७॥

ཀླང་ཐང་ ཤིང་དྲ་ སྒྲང་པོ་དང་ །

དྲ་དང་ བྲལ་བ་ ཁྱེད་གྱི་ དགྲ་ །

འགའ་ ཞིག་ རྒྱལ་སྤང་ གཞན་དག་ནི །
 ལྷ་ རྒྱལ་སྤང་གི་ གནས་སུ་ སྤང་ ॥ ༧

मधुरं मधुरम्भोजवदने वद नेत्रयोः ।
 विभ्रमम्भ्रमरभ्रान्त्या विडम्बयति किञ्चिदं ॥८॥

ལུ་སྤྱེས་གདོང་ལྷན་ མིག་དག་གི །
 རྒྱལ་འབྲུལ་ ཡིད་འོང་ འདི་ལ་ རི །
 དཀྱིད་ཀྱི་ བྱང་བའ་རྒྱལ་འབྲུལ་གྱིས །
 ཙ་འདི་བྱེད་པ་ ཅི་ ཡིན་ སྤྱོས་ ॥ ༨

वारुणो वा रणोद्दामो हयो वा स्मरदुर्धरः ।
 न यतो नयतोऽन्तं नस्तदहो वि[37b]क्रमस्तव ॥९॥

འདོད་པ་ གཡུལ་དུ་ དཔའ་བ་ཡི །
 སྤང་པོ་འཇ་ གཟུང་དཀར་ ཏ་མེད་ཀྱིས །
 གང་ཕྱིར་ བདག་ཅག་ མཐར་བྱས་པ །
 དེ་ཕྱིར་ བྱིད་ཀྱི་ རྒྱལ་གཞོན་ མཚར་ ॥ ༩

राजितैराजितैक्षणेन जीयते त्वादृशैर्नृपैः ।
नोयते च पुनस्तृप्तिं वसुधा वसुधारया ॥१०॥

गङ्गायाः ५० ॥ १० ॥
सिन्धुयाः ५० ॥ १० ॥
गङ्गायाः ५० ॥ १० ॥
सिन्धुयाः ५० ॥ १० ॥

करोति सहकारस्य कलिकोत्कलिकोत्तरं ।
मन्मनोमन्मनोप्येष मत्तकोकिलनिस्वनः ॥११॥

सिन्धुयाः ५० ॥ १० ॥
गङ्गायाः ५० ॥ १० ॥
सिन्धुयाः ५० ॥ १० ॥
गङ्गायाः ५० ॥ १० ॥

कथं त्वदुपलम्भाशा विहताविह तादृशीं ।
अवस्था नालमारोदुमङ्गनामङ्गनाशिनी ॥१२॥

བྱིད་ལ་ དམིགས་ དཔེ་རི་བ་ དང་ ।
 མ་བྱལ་ འདི་ལ་ དེ་འདྲ་ ཡི།
 གནས་སྐབས་ ལུས་ནི་ འཛིག་བྱེད་པས།
 བྱད་མེད་ འཛིགས་ རྩས་ ཅི་ལྟར་མིན། ॥ १३

निगृह्य नेत्रे कर्षन्ति बालपल्लवशोभिना ।
 तरुणा तरुणान्कृष्टानलिनो नलिनोन्मुखाः ॥१३॥

ཡལ་འདབ་ གསར་པས་ མཛེས་པ་ཡི།
 ལྗོན་པས་ ཏངས་པའི་ གཞིན་ལྷ་རྣམས།
 པརླར་ མངོན་ བྱོགས་ བྱང་བ་ཡིས།
 མིག་ནས་ བརྩེང་མྱེ་ འགྲུགས་པར་བྱེད། ॥ १३

विशदा विशदामत्तसारसे सारसे जले ।
 कुरुते कुरुतेनेयं हंसो मामन्तकामिषं ॥१४॥

ལྷོས་པའི་ བཞད་ནི་ རབ་འཇུག་པ།
 རྩང་གི་རྩ་ལ་ དཀར་བ་ཡི།

ངང་མོ་ འདི་ཡི་ ཅ་ཅ་ ཡིས།

བདག་ནི་ མཐར་ཕྱིད་ཟས་སྲུ་ཕྱིད། ॥ ༡༥

विषमं विषमन्वेति मदनं मदनन्दनः ।

सहेन्दुकलयापोढमलया मलयानिलः ॥१५॥

དི་བྲལ་ ཟླ་བའི་ཆ་དག་ དང་།

ལྷན་ཅིག་ མ་ལ་ཡ་ཡི་རྒྱང་།

བདག་ དགའ་མི་ ཕྱིད་འདོད་པ་ ནི།

མི་བཟད་དུག་གི་ རྗེས་སྲུ་འགྲོ། ॥ ༡༦

मानिनी मानिनीषुस्ते निषङ्गत्वमनङ्ग मे ।

हारिणी हारिणी[38a]शर्म तनुतां तनुतां यतः ॥१६॥

བདག་ ལྷན་མི་འདོད་ ཁེངས་པ་ཅན།

དོ་ཤལ་དང་ལྷན་ འཕྲོག་ཕྱིད་མ།

ལུས་མེད་ ཁྱོད་ཀྱི་ དང་པ་ ཉིད།

སྲ་གུར་ བདག་ འགྲོགས་ བདེ་རྒྱས་ མཛོད། ॥ ༡༧

जयता त्वन्मुखेनास्मानकथं न कथं जितं ।
कमलं कमलंकुर्वदलिमदलिमदिप्रये ॥१७॥

सुदं.ग्री. गदे.गी.स. वद.ग. ल.स. सु.ल ।
कु.ली.सु.ग. सु.र. सु.द.व.उ.ग ।
द.द.व.ल.ग. व.द. ग.द.स. से.द.ल.स ।
उ.ल.र. ली.सु.ल. वद.ग. द.ग.द.स ॥ १७

रमणी रमणीया मे पाटलापाटलांशुका ।
वारुणीवारुणीभूतसौरभा सौरभास्पदं ॥१८॥

रि.स.दे.दे.ग्री.स. द.स.र.सु.र.व.रि ।
कु.ल.सो. व.रि.ग. सु.द.ल ।
द.ग.र.द.स.र. गे.स.उ.ग. रि.व.उ.द.स. ग.र.स ।
वद.ग.गी. द.ग.द.स. द.ग.द.व.र.सु ॥ १८

इति पादादियमकमव्यपेतं विकल्पितं ।
व्यपेतस्यापि वण्यन्ते विकल्पास्तत्र केचन ॥१९॥

དེ་ལྟར་ ཀང་པའི་ ཐོག་མ་ཡི།
 ཟུང་ལྟ་ བར་ཆོད་མེད་ རྣམ་རྟོག།
 ད་ནི་ བར་དུ་ཆོད་པ་ ཡི།
 རྣམ་རྟོག་ རགའ་ཡང་ བསྟན་པར་བྱ། ༥

मधुरेणदृशां मानं मधुरेण सुगन्धिना ।
 सहकारोद्गमेनैव शब्दशेषं करिष्यति ॥२०॥

ས་ཏ་ཀུ་ར་ ལས་ རྒྱུངས་ ཉིད།
 ཡིད་འོང་ སྤི་བཟངས་ལྟ་པ་ ཡིས།
 དབྱེད་གྱི་ ཨེ་ཆའི་ མིག་ཅན་གྱི།
 ཁིངས་པ་ སྒྲ་ཡི་ ལྷག་མར་བྱེད། ༥

करोऽतिताम्रो रामाणान्तन्त्रीताडनविभ्रमं ।
 करोति सेष्यं कान्ते वा श्रवणोत्पलताडनं ॥२१॥

དགའ་མའི་ ལག་པ་ ཤིན་དུ་ དམར།
 ཁྱུད་མངས་ལ་ བསྟན་ རྣམ་འབྲུལ་ལ།

ལྷ་ག་དོག་ ལྷ་ན་མ་ མཛོལ་བོ་ལའང་ ।
 ར་བའི་ཨུཏྲལ་གྱིས་ བསྐྱུན་བྱེད་ ॥ ३१

सकलापोल्लसनया कलापिन्याऽनुनृत्यते ।
 मेघाली नर्त्तिता वातैः सकलापो विमुञ्चति ॥२२॥

ལྷ་ག་ གྱིས་ གར་ བསྐྱུར་ སྤྱིན་གྱི་ཕྱིང་ ।
 མཐའ་དག་ རྩ་ནི་ འཕྱོར་བར་བྱེད་ ।
 དེ་མེས་ མཆུག་ མ་རབ་བསྐྱུང་བའི་ ।
 མཆུག་སྒྲོ་ལྷ་ན་པ་ གར་དག་བྱེད་ ॥ ३२

स्वयमेव गलन्मानकलि कामिनि[38b]ते मनः ।
 कलिकामथ नीपस्य दृष्ट्वा कां नु स्पृहशेशां ॥२३॥

འདོད་ལྷ་ན་མ་ དག་ བྱེད་གྱི་ ཡིད་ ।
 བེངས་ཚོད་ རང་ཉིད་ ཉམས་འགྱུར་ནི་ ।
 རྒྱ་བའི་ཀ་ལི་ཀྱ་ མཐོང་ན་ ।
 གནས་སྐབས་ ཅི་ལ་ དེག་འགྱུར་རམ་ ॥ ३३

आरुह्याक्रीडशैलस्य चन्द्रकान्तस्थलीमिमां ।
नृत्यत्येष लसच्चारुचन्द्रकान्तः शिखावलः ॥२४॥

उ० द० ग० री० री० यी० ल० री० री० ।
घ० र० री० य० री० री० री० री० री० ।
स० री० री० री० री० री० री० री० री० ।
ग० री० री० री० री० री० री० री० री० ॥ ३८

उद्धृता राजकादुर्वी ध्रियतेद्य भुजेन ते ।
वराहेणोद्धृता यासौ वराहेरुपरि स्थिता ॥२५॥

ग० री० री० री० री० री० री० री० री० ।
घ० री० री० री० री० री० री० री० री० ।
ग० री० री० री० री० री० री० री० री० ।
ग० री० री० री० री० री० री० री० री० ॥ ३९

करेण ते रणेऽन्तकरेण द्विषतां हताः ।
करेणवः क्षरद्रक्ता भान्ति सन्ध्याघना इव ॥२६॥

གཡུལ་དུ་དག་ཡི་གྲང་པོ་ནམས།

ཁྱོད་ཀྱི་ལག་པ་མཐར་བྱེད་ཀྱིས།

བསྒྲན་པའི་བྲག་ནི་རབ་ཟག་པ།

ཐུན་མཚམས་དག་གི་སྤྱོད་བཞིན་མཛེས། ॥ २६

परागतदुराजीव वातैर्ध्वस्ता भटेश्चमूः ।

परागतमिव कापि परागततमम्बरं ॥२७॥

རྒྱུང་གིས་རི་ཡི་ཤིང་ཐྱེང་བཞིན།

གཞན་གྱི་སྤྱོད་དཔར་བོས་བཙོམ།

མཐར་ནི་ག་ཤེད་སྤང་བ་བཞིན།

རྒྱལ་གྱིས་ནམ་མཁའ་བྱུང་པར་གྱུར། ॥ २७

पातु वो भगवान्विष्णुः सदा नवघनद्युतिः ।

स दानवकुलध्वंसी सदानवरदन्तिहा ॥२८॥

ལེགས་ལྷན་རྒྱ་འཛིན་གསར་པའི་འོད།

ལྷ་མིན་དག་གི་རིགས་ཉམས་བྱེད།

ཆད་ལྷན་ སྒྲུང་བོ་ མཆོག་ བཅོམ་པ།

བྱབ་འཇུག་དེས་ བྱིད་ ཉག་དུ་ སྒྲུངས། ॥ ३८

कमलेस्समकेशान्ते कमलेर्ष्याकरं मुखं ।

कमलेख्यं करोषि त्वं कमले[39a]वोन्मदिष्णुषु ॥२६॥

བྱིད་ཀྱི་མགོ་སྒྲ་བྱང་བ་འདྲ།

གཞིང་ནི་ བརྒྱར་ སྒྲག་དོག་བྱིད།

དཔལ་གྱིས་ བཞིན་དུ་ རབ་སྒྲིམ་པ།

བྱིད་ཀྱིས་ སྒྲ་ཞིག་ ཅི་མི་བྱིད། ॥ ३९

मुदा रमणमन्वीतमुदारमणिभूषणाः ।

मदभ्रमदृशः कर्तुमदभ्रजघनाः क्षमाः ॥३०॥

གྲུ་ཆེ་ རིན་ཆེན་ གྲུན་དང་ལྷན།

གྲུགས་པས་ མིག་ འཁོར་ རོ་གྲུ་ན།

ཆུང་བ་ མིན་པས་ མཇོམ་བོ་ ནི།

དགའ་བ་ལྷན་པ་ བྱ་བར་བཅོད། ॥ ३०



उदितैरन्यपुष्टानामारुतैर्मे हतं मनः ।
उदितैरपि ते दूति मारुतैरपि दक्षिणैः ॥३१॥

གཞན་གསེས་ནམས་ཀྱིས་ བསྐྱབས་པ་ དང་ །
 ཁྱེད་ཀྱི་ བཟོད་པའི་སྒྲ་ དང་ ནི་ །
 ལྷོ་ཡི་སྤྱབས་ཀྱི་ རྒྱང་གིས་ ཀྱང་ །
 བདག་ཡིད་ སྤྱབས་སོ་ རོ་ཉ་མོ་ ॥ ༣༡

सुराजितहियो यूनां तनुमध्यासते स्त्रियः ।
तनुमध्या क्षरत्स्वेदसुराजितमुखेन्दवः ॥३२॥

མེད་པ་ལྷ་ ཞིང་ རྒྱལ་ཟག་པས།
 གདོང་གི་རྒྱ་བ་ རབ་མཛེས་པའི།
 བྱད་མེད་ ཆང་གིས་ ངོ་ཚ་ བཅོས།
 རྩེས་པའི་ལྷས་ལ་ འཛོགས་པར་བྱེད། ॥ ༣༣

इति व्यपेतयमकप्रभेदोप्येष दर्शितः ।
अव्यपेतव्यपेतात्मा विकल्पोप्यस्ति तद्यथा ॥३३॥

གསང་ འཕྲོར་ དགའ་བ་ སྒྲིགས་བྱེད་པ།
དུས་འདྲ་ སྤྲོ་ཡིས་ བཟུང་བར་ནུས། ॥ ३४

याम यामत्रयाधीनायामया मरणं निशा ।
यामयाम धि[39b]याऽस्वर्त्याया मया मथितैव सा ॥३६॥

ཐུན་གསུམ་ དབང་གུར་ རིང་བ་ཡི།
མཚན་མོ་ ཡིས་ནི་ བདག་ཤི་ཅིག།
གང་ལ་ བདག་ སྤང་ སྒྲིག་ གཟེར་ འགྲོ།
དེ་ནི་ སྒྲོ་མེད་ བདག་གིས་ བཅོམ། ॥ ३५

इतिपादादियमकविकल्पस्येदृशी गतिः ।
एवमेव विकल्प्यानि यमकानीतराण्यपि ॥३७॥

ཅེས་ཀླང་ དང་པོ་ ཟུང་ལྡན་གྱི།
ནམ་དོག་ ལྷགས་ནི་ འདི་འདྲ་ མྱེ།
འདི་ལྟ་ ཁོ་ན་ ཟུང་ལྡན་གྱི།
ནམ་དོག་ གཞན་པ་ རྣམས་ ཀྱང་ངོ་ ॥ ३४

न प्रपञ्चभयाद्भेदाः कात्स्न्येनाख्यातुमीप्सिताः ।
दुष्कराभिमता एव वर्ण्यन्ते तत्र केचन ॥३८॥

श्लो० ॥ ३८ ॥
अथ ॥ ३९ ॥
॥ ४० ॥
॥ ४१ ॥
॥ ४२ ॥

स्थिरायते यतेन्द्रियो न हीयते यतेर्भवान् ।
आमायतेयतेप्यभूत्सुखाय ते यते क्षयं ॥३९॥

॥ ४३ ॥
॥ ४४ ॥
॥ ४५ ॥
॥ ४६ ॥

सभासु राजन्नसुराहतर्मुद्धर्महीसुराणां वसुराजितः स्तुताः ।
न भासुरा यान्ति सुरात्र तेगुणाः प्रजासु रागात्मसु राशिता गताः ॥४०॥

གྲུལ་པོ་འདུན་སར་ས་ཡི་ལྷ་ནམས་ དག་གྱི་ཞལ །
 ཆང་གིས་ས་བཅོས་ནོར་གྱིས་ མཛེས་བས་རབ་བསྐྱོད་བའི །
 བྱོད་གྱི་ཡོན་ཏན་ རབ་གསལ་ཆགས་ བདག་སྐྱེ་དགུ་ལ །
 ཡུང་པོ་ཉིད་གྱུར་ ལྷ་ནམས་སུ་ བློ་མི་འགྲོ་མིན ༥ ༥༠

तव प्रियासञ्चरित प्रमत्तया विभूषणं धार्यमिहांशुमत्तया ।
 रतोत्सवामोदविशेषमत्तया न मे फलं किञ्चन कान्तिमत्तया ॥४१॥

དམ་བའི་སྐྱོད་ལ་བག་མེད་བྱོད་གྱི་དགའ་ས་ བའ་ །
 དགའ་བའི་དགའ་སྐྱོན་དགའ་བས་ བྱད་བར་དུ་སྐྱོས་ས །
 རི་ཡིས་ འདིར་ནི་འོད་ལྡན་ གྱུན་ནམས་ བཟུང་བར་འོས །
 བདག་ལ་ མཛེས་ལྡན་ཉིད་གྱི་འབྲས་བུ་འགའ་ཡང་ཆེད ༥ ༥༡

भवाद्दशा नाथ न जानते न ते रसं विरुद्धे खलु[40a]सन्नतेन ते ।
 य एव दीनाः शिरसा नतेन ते चरन्त्यलं दैन्यरसेन तेन ते ॥४२॥

མགོན་པོ་བྱོད་ལྷས་དུད་བའི་རོ་ནི་མི་སྐྱེན་དེ །
 དམན་བ་ཉིད་ དང་ མཚོག་ཉིད་ དག་ནི་ རིས་བར་འགལ །

གང་ཞིག་ དམན་པ་ནམས་ རི་ ཁྱིད་ལ་མགོས་ འདྲད་ཅིང་ །

དེ་དག་ ཁྱོད་དམན་པའི་རོ་ དེས་ མཆོག་ཏུ་ གྱུ་ ॥ ༧༩

लीलासितेन शुचिना मृदुनोदितेन व्यालोकितेन लघुना गुरुणा गतेन ।

व्याजृम्भिते न जघने न च दर्शितेन सा हन्ति तेन गलितं मम जीवितेन ॥४३॥

རོལ་པའི་འཇུ་མ་ དཀར་ དང་ རི་ འཇམ་པོར་སྒྲ་བ་ དང་ །

ཆུང་ཕྱི་ལྷ་བ་ དང་རི་ ལྷི་པའི་འགྲོ་བ་ དང་ །

ཀྱན་ཏུ་སྒྲུལ་ དང་ རོ་ སྒྲ་ན་དག་ སྒྲོན་པ་ དེས་ །

བསྒྲུན་པ་ དེས་ ན་ བདག་རི་ འཆོ་བས་ དམན་པར་གྱུར་ ॥ ༧༣

श्रीमानमानमरवर्त्मसमानमानमात्मानमानतजगत्प्रथमानमानं ।

भूमानमानमत यः स्थितिमानमान नामानमानमतमप्रतिमानमानं ॥४४॥

དཔལ་ལྷན་ མི་ཤོང་ བདན་ལྷན་ གང་གིས་ བདག་ཉིད་རི་ །

འཆོ་མེད་ལམ་དང་ མཉམ་པའི་ཆད་ལྷན་ རབ་དྲུད་པའི་ །

འགྲོ་བ་གྱུས་བྱེད་ མཆོད་ལྷན་ ཆད་མེད་ མིང་ཅན་རི་ །

འཇལ་བྱེད་ ཆད་མེད་ མང་པོ་ བཀོད་ལ་ རྒྱག་དག་མཛོད་ ། ༧༤

सारयन्तमुरसा रमयन्ती सारभूतमुरुसारधरा तं ।
सारसानुकृतसारसकाञ्ची सा रसायनमसारमवैति ॥४५॥

वतुनः ५० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

नयानयालोचनयानयानया नयानयान्धान्विनयानयायते ।
न यानयासीर्जनयानयानया नयानयांस्तान् जनयानयाश्रितान् ॥४६॥

वतुनः ५० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

[40b] रवेण भौमो ध्वजवर्त्तिवीरवेरवेजि संयत्यतुलास्त्रगौरवे ।
रवेरिवोग्रस्य पुरो हरेरवेरवेत तुल्यं रिपुमस्य भैरवे ॥४७॥

མཚུངས་མེད་ ལྷི་བའི་ མཚོན་ལྡན་ གཡུལ་དུས་སྒྲིམ་ནི།
 གྲུལ་མཚན་ལ་ གནས་ དཔའ་བོ་ བྱ་ཡི་ སྒྲ་ཡིས་ བྲོས།
 ཉི་མ་ བཞིན་དུ་ བཟིད་བའི་ འཕྲོག་བྱེད་ འདི་མདུན་དུ།
 འཛིགས་རུང་ གཡུལ་ ལ་ དགྲ་ནི་ལྷག་དང་མཚུངས་པར་རིག། ༡༧

मयामयालब्धकलामयामयामयामयातव्यविरामयामया ।
 मयामयार्त्तिं निशयाऽमयामयामयामयामूं करुणामयामया ॥४८॥

མཚན་མོ་ ཚད་མེད་ བྱན་ལྡན་ དཔལ་མེད་ ཚད་མེད་ཅིང་།
 མཐར་ ནི་ བསྐྱོད་བྱ་ མིན་པ་ ཟད་ནད་ལ་ བདེན་པ།
 ཆ་ཡི་ རང་བཞིན་ ཉད་ཅན་ འབྲལ་བའི་ ཉད་ཀྱིས་ གཟེར།
 སྐལ་ལྡན་མ་ འདི་ སྤྱིང་ཇིའི་རང་བཞིན་ འབྲལ་མེད་ མཛོད། ༡༨

मतांधुनानारमतामकामतामतापलब्धाग्रिमतानुलोमता ।
 मतावयत्युत्तमता विलोमतामताम्यतस्ते समता नवामता ॥४९॥

ལང་མེད་ ཁྱོད་ཀྱི་ སྒོ་ལ་ མཉམ་ ཉིད་ བསྐྱོག་པ་ ཉིད།
 མ་ཡིན་ སྒྲ་མེད་ ཇེས་སུ་ མི་མཐུན་ འགྲོ་མ་ ཡིན།

གདུང་མེད་ཀྱིས་ བོབ་ མཆོག་གི་ རྒྱུ་ལྷ་ མཐུན་པ་ ཉིད་ ।

དགའ་མེད་ འདོད་མེད་རྣམས་ཀྱི་ བཞིད་པ་དག་ལས་ རྒྱལ་ ॥ ༥༠

कालकालगलकालकालमुखकालकाल

कालकालपनकालकालघनकालकाल ।

कालकालसितकालका ललनिकालकाल

कालकालगतु कालकाल कलिकालकाल ॥५०॥

དུས་ཀྱི་ དུས་ཅན་ མགྲིན་ནག་སྒྲིན་ནག་ ནག་པོ་ ཉིད་ དག་ འཛིན་ ।

སྒྲིན་སྒྲིགས་དག་གི་ སྒྲིགས་ དུས་ བྱང་ཆོགས་ སྒྲིན་ནག་ ལྷ་བུར་ ནག་ ।

དུས་ཀྱིས་མི་གཟུང་ དུས་ཆའི་ གཙོ་བོ་ མཛེས་པའི་ སྒྲིན་གྱི་མཆོ་ ।

དགའ་པས་འཆོ་པའི་གཡོ་ལྷན་ལན་བྱེང་ རོལ་ཅན་འགྲོགས་པར་ མཛོད་ ॥ ༥༠

संदृष्टमकस्थानमन्तादि पा[4।a]दयोर्द्वयोः ।

उक्तान्तर्गतमप्येतत् स्वातन्त्र्येणात्र कीर्त्यते ॥५१॥

ཀྱང་པ་ གཉིས་ཀྱི་ མཐུན་བོག་ ནི་ ।

རབ་སྒྲུར་ རྒྱང་ལྷན་ གནས་སྐབས་ འདི་ ।

བཛོད་པའི་ ཁོངས་སུ་ འདུས་ མེད་ཀྱང་ ।

རང་དབང་ཉིད་ཀྱིས་ འདིར་ བཤད་དོ ॥ ༥༡

उपोढरागाप्यबला मदेन सा मदेनसा मन्युरसेन योजिता ।
न योजितात्मानमनङ्गतापिता गतापि तापाय ममास नेयते ॥५२॥

सुँसःपदिं ऊवासःपः ३ःवरःवाकसःगुदः सुदःखेदःदेस ।
वदवाः३दः सःसुदः वदवाःकीः खीवाःपसः सिँवःयी ।
रेःददः सुदः३दः सुसःखेदः दवाःकीसः वादुदः गुदः गुदः ।
वदवाः ३ः २दिःखेदः वादुदःवलिःसुदः३दः सःवसुदःदे ॥ ५३

अर्थाभ्यासः समुद्रः स्यादस्य भेदास्त्रयो मताः ।
पादाभ्यासोप्यनेकात्मा व्यज्यते स निदर्शनैः ॥५३॥

सुदःसुसः यदःदवाःसुदःवःयी३ ।
२दिःयः दसुदःवः वासुसः३दः २दिदः ।
ऊदःवः वसुसःवः ददः ३दः यी ।
वदवाः ३दः देःदवाः दवेसःवासयः३ ॥ ५३

नास्थेयःसत्त्वया वज्यः परमायतमानया ।
नास्थेयः स त्वया वज्यः परमायतमानया ॥५४॥

སྒྲིམ་བྱ་ བདན་ གང་ སྒྲིང་སྒྲོབས་ཅན།
 ཁེངས་པ་ རབ་སྒྲུངས་ སྒྲུང་བྱ་ རེ།
 ཁྱེད་ཀྱིས་ མཆོག་དུ་ འབད་པ་ ཡིས།
 ཡིད་བདན་བྱའོ་ མི་བདན་མ། ॥ ༡༥

नरा जिता माननया समेत्य न राजिता माननयासमेत्य ।
 विनाशिता वै भवतापनेन विनाशिता वैभवतापनेन ॥५५॥

ཁྱེད་ཀྱི་ བགྲོད་པ་ ཁུབ་བདག་ གཞི་བྱིན་གྱིས།
 ཡང་ཡང་ རབ་སྒྲུར་ མཛེས་པ་ མེད་པ་ཡི།
 མི་རྣམས་ ཚུལ་དང་ ང་ཀྱལ་ ཉམས་བྱས་ནས།
 གདུང་ ཞིང་ ཀྱི་མ་ བྱས་ཆེས་ རྣམ་པར་བཅོམ། ॥ ༡༦

कलापिनां चारुतयोपयान्ति वृन्दानि लापोढघनागमानां ।
 वृन्दानिलापोढघनागमानां कलापिनां चारुतयोऽप[4।b]यान्ति ॥५६॥

སྒྲིན་བགྲོད་ དབྱར་སྒྲིམ་ མི་བྱའི་ཆོགས་རྣམས་ རེ།
 དགའ་བའི་སྒྲ་ཡིས་ མཛེས་པ་ ཐོབ་པར་གྱུར།

ཐུང་གི་ཚོགས་ ལྷག་ བྲལ་བས་ ཅུར་སྒྲིགས་ཀྱི །
ཚོགས་ནམས་ སྒྲ་དང་བྲལ་བ་ ཉིད་དུ་ བྱུར་ ॥ ༡༩

न मन्दयाऽवर्जितमानसात्मया नमन्दयाऽवर्जितमानसात्मया ।
उरस्युपास्तीर्णपयोधरद्वयं मया समालिङ्ग्यत जीवितेश्वरः ॥५७॥

འཚོ་བའི་དབང་ཕྱུག་ འདུད་པའི་ཡིད་ཀྱིས་ ཁོ་མོ་ནི །
དམན་ཞིང་ ཁེངས་པ་ དེས་པར་བསྐྱབས་པའི་དབང་བྱུར་མ །
བཅེ་བ་ སྒྲངས་པས་ བདག་ཉིད་ བྲང་གི་འོ་མ་འཛིན །
གཉིས་པོ་ ཉེ་བར་གདད་ནས་ ཀུན་དུ་མ་འཁྱུད་ལོ ॥ ༢༠

सभा सुराणामबला विभूषिता गुणैस्तवारोहि मृणालनिर्मलैः ।
स भासुराणामबला विभूषिता विहारयन्निर्विश सम्पदः पुराम् ॥५८॥

ལྷ་ནམས་ འདུན་ས་ སྒྲོབས་མེད་ཁྱབ་བདག་གནས་པ་ན །
ཁྱོད་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ པད་ཅ་ སྤི་མ་མེད་པས་ འཛོགས །
དེ་ནི་ འོད་འབར་ ཁྱོང་བཟང་ནམས་ཀྱི་ ཕུན་སུམ་ཚོགས །
བརྒྱན་པའི་ བྱད་མེད་ནམས་ དང་ ནམ་པར་ཅེ་ཞིང་སྒྲིད ॥ ༢༡



कलङ्कमुक्तं तनुमध्यनामिका स्तनद्वयो च तद्वते न हन्त्यतः ।
न याति भूतङ्गणने भवन्मुखे कलङ्कमुक्तं तनुमध्यनामिका ॥५६॥

སྒྲུབ་པར་སྒྲུབ་དང་ ལུས་སྒྲིབ་དྲུག་དང་ རྩ་གཉིས་མས།
 བྱིད་ལས་ གཞན་པ་ སྤྱ་ཞིག་ མ་བཅོམ་ དེ་ཡི་ཕྱིར།
 འབྲུང་པོ་ ལུས་ལྡན་ རྒྱུན་ལས་གྲོལ་བ་ བྱིད་ལ་སོགས།
 བསྐྱུང་བ་ ལ་ ཉི་ མིང་མིད་ ཉེ་བར་འགྲོ་མ་ཡིན། ॥ ༡༩

यशश्च ते दिक्षु रजश्च सैनिका वितन्वतेऽजोपम दंशिता युधा ।
वितन्वतेजोपमदं शितायुधा द्विषां च कुर्वन्ति कुलन्तरस्विनः ॥६०॥

ཁུབ་འཇུག་ ལ་བུ་ ཁྱོད་ཀྱི་དམག་དཔུང་ གོ་བགོས་པ་ །
 མཚན་རྟོག་ལྟ་བུ་ དཔལ་བོ་དག་གིས་ ཕྱིགས་ནམས་སུ་ །
 གྲགས་པ་ དང་ནི་ རྒྱལ་དག་ གྱུས་བྱེད་ གཡུལ་གྱིས་ནི་ །
 དགྲ་རིགས་ ལུས་བྲལ་ གཟི་མེད་ གྱུགས་པ་ ཉམས་པར་བྱེད་ ॥ ༩

विभर्त्ति भूमेर्वलयं भुजेन [42a] ते भुजंगमो मा स्म रतो मदञ्चितं ।
शृणूक्तमेकं स्वयमेत्य भूधरं भुजंगमो मा स्म रतो मदञ्चितं ॥६१॥

བླ་མ་ལ་ བདག་ལ་ བཅ་པའི་ཆོག་ བཅིག་ བསམ་པར་མཛོད་ །
 བྱིད་ཀྱི་ ལག་པ་ དཔལ་ དང་ ལྷན་ཅིག་ ལག་འགྲོ་ཡིས་ །
 ས་ཡི་དགྱིལ་འཁོར་ རྣམ་འཛིན་ དེ་ཕྱིར་ ས་གཞི་འཛིན་ །
 རང་ལག་ རིག་ནས་ རྒྱགས་པ་ རྒྱས་པར་ ཡོངས་མ་བྱེད་ ॥ ༤༡

स्मरानलोमानविवर्धितो यः स निर्वृतिं ते किमपाकरोति ।
 समन्ततस्तामरसेक्षणे न समन्ततस्तामरसे क्षणेन ॥६२॥

འདོད་པའི་ མེ་གང་ ཁེངས་པས་ རབ་བསྐྱབས་པ་ །
 སྐད་ཅིག་དང་མཉམ་རྒྱས་དེས་ བརྒྱའི་མིག་ །
 རོ་མེད་ བྱིད་ཀྱི་ བདེ་བ་ དེ་དག་ བློ་ །
 ཀྱན་ནས་ ཉམས་པ་ ཉིད་དུ་ ཅིས་མི་བྱེད་ ॥ ༤༢

प्रभावतो नामन वासवस्य प्रभावतो नाम नवासवस्य ।
 प्रभावतो नाम न वा सवस्य विच्छित्तिरासीत्त्वयि पिष्टपस्य ॥६३॥

མ་དུད་ བྱིད་ནི་ འཛིག་དེན་ བདག་གྱུར་ ཆོ་ །
 མཐུ་ཡིས་ མཐུ་ལྷན་ རོར་ཅན་ འདུད་བྱེད་པ་ །

དེ་ཕྱིར་ གསར་པའི་ བདུང་ལྷན་ མཆོད་སྦྱོར་ནི།
 རེས་པ་ཉིད་དུ་ ཆད་པར་མ་གྱུར་ཅོ། ༤༢

परम्पराया बलवा रणानां धूलीस्थिलीव्योन्नि विधाय रुन्धन् ।
 परम्पराया बलवारणानां परम्परायाबलवारणानां ॥६४॥

དཔུང་གི་ སྒྲང་པོ་ནམས་ནི་ གཞན་ དང་ གཞན།
 སྦྱོབས་ལྷན་ སྒྲ་སྒྲིགས་ རབ་དུ་ བརྒྱད་པ་ཡིས།
 བྲང་ལ་ རྟལ་ བརྒྱབས་ ནམ་མཁའ་ འགོག་བྱེད་ཅིང་།
 གཡུལ་གྱི་སྦྱོབས་ བརྒྱག་ མཆོག་དུ་ གཞན་ལ་ ཐུག། ༤༣

न श्रद्धये वाचमलज्ज मिथ्या भवद्विधानामसमाहितानां ।
 भवद्विधानामसमाहितानां भवद्विधानामसमाहितानां ॥६५॥

བྱོད་ལྷ་ མཉམ་པར་མ་བཞག་ སྦྱིད་པར་ ནི།
 ནམ་གཉིས་ མི་མཉམ་ པན་པ་མེད་ ནམས་ ཆོག།
 འོག་པར་གྱུར་པ་ སྦྱོབ་བྱེད་ མི་མཉམ་པ།
 སྦྱལ་ བཞོད་ མཆོངས་ལ་ མི་དད་ རོ་ཆ་མེད། ༤༤

सन्नाहितोमानमराजसे[42b]न सन्नाहितोमानम राजसे न ।
सन्नाहितो मानम राजसेन सन्ना हितोमानमराजसेन ॥ ६६ ॥

དགྲ་ཡི་ མཛེས་ འཛེམས་ གྲུལ་པོ་འི་སྒོ་ཡིས་བདུད །
ཏྲུལ་མས་ བན་པ་ དཔལ་རྒྱ་ མེད་མིན་སྟེ །
མི་འདུད་ གོ་བགོས་ མཚོད་ཐོབ་ རྒྱལ་མེད་པ །
སྒྲེས་མཚོག་ རྩེ་བོ་དམ་པ་ མི་མཛེས་མིན ॥ ५५

सकृद्विस्त्रिंश्व योऽभ्यासः पादस्यैवं प्रदर्शितः ।
श्लोकद्वयन्तु युक्तार्थं श्लोकाभ्यासः स्मृतो यथा ॥ ६७ ॥

དེ་ལྟར་ ཀླང་པ་ ལན་གཅིག་དང་ །
གཉིས་དང་ གསུམ་ ཡང་ བརྒྱས་པ་ བཤུན །
ཆོགས་བཅད་ གཉིས་དང་ལན་པའི་དོན །
ཆོགས་བཅད་ བརྒྱས་པ་ ཡིན་དེ་ དཔེར ॥ ५७

विनायकेन भवता वृत्तोपचितबाहुना ।
स्वमित्रोद्धारिणाऽभीता पृथ्वीयमतुलाश्रिता ॥६८॥

ལྷམ་ཞིང་ གྲུས་པའི་ ལག་པ་ཅན །
 གྲོགས་མིན་ རབ་ད་འཛེམས་བྱེད་པ །
 རྣམ་འདྲན་ ཁྱོད་ཀྱི་ བསྟེན་པ་ཡི །
 མི་མཚུངས་ ས་ འདི་ འཛིགས་པ་མེད ༥ ༤

विनायकेन भवता वृत्तोपचितवाहुना ।
 स्वमित्रोद्धारिणाऽभीता पृथ्वी यमतुलाश्रिता ॥६६॥

འདྲན་པ་ དག་ དང་ བྲལ་གྱུར་ཅིང་ །
 ལག་པ་ སྟེགས་ཁང་ ཉེ་གྱུར་པ །
 རང་གྲོགས་ཀྱིས་ བདང་ དགྲ་ཡིས་ནི །
 མི་མཉམ་ ས་ འདི་ མཛོན་པར་བསྟེན ༥ ༥

एकाकारचतुष्पादं यन्महायमकाह्वयं ।
 तस्यापि दृश्यतेऽभ्यासः सा परा यमकक्रिया ॥७०॥

ཀླང་བཞི་ རྣམ་པ་ གཅིག་པ་ གང་ །
 ཟུང་ལྷན་ ཆེན་པོར་ བཛོད་པ་ ཡིན །

དེ་ལ་འང་ བཟླས་པ་ མཐོང་སྟེ་ དེ།

ཟུང་ལྷན་ བྱ་བ་ གཞན་ ཡིན་ནོ། ॥ १०

समानयास मानया समानयासमानया ।

समानया समानया समान या समानया ॥७१॥

མཉམ་མེད་ དཔལ་ལྷན་ མཚུངས་མེད་མ།

ཁེངས་ལྷན་ ངལ་བ་ དག་དང་ནི།

ཁེངས་པ་མཉམ་ལྷན་ ཚུལ་མིན་དག།

དོར་བའི་ཚད་འདིས་ འགྲོགས་སྟུ་རྒྱ། ॥ ११

घराघराकारघरा घराभुजां भुजा महीं पा[43a]तुमहीनविक्रमाः ।

क्रमात्सहन्ते सहसा हतारयो रयोद्धुरा मानघुरावलम्बिनः ॥७२॥

འཇོན་མ་ འཇོན་པའི་ནམ་འཇོན་ འཇོན་མ་སྟོང་ནམས་ཀྱི།

ལག་པ་ནམ་གཞོན་ མི་དམན་ འབྲལ་ལ་ དག་འཇོམས་པ།

སྐར་བ་དང་ལྷན་ མཚོད་པའི་ ཁྱར་ནི་ བསྟེན་པ་ ཡིས།

ས་གཞི་ དག་ནི་རིམ་པས་ བསྐྱང་བར་ བཟོད་ པ་ཡིན། ॥ १२

आवृत्तिः प्रतिलोम्येन पादार्धश्लोकगोचरा ।
यमकं प्रतिलोमत्वात् प्रतिलोममिति स्मृतं ॥७३॥

कदःपुनः कौमल्यवत्तुः सुन्दःपुनःतु ।
पुनःपुनः वल्लभाःपुनः वल्लभाःपुनः ३ ।
तुन्दःपुनः पुनःपुनः वल्लभाःपुनःपुनः ।
पुनःपुनः वल्लभाःपुनः वल्लभाःपुनः ॥ ७३

या मताश कृतायासा सायाता कृशता मया ।
रमणारकता तेऽस्तु स्तुतेताकरणामर ॥७४॥

कदःपुनः वल्लभाःपुनः वल्लभाःपुनः ३ ।
तेःतेः वल्लभाःपुनः वल्लभाःपुनः ३ ।
तेःतेःपुनःपुनः वल्लभाःपुनःपुनः ।
वल्लभाःपुनः वल्लभाःपुनः वल्लभाःपुनः ॥ ७४

नादिनोऽमदनाधी स्वा न मे काचन कामिता ।
तामिका न च कामेन स्वाधीनादमनोदिना ॥७५॥

རྒྱ་ད་ལྷན་ བདག་ རང་གི་ རྩོམ་ །
 རྩོམ་མིན་ འདོད་པ་ འགའ་ ཡང་མེད་ །
 དུལ་བ་ འཛེམས་པའི་ འདོད་པ་ ཡིས་ །
 རང་དབང་ གདུང་བ་ དག་ཀྱང་ མེད་ ॥ ༧༧

यानमानय माराविकशो नानजनासना ।
 यामुदारशताधीनामायामयमनादि सा ॥७६॥

ཡིད་འགྲོ་ བདུད་སྦྱང་ ལྷག་མི་དམན་ །
 གང་ཞིག་ དབང་གུར་ རྩོམ་པོ་ འཛེམས་ །
 གང་ལ་ བདག་སང་ རྩོམ་པོ་ བརྒྱའི་ །
 དབང་གུར་ དེ་ལ་ རྩོན་ ཞེས་ རྩོམ་ ॥ ༧༩

सा दिनामयमायामा नाधीता शरदामुया ।
 नासनाजनना शोकविरामायनमानया ॥७७॥

རྩོན་ འདི་ ཡིས་ནི་ གཟིར་གུར་ཅིང་ །
 རྩོན་མི་ ཤེས་མ་ དེ་ཡིས་ བློ་ །

ཉིན་མེད་ཅི་ བང་དག་ མ་ཐོབ་ མེན །

ཐུང་ན་ འབྲེལ་ སྒྲན་ ཁེངས་མ་བྱེད ༥ ༧༧

वर्णानामेकरूपत्वं यद्येकान्तरमर्थ[43b]योः ।

गोमूत्रिकेति तत्प्राहुर्दुष्करं तद्विदो यथा ॥७८॥

གཡ་དེ་ བྱེད་ ཀྱི་ཡི་གེ་ རྣམས་ །

གཅིག་གིས་ བར་ཆོད་ གཟུགས་གཅིག་ཉིད །

དེ་ནི་ བྱ་དགའ་ དེ་ཉིད་ རིག་ །

བ་ལང་ གཅིན་ ཞེས་ སྒྲ་ རྩེ་ དཔེར ༥ ༧༨

मदनो मदिराक्षीणामपाङ्गाल्लोजये दयं ।

मदेनो यदि तत् क्षोणमनङ्गायाञ्जलिं दधे ॥७९॥

ཆང་འདྲའི་ མིག་ལྡན་ ཟུར་མིག་གི་ །

མཆོན་ གྱིས་ འདོད་པ་ འདི་ཀྱལ་ དེ་ །

གཡ་དེ་ བདག་ཀྱང་ སྒྲིག་ཟད་ ན །

འདོད་པ་ ལ་ནི་ ཐལ་མ་ སྒྲུར ༥ ༧༩

आहुरर्धभ्रमं नाम श्लोकार्धभ्रमणं यदि ।
तदिष्टं सर्वतोभद्रं भ्रमणं यदि सर्वतः ॥८०॥

གཡ་དེ་ རྩོགས་བཅད་ བྱིད་ འཁོར་ན།
བྱིད་དུ་ འཁོར་བ་ ཞེས་པར་ བཤྲོད།
གཡ་དེ་ ཀྱན་དུ་ འཁོར་བ་ན།
ཀྱན་དུ་བཟང་པོ་ ཞེས་པར་ འདོད། ॥ ८०

मनोभव तवानीकं नोदया य न मानिनी ।
भयादमेयामामावावयमेनोमया न ते ॥८१॥

ས་དུད་ ཡིད་བྱུང་ བྱིད་ དར་ བྱིར།
སྡེ་ནི་ བྲིངས་ལྡན་ མ་ཡིན་ མིན།
ཡང་ན་ ཚད་ དཔག་མེད་ ཉད་ཀྱི།
འཛིགས་ ལས་ བདག་ཅག་ སྡིག་པའི་དངོས། ॥ ८१

सामायामामायामासामारानायायानारामा ।
यानावारारवानायामायारामामारायामा ॥८२॥

རྟ་རིང་ མིན་པའི་ དགའ་མ་ གང་ ।
 བདུད་ བརྒྱར་ མ་ལྟུང་ བགོད་བརྒྱུག་མ་ ।
 སྒྲ་མེད་ སྒྲ་བས་ལྟན་ སྒྲ་གནས་དེ་ ।
 སྒྲ་དང་ལྟན་ ཅིག་ འཆི་ སྒྲ་དུའོ ॥ ༤༢

यः स्वरस्थानवर्णानां नियमो दुष्करेष्वसौ ।
 इष्टश्चतुःप्रभृत्येष दृश्यते सुकरः परः ॥८३॥

དབྱངས་དང་ གནས་དང་ ཡི་གེ་རྣམས་ ।
 དེས་པ་ གང་ འདི་ བྱ་དགའ་ལ་ ।
 བཞི་ལ་ སོགས་པ་ རབ་བསྟན་ འདི་ ।
 གཞན་ནི་ བྱ་སྒྲ་ དག་ཏ་ འདོད་ ॥ ༤༢

आम्नायानामाहान्त्या वाग्गीतीरोतीर्भीतीः प्रीतीः ।
 भोगो रोगो मोदो मोहो ध्येये धेच्छे देशे क्षेमे ॥८४॥

རིག་བྱེད་རྣམས་ མཐར་ སྒྲས་པའི་ཆོག་ ।
 སྒྲ་དང་ ཡམས་ནད་ འཛིགས་ དགའ་ ཡིས་ ।

ལོངས་སྤྱོད་ ཉན་དང་ དགའ་དང་ མིངས་ ।
དགོ་བའི་ ཡུལ་དུ་ སེམས་ འདོད་ཟུང་ ॥ ༥༭

क्षितिर्विजितिस्थितिर्विहिति [44a]व्रतरतयः परगतयः ।
उरु रुरुधुर्गुरु दुधुबुः स्वमरिकुलं युधि कुरवः ॥८५॥

ས་ལས་ རྣམ་ཀྱལ་ བདན་བ་ ལྷུབ་བྱེད་བའི་ ।
བདུལ་ཁྱུགས་ལ་དགའ་ མཆོག་ རྟོགས་ ཀྱ་ཅུ་བས་ ।
གཡུལ་དུ་ རང་གི་ དག་ཡི་ རིགས་རྣམས་ནི་ ।
ཆེ་བར་ བཀག་ཅིང་ ལྷི་བར་ འདར་བར་བྱས་ ॥ ༥༧

श्रीदीप्ति हीकीर्ती धीनीती गीःप्रीतीः ।
एधेते द्वे द्वे ते ये नेमे देवेशे ॥८६॥

དབལ་གཟི་ རོ་ཆ་ གྲགས་ དང་ ।
ཆོ་ལྷགས་ ཆོག་ དང་ དགའ་དག་ ।
ཁྱོད་ལ་ འཕེལ་བ་ གཉིས་གང་ ।
འདི་གཉིས་ ལྷ་དབང་ལ་ མེད་ ॥ ༥༩

सामायामामाया मासा मारानायायानारामा ।
यानाचारारावानाया माया रामा मारायामा ॥८७॥

ནད་རིང་ མིན་པའི་ དགའ་ མ་གང་ ।
བདུད་རྒྱུ་ མ་ལྷུང་ བཤོད་ བཞེག་མ་ ।
སྒྲ་མེད་ རྟོབས་ལྷན་ སྒྲུ་གནས་དེ་ ।
ཟླ་དང་ ལྷན་ཅིག་ འཆི་སྤྲད་དུའོ ॥ ८७

नयनानन्दजनने नक्षत्रगणशालिनि ।
अघने गगने दृष्टिरङ्गने दीयतां सकृत् ॥८८॥

འདྲན་བྱེད་ ཀྱན་དགའ་ སྒྲེད་བྱེད་མ་ ।
སྒྲུ་སྒྲར་ཆོག་ས་ནམས་དག་གི་གནས་ ।
སྒྲིན་མེད་ མཁའ་ལ་ ལུས་ཅན་མ་ ।
ལན་ཅིག་ མིག་ནི་ སྒྲིན་པར་མཛོད་ ॥ ८८

अलिनीलालकलतं कन्न हन्ति घनस्तनि ।
आननं नलिनच्छायनयनं शशिकान्ति ते ॥८९॥

རུ་སྐྱུག་ བྱིད་ བཞིང་ལན་བྱ་ཡི།
 འཁྲི་ཤིང་ བྱང་བ་ ལྷར་ སྤྱོ་ཞིང་།
 འདྲིན་བྱེད་ བསྐྱེ་བཞུགས་ བརྟན་ཅན།
 རྒྱ་ལྷར་ མཛེས་བས་ སུ་ མ་བཅོམ་ ॥ ༤༠

अनङ्गलङ्घनालम्बनानातङ्का सदङ्गना ।
 सदानघ सदानन्दनताङ्कासङ्गसङ्गतः ॥६०॥

དྲི་དུ་ སྤྱི་མེད་ ཀྱུན་དགའ་ མཆོག།
 ལྷས་ དུད་དག་ དང་ འགྲོགས་ལ་ ཆགས།
 བརྟན་མོ་ ལྷས་མེད་ཀྱིས་ འགྲོངས་དེ།
 འཛིགས་པ་ དུ་མས་ དེག་པར་གྱུར་ ॥ ༤༠

अगा गांगाङ्काकाकगाहकाऽधककाकहा ।
 अहा[44b]हांग खगाङ्कागकंकागखगकाकक ॥६१॥

དུ་དུ་མི་ སྤྱོགས་ མཁའ་ འགྲོས་ མཆོན།
 རི་འགྲོ་ དབང་ འཁྲིག་ལྷན་ མ་ཆགས།

सूरिः सुरासुरासारिसारः सारससारसाः ।
ससार सरसीः सीरी ससूरुः स सुरारसी ॥६४॥

མཁས་པ་ ལྷ་ དང་ ལྷ་མིན་ལ།
འགྲོ་ ལྷོབས་ལྷན་པའི་ གྱིན་ལེགས་ཅན།
ཆང་གི་རོ་ལྷན་ གཤེལ་འཛིན་ དེ།
བཞད་ཀྱི་སྒྲ་ལྷན་ མཚོ་རུ་ སོང་ ॥ ༧༥

नूनं नुन्नानि नानेन नाननेनाननानि नः ।
नानेना ननु नानूनेनैनेनानानिनो निनीः ॥६५॥

འདི་ཡིས་ བདག་ཅག་ནམས་ཀྱི་ བཞིན།
བཞིན་གྱིས་ ཇེས་པར་ མ་ བཅོམ་ མིན།
བདག་སྟོག་ མི་དམན་ འདི་དང་ སྟུང་།
ཇི་ལོ་ སྟེས་མིན་ ཇིག་ཅན་ ཇེས་ ॥ ༧༦

इति दुष्करमार्गेऽपि किञ्चिदादर्शितः क्रमः ।
प्रहेलिकाप्रकाराणां पुनरुद्दिश्यते गतिः ॥६६॥

དེ་ལྟར་ བྱ་ དཀའི་ལས་ལ་ ཡང་ །

རིས་པ་ ཅུང་ཟད་ ཀུན་དུ་ བཟུན་ །

གཤམ་ཆོག་དག་གི་ རྣམ་པ་ ཡི་ །

ལྷགས་ ཀྱང་ རབ་དུ་བཟུན་པར་བྱ་ ॥ ༢༩

क्रीडागोष्ठीविनोदेषु तज्ज्वैराकीर्णमन्त्रणे ।

परव्यामोहने चापि सोपयोगाः प्रहेलिकाः ॥६७॥

ཆེད་མེདི་ འདུན་ སར་ བཞད་གང་དང་ །

དེ་ཤེས་ ཆོགས་སུ་ གསང་ སྤྱོད་ དང་ །

པ་རེལ་ ཀུན་དུ་ མེདས་བྱེད་ལ་ །

གཤམ་ཆོག་དག་ རི་ ཉེར་མཁོ་ལྟན་ ॥ ༣༠

आहुः समागतां नाम गूढार्थां पदसन्धिना ।

वञ्चि[45a]ताऽन्यत्र रूढेन यत्र शब्देन वञ्चना ॥६८॥

ཆོག་མཚསས་ སྤྱར་བས་ དོན་སྤྱས་པ་ །

ཀུན་དུ་ ཆོགས་པ་ ཞེས་པར་ བཟོད་ །

གཞན་ལ་ གྲགས་པའི་སྒྲ་དག་གིས །
གང་དུ་ བསྐྱ་བ་ སྒྲ་བྱེད་ཉིད ༥ ༡༥

व्युत्क्रान्तातिव्यवहितप्रयोगान्मोहकारिणी ।
सा स्यात्प्रमुषिता यस्यां दुर्वोधार्था पदावली ॥६६॥

སྒྲོར་བ་ ཤིན་དུ་ འབྲུགས་པ་ ཡིས །
མེངས་བྱེད་ རིས་པ་ སྒྲ་ལ་བ་ སྒྲེ །
གང་ལ་ རོན་ རྟོགས་ དཀའ་བ་ ཡི །
ཆོག་གྲུང་ རེ་ནི་ རབ་བཅོས་ཡིན ༥ ༡༦

समानरूपा गौणार्थारोपितैर्ग्रथिता पदैः ।
परुषा लक्षणास्तित्वमात्रव्युत्पादितश्रुतिः ॥१००॥

བདགས་པའི་རོན་ བཞེད་ ཆོག་དག་གིས །
བསྐྱེབས་པ་དག་ནི་ མཐུན་པའི་གཟུགས །
མཚན་ཉིད་ ཡོད་ཅས་ ཇིས་ཆོག་ དང་ །
ལྷན་པའི་ཆོག་ ནི་ རུབ་མེ་འོ ༥ ༡༠༠

संख्याता नाम संख्यानं यत्र व्यामोहकारणं ।
अन्यथा भासते यत्र वाक्यार्थः सा प्रकल्पिता ॥१०१॥

गदः५ गदसः५ गदसः५ गदसः५ गदसः५ ।
गदः५ गदसः५ गदसः५ गदसः५ गदसः५ ।
गदः५ गदसः५ गदसः५ गदसः५ गदसः५ ।
गदः५ गदसः५ गदसः५ गदसः५ गदसः५ ॥ १०१ ॥

सा नामान्तरिता यस्यां नास्ति नानार्थकल्पना ।
निवृता निवृतान्यार्था तुल्यधर्मस्पृशा गिरा । १०२॥

गदः५ गदसः५ गदसः५ गदसः५ गदसः५ ।
गदसः५ गदः५ गदसः५ गदसः५ गदसः५ ।
गदसः५ गदसः५ गदसः५ गदसः५ गदसः५ ।
गदसः५ गदसः५ गदसः५ गदसः५ गदसः५ ॥ १०२ ॥

समानशब्दोपन्यस्तशब्दपर्यायसाधिता ।
संमूढा नाम या साक्षान्निर्दिष्टार्थापि मूढये ॥१०३॥

རྣམ་གྲངས་ སྒྲ་ནི་ བཀོད་པ་ ཡིས། །
 བསྒྲུབས་པ་དག་ནི་ མཐུན་པའི་སྒྲ། །
 བཤེན་མཁའ་ མཛོན་སྤྱུམ་ དོན་ བཐུན་ ཡང་། །
 མཛོངས་ ཡིར་ དེ་ནི་ མཛོངས་ ཞེས་བྱ། ॥ ༡༠༣

योगमालात्मकनाम यस्याः सा परिहारिकी ।
 एकच्छन्नाश्रितं व्यज्य यस्यामाश्रयगोपनं ॥१०४॥

བཤེན་པ་ སྒྲུང་སྤྱེང་ བཤེན་ཉིད་ཅན། །
 དེ་ནི་ མཛོངས་སྤྱུམ་འཕྲོག་ ཅེས་བྱ། །
 བཤེན་པ་ དེ་ནི་ སྤྱུམ་བྱས་དེ། །
 བཤེན་པ་ བསྒྲུབས་པ་ བཤེན་ བསྒྲུབས་པའི་ ॥ ༡༠༤

[45b]सा भवेदुभयच्छन्ना यस्यामुभयगोपनं ।
 संकीर्णा नाम सा यस्यां नानालक्षणसंकरः ॥१०५॥

བཤེན་པ་ བཤེན་པ་ སྤྱུམ་གྲུང་པ། །
 དེ་ནི་ བཤེན་པ་ བསྒྲུབས་པའི་། །

གང་ལ་ མཚན་ཉིད་ ལྷ་ཚོགས་ འདེས་ །
 དེ་ནི་ ཡོངས་སུ་འདེས་ ཞེས་བྱ་ ॥ ༡༠༣

एताः षोडश निर्दिष्टाः पूर्वाचार्यैः प्रहेलिकाः ।
 दुष्टप्रहेलिकाश्चान्यास्तैरधीताश्चतुर्दश ॥१०६॥

འདི་དག་ གཤམ་ཚོག་ བཅུ་དྲུག་ལྟེ་ །
 སྒྲོན་གྱི་སྒྲོབ་དཔོན་ནམས་ཀྱིས་ བསྟན་ །
 གཤམ་ཚོག་ ངན་པ་ གཞན་དག་ ཀྱང་ །
 བཅུ་བཞི་ དེ་དག་ནམས་ཀྱིས་ བཟློང་ ॥ ༡༠༥

दोषानपरिसंख्येयान् मन्यमाना वयं पुनः ।
 साध्वीरेवाभिधास्यामस्ता दुष्टा यास्त्वलक्षणाः ॥१०७॥

ངན་པ་ མཚན་ཉིད་མེད་ གང་དེ་ །
 སྒྲོན་གྱིས་ ཡོངས་བབྱང་བྱ་མིན་པར་ །
 རིག་ནས་ སྒྲར་ ཡང་ བདག་ཅག་གིས་ །
 ལེགས་པ་ ཁྱོད་ བཟློང་པར་བྱ་ ॥ ༡༠༦

न मयागोरसाभिह्वं चेतः कस्मात्प्रकुप्यसि ।
अस्थानतुं दितैरेभिरलमालोहितेक्षणे ॥१०८॥

བདག་གིས་ བ་ལང་ རོ་སེམས་གྱིས་ ।
ཤེས་པ་ མེད་ལ་ ཅི་སྒྲན་ ཁྱོེ།
གནས་མེན་དུ་བ་ འདི་ཡིས་ བེ།
ཅི་བྱེད་ ཀུན་དུ་ མིག་དམར་མ ॥ १०८

कुब्जामासेवमानस्य यथा ते वर्धते रतिः ।
नैवं निर्विशतो नारीममरखीविडम्बिनीः ॥१०९॥

ཀུབ་བཞེན་པ་ ཁྱེད་གྱི་ བེ།
དགའ་བ་ ཇི་ལྟར་ འཕེལ་གྱུར་པ།
འཆི་མེད་བྱ་མེར་ ཅི་འདི་མ།
མི་མོ་ སྒྲོན་པས་ དེ་ལྟ་མེན ॥ १०९

दण्डे चुम्यति पद्मिन्या हंसः कर्कशकण्ठके ।
मुखं बलगुरवं कुब्जं तुण्डेनाङ्गानि घट्टयन् ॥११०॥

ཡུ་བར་ རེ་བྱེད་ བད་ཅན་ གྱི །
 ངང་པ་ ཆོར་མ་ ཅུབ་པོ་ཅན །
 བཞིན་ལ་ སྒྲ་སྒྲན་ སྒྲིགས་བྱེད་ཅིང་ །
 ལུས་ནི་ འདར་བ་བྱེད་ཅིང་ མཆུས ༥ ७७

ख्यातयः कनि काले ते स्फातयः स्फीतवल्गवः ।
 चन्द्रे साक्षाद्भवन्त्य[46a]त्र तायवो मम धारिणः ॥१११॥

བུ་མོ་ མཛེས་མ་ བྱིད་ ཀང་པར །
 ཀང་གཏུབ་ རྒྱས་པ་ སྒྲ་སྒྲན་ སྒྲིགས །
 མཛེན་སྒྲུམ་ཉིད་དུ་གྱུར་པ་ འདིར །
 བདག་གི་སྒྲིག་ནི་ བདན་ མ་ཡིན ༥ ७७

अत्रोद्याने मया दृष्टा वल्लरी पञ्चपल्लवा ।
 पल्लवे पल्लवे चार्द्रा यस्याः कुसुममञ्जरी ॥११२॥

གང་གི་ ཡལ་འདབ་ ཡལ་འདབ་ལ །
 མེ་དོག་ སྒྲུམ་པའི་ དོག་པ་ཅན །

འབྲི་ཤིང་ ཡལ་འདབ་ ལྷ་བ་ རི །

སྤྱིད་མེས་ཚལ་ འདིར་ བདག་གིས་ མཐོང་ ॥ ११३

सुराः सुरालये स्वैरं भ्रमन्ति दशनाच्चिषा ।

मज्जन्त इव मत्तास्ते सौरे सरसि संप्रति ॥११३॥

ཆང་མ་རྣམས་ རི་ ཆང་ཁང་དུ །

ས་ཡི་འདྲ་གིས་ ཅི་ དགར་ འབྲམས་ །

ད་ནི་ མྱོས་བར་བྱས་ དེ་རྣམས་ །

ཆང་གི་ཐོང་བུར་ བྱིང་བ་ བཞིན་ ॥ ११३

नासिक्यमध्या परितश्चतुर्वर्णविभूषिता ।

अस्ति काचित्पुरी यस्यामष्टवर्णाह्वया नृपाः ॥११४॥

སྤྱི་ལྷན་དབྲས་གནས་ གསལ་བྱིད་ བཞིས་ །

ཡོངས་སུ་རྣམ་བར་བརྒྱན་བ་ཡི །

གྲོང་བྱིར་ འགའ་ ཡོད་ འགའ་ཞིག་ན །

མི་བདག་ ཡིག་ བརྒྱད་མིང་ཅན་ ཡོད་ ॥ ११४

गिरा स्वलन्त्या नम्रेण शिरसा दीनया दृशा ।
तिष्ठन्तमपि सोत्कम्प्यं वृद्धे मां नानुकम्पसे ॥११५॥

कवा'क्षस' रव'दु'असु'व' ५८ ।
सवो'वो' दु'उ' ५९ ।
अदु'वा' १०८ ।
वद'वा' १०९ ।
वद'वा' ११० ॥ २२४ ॥

आदौ राजेत्यधीराक्षि पार्थिवः कोपि गीयते ।
सनातनश्च नैवासौ राजा नैव सनातनः ॥११६॥

सि'वा' १११ ।
५८'वो' ११२ ।
५९'वो' ११३ ।
११४ ॥ २२५ ॥

हृतद्रव्यं जनं त्यक्त्वा धनवन्तं व्रजन्ति काः ।
[46b]नानाभङ्गिशताकृष्टलोका वैश्या न दुर्धराः ॥११७॥

རྫོག་པུ་མི་ནི་བདང་བྱས་ནས།
 རྫོག་པུ་ནས་ཀྱི་བཞུད་པ་གང་།
 སྒྲ་ཆོག་ཀྱི་བཞུས་འཛིག་དེན་འགྲུགས།
 གཟུང་དགའ་སྒྲ་འཛོང་མ་ཡིན་ནོ། ॥ ११७

जितप्रकृष्टकेशाख्यो यस्तवाभूमिसाह्वयः ।
 स मामद्य प्रभूतोत्कं करोति कलभाषिणि ॥११८॥

བྱད་ཀྱི་ས་མིན་མིང་འབྱུན་གང་།
 རབ་གྱུར་སྒྲ་མིང་ཅན་ལས་ཀྱལ།
 དེ་ཡིས་དེང་བདག་སྒྲ་ཏུ་ནི།
 སྒྲ་པུ་བྱད་དོ་སྒྲ་སྒྲོགས་མ། ॥ ११८

शयनीये परावृत्य शयितौ कामिनौ रुषा ।
 तथैव शयितौ रागात् स्वैरं मुखमचुम्बताम् ॥११९॥

འདོད་པུ་དག་ནི་སལ་སྒྲ་ལ།
 བྱོ་བས་ཕྱིར་བཞུག་ཉལ་བར་གྱུར།

ཆགས་པས་ དེ་བཞིན་ཉིད་ ཉལ་དེ །
དལ་བྱ་ཡིས་ནི་ ཁ་དག་ སྦྱར ༥ ११७

विजितान्नभवद्वेषिगुरुपादहतो जनः ।
हिमापहामित्रधरैर्व्याप्तं व्योमाभिनन्दति ॥१२०॥

བྱ་རྒྱལ་ ཟས་སྦྱས་ དག་ཡི་ནི །
སྤྱ་མའི་འོད་ཀྱིས་ བཅོས་ སྦྱ་བོ །
ཁ་འཛོམས་ གྲོགས་མིན་ འཛོན་པ་ཡིས །
ཁྱབ་པའི་མཁའ་ལ་ མཛོན་པར་དགའ ༥ ११८

न स्पृशत्यायुधं जातु न स्त्रीणां स्तनमण्डलं ।
अमनुष्यस्य कस्यापि हस्तोयं न किलाफलः ॥१२१॥

ནས་ཡང་ མཚོན་ དང་ བྱད་མེད་ཀྱི །
རྒྱ་མའི་ དྲླེལ་འཁོར་ལ་ མ་རེག །
མི་མ་ཡིན་པ་ འགའ་ཞིག་གི །
ལག་ནི་ འབྲས་མེད་ མིན་ནོ ལོ༥ ११९

རེ་ནི་ མིང་དུ་ འདུས་པ་ བསྐྱེས།
 བསྐྱེས་པ་ཡི་ནི་ གཞུགས་དང་ལྡན།
 རེ་བཞིན་ཉིད་དུ་ གཞན་ གྱི་ ཡང་།
 འདུས་པའི་ རིས་པ་ ཤེས་པར་བྱ། ॥ ༢༣ ॥

अपार्थं व्यर्थमेकार्थं ससंशयमपक्रमं ।
 शब्दहीनं यतिभ्रष्टं भिन्नवृत्तं विसन्धिकं ॥ १२५ ॥

རོན་ཉམས་ རོན་འགལ་ རོན་གཅིག་པ།
 བྲེ་ཚེས་ཅན་ དང་ རིས་པ་ཉམས།
 སྒྲི་དམན་ ངལ་བསོ་ ཉམས་པ་ དང་།
 སྒྲིབ་སྒྲོར་ཉམས་ དང་ མཚམས་སྒྲོར་བྲལ། ॥ ༢༣ ॥

देशकालकलालोकन्यायागमविरोधि च ।
 इति दोषा दशैवैते वर्ज्याः काव्येषु सूरिभिः ॥ १२६ ॥

ཡུལ་དུས་སྒྲི་ཅལ་ འཛིག་དེན་ དང་།
 ལྷང་རིགས་དག་ དང་ འགལ་བ་སྡེ།

སྒྲིན་ བཅུ་ དེ་དག་ སྒྲིན་ངག་ལ།

སྒྲིན་ངག་མཁན་གྱིས་ སྤང་བར་བྱ། ॥ ११७

प्रतिज्ञाहेतुदृष्टान्तहानिर्दोषो न *चेत्यसौ ।

विचारः कर्कशः प्रायस्तेन लीढेन कि फलं ॥१२७॥

དམ་བཅུར་ གཏན་ཚིག་ དག་ ཉམས་པ།

ཞེས་པ་ འདི་ ཡང་ སྒྲིན་མིན་ནས།

པལ་ཆེར་ དབྱུད་པ་ དཀའ་བ་ཉིད།

སྤང་བ་ དེ་ཡིས་ འབྲས་བྱ་ ཅི། ॥ ११८

समुदायार्थशून्यं यत्तदपार्थमितीष्यते ।

तन्मत्तोन्मत्तबालानामुक्तेरन्यत्र दुष्यति ॥१२८॥

ཚིགས་པའི་དོན་ གྱིས་ སྤང་བ་ གང་།

དེ་ནི་ དོན་ ཉམས་ ཞེས་པར་ འདོད།

སྒྲིན་པ་ སྒྲིན་པ་ གྱིས་པ་ཡིས།

བརྗོད་ ལས་ གཞན་ལ་ དེ་ སྒྲིན་ནོ། ॥ ११९

समुद्रः पीयते सोयमहमद्य जरातुरः ।
अमी गर्जन्ति जी[47b]मृता हरेरैरावतः प्रियः ॥१२६॥

ॠ॒दि॒र्दि॒ कृ॒त्स॒र्के॒ ॠ॒ष्टु॒द॒ष्टे॒दे॒ ।
व॒द॒वा॒ ॠ॒ ॠ॒दि॒द॒ कृ॒त्स॒र्के॒ ॠ॒ष्टु॒द॒ष्टे॒दे॒ ।
ॠ॒ष्टु॒द॒ष्टे॒दे॒ ॠ॒ष्टु॒द॒ष्टे॒दे॒ ॠ॒ष्टु॒द॒ष्टे॒दे॒ ।
ॠ॒ष्टु॒द॒ष्टे॒दे॒ ॠ॒ष्टु॒द॒ष्टे॒दे॒ ॠ॒ष्टु॒द॒ष्टे॒दे॒ ॥ १२७ ॥

इदमस्वस्थचित्तानामभिधानमनिन्दितं ।
इतरत्र कविः को वा प्रयुञ्जीतैवमादिकं ॥१२८॥

ॠ॒दि॒ ॠ॒ष्टु॒द॒ष्टे॒दे॒ ॠ॒ष्टु॒द॒ष्टे॒दे॒ ॠ॒ष्टु॒द॒ष्टे॒दे॒ ।
ॠ॒ष्टु॒द॒ष्टे॒दे॒ ॠ॒ष्टु॒द॒ष्टे॒दे॒ ॠ॒ष्टु॒द॒ष्टे॒दे॒ ।
ॠ॒ष्टु॒द॒ष्टे॒दे॒ ॠ॒ष्टु॒द॒ष्टे॒दे॒ ॠ॒ष्टु॒द॒ष्टे॒दे॒ ।
ॠ॒ष्टु॒द॒ष्टे॒दे॒ ॠ॒ष्टु॒द॒ष्टे॒दे॒ ॠ॒ष्टु॒द॒ष्टे॒दे॒ ॥ १२९ ॥

एकवाक्ये प्रबन्धे वा पूर्वापरपराहतं ।
विरुद्धार्थतया व्यर्थमिति दोषेषु पठ्यते ॥१३०॥

ངག་གཅིག་གས་ནི་རྒྱན་ལ་ཡང་།
 སྒྲ་མ་ཕྱི་མ་གཞན་འཛེམས་པ་།
 འགལ་བའི་དོན་ཅན་ཉིད་ཀྱི་སྒྲིན་།
 དོན་འགལ་ཞེས་པར་རབ་དུ་བཞིན་॥ १३१

जहि शत्रुकुलं कृत्स्नं जय विश्वंभरामिमां ।
 न च ते कोपि विद्वेष्टा सर्वभूतानुकम्पिनः ॥१३२॥

དག་རིགས་མཐའ་དག་འཛེམས་པ་དང་།
 སྒྲ་ཆོགས་ཁར་འདི་རྒྱལ་གྱུར་ཅིག་།
 འགྲུང་པོ་རྒྱན་ལ་བཅི་བ་ཅན་།
 ཁྱིའི་ལ་དག་ནི་སྒྲ་ཡང་མེད་॥ १३२

अस्ति काविदवस्था सा साभिपंगस्य चेतसः ।
 यस्यां भवेदभिमतता विरुद्धार्थापि भारती ॥१३३॥

མངོན་པར་ཆགས་ལྡན་སེམས་ལ་ནི་།
 སྒྲ་བས་དེ་འགའ་ཞིག་ཡོད་པས་ན་།

གང་ལ འགལ་བའི་ རོན་ཅན་ གྱི །

ཆོག་ ཀྱང་ མངོན་པར་འདོད་པར་འགྱུར ༥ १३३

परदाराभिलाषो मे कथमार्यस्य युज्यते ।

पिबामि तरलन्तस्याः कदा नु दशनच्छदं ॥१३४॥

གཞན་གྱི་ བྱད་མེད་ལ་ སྤེད་པ །

འཕགས་པ་དག་གི་ ག་ལ་ རིགས །

དེ་ཡི་ སོ་སྒྲིབ་ གཡོ་བ་ དག །

བདག་ནི་ བས་ཞིག་ འཁྱུང་འགྱུར་རམ ༥ १३४

अविशेषेण पूर्वोक्तं यदि भूयोपि कीर्त्यते ।

अर्थतः शब्दतो वापि तदेकार्थं मतं यथा ॥१३५॥

རོན་ཅིད་ དམ་ནི་ སྒྲ་ལ་ ཡང་ །

ཁྱད་པར་ མེད་པ་ སྤར་ བཟོད་པ །

གལ་ནི་ སྒྲ་ཡང་ རབ་བསྒྲགས་པ །

དེ་ ནི་ རོན་ གཞིག་པར་ འདོད་ དཔེར ༥ १३५

उत्का[48a]मुन्मनयन्त्येते बालां तदलकत्विषः ।
अम्भोधरास्तडित्वन्तो गम्भीराः स्तनयिज्ञवः ॥१३६॥

शेद'प' शेद'पुद' सु'ख'क'स' ।
दे'यी' ल'क'पुद' ले'दे'उ'उ' ।
कु'ल'ई'न' श्लो'ग'द'द'ल'क'प'क' ।
उ'व'ख' श्ल'श्लो'ग'स' ल'दे'द'ग'ग' ॥ १३६

अनुकम्पाद्यतिशयो यदि कश्चिद्विवक्ष्यते ।
न दोषः पुनरुक्तोपि प्रत्युतेयमलंकृतिः ॥१३७॥

ई'स'सु'प'क' श्लो'ग'स' ल'द'प'द' ल'स' ।
ग'ल'दे' ल'ग'ल'ल'ल'ग' व'ई'द' ल'दे'द' क' ।
ल'द' व'ई'द' ल'श्लो'ग'स' श्लो'क'ल'दे'दे' ।
ल'दे'दे' ल'ग'द' ल'ल'ग'स'प'ल'ल'क' ॥ १३७

हन्यते सा वरारोहा स्मरेणाकाण्डवैरिणा ।
हन्यत चारुसर्वाङ्गी हन्यते मञ्जुभाषिणी ॥१३८॥

འདོད་པ་ སྐབས་ མིན་ ཁན་པ་ཡིས།
 བུད་མེད་ མཆོག་ དེ་ བཅོམ་པར་གྱུར།
 ཡན་ལག་ཀུན་མཛེས་ བཅོམ་པར་གྱུར།
 འཇམ་པར་སྒྲིགས་མ་ བཅོམ་པར་གྱུར། ॥ 232

निष्कर्णयार्थम्प्रयुक्तानि संशयं जनयन्ति चेत् ।
 वचांसि दोष एवासौ ससंशय इति स्मृतः ॥१३६॥

དེས་པའི་དོན་དུ་ རབ་སྐྱར་བའི།
 ཆོག་རྣམས་ཉིད་ཀྱིས་ གཡ་དེ་ན།
 བེ་ཆོས་ སྐྱེད་པར་བྱེད་ ན་ འདི།
 བེ་ཆོས་ཅན་ ཞིས་ རབ་དུ་བཤད། ॥ 233

मनोरथप्रियालोकरसलोलक्षणे सखि ।
 आराद्धृत्तिरसौ माता न क्षमा द्रष्टुमीदृशं ॥१४०॥

རེ་འདོད་ དགའ་བ་ ལྷ་བ་ ཡི།
 རོ་ལ་ མིག་གཡོ་ གྲོགས་མོ་དང་།

ཀྱང་ན་ འདྲུག་པའི་ མ་མ་ འདིས།
འདི་འདྲ་ བཟུ་བར་ བཟོད་མ་ཡིན། ॥ ༡༥༠

ईदृशं संशयायैव यदि जातु प्रयुज्यते ।
स्यादलंकार एवासौ न दोषस्तत्र तद्यथा ॥१४१॥

འདི་འདྲ་ བཟོ་མ་ སྤྲད་ ཉིད་དུ།
གལ་ཏེ་ འགའ་ཞིག་ རབ་སྤྲར་ན།
འདི་ནི་ ཀྱན་ ཉིད་དུ་ འགྱུར་གྱི།
དེ་ལ་ སྟོན་མེད་ འདི་ལྟ་སྟེ། ॥ ༡༥༡

पश्याम्यनङ्गजातङ्कलङ्घितां तामनिन्दिताम् ।
कालेनैव क[48b]ठोरेण ग्रस्तां किं नस्त्वदाशया ॥१४२॥

ལུས་སྦྱིས་ མིན་པའི་ གདུང་བ་ཡི།
ཟིལ་གྱིས་ མནན་ཅིང་ དུས་ ཅུབ་མོས།
ཟོས་པའི་ མ་སྤྲད་མ་ དེ་མཐོང་།
སྟོན་ལ་ བདག་གི་ དེ་བས་ ཅི། ॥ ༡༥༢

འགོ་བ་ནམས་ཀྱི་ གནས་པ་ དང་ ।

སྤྱལ་དང་ འཛིག་ཀྱི་ མ་སྦྱིས་པ་ ।

བདེ་འབྱུང་ སྤོང་མེད་ ཅུ་སྦྱིས་ཀྱི་ ।

སྦྱི་གནས་ཅན་ གྱིས་ ཁྱོད་ནམས་ སྤངས ॥ ༡༥༣

यत्नः सम्बन्धविज्ञानहेतुः कोपि कृतो यदि ।

क्रमलङ्घनमप्याहुर्न दोषं सूरयो यथा ॥१४६॥

འབྲེལ་པ་ ཇིས་པར་ཤེས་པའི་ ཀྱུར་ ।

གང་ཡང་ གལ་དེ་ འབད་ བྱས་ན་ ।

རིས་པ་ འདས་ ཀྱང་ སྦྱོན་མེན་པར་ ।

མཁས་པ་ནམས་ བྱི་ སྤྱི་སྦྱི་ དཔེར ॥ ༡༥༤

बन्धुत्यागस्तनुत्यागो देशत्याग इति त्रिषु ।

आद्यान्तावायतक्लेशौ मध्यमः क्षणिकज्वरः ॥१४७॥

གཉེན་གཏོང་པ་ དང་ ལུས་གཏོང་དང་ ।

ཡུལ་གཏོང་ ཞིས་པ་ གསུམ་པོ་ ལ་ ।

དང་པོ་ མཐའ་མ་ ཉན་མེད་ས་ རིང་ །
 བར་མ་ སྒྲན་ཅིག་ གཏུང་བ་འོ ༥ ༡༧༧

शब्दहीनमनालक्ष्यलक्ष्यलक्ष्यणपद्धतिः ।
 पदप्रयोगो शिष्टेष्टो न शिष्टेष्टस्तु दुष्यति ॥१४८॥

མཚན་བྱ་ མཚན་ཉིད་ ལམ་ མ་མཚན་ །
 ཆོག་སྒྲོང་ མཚོག་གིས་ མི་འདོད་པ་ །
 སྒྲ་ཉམས་ ཡིན་དེ་ མཚོག་ནམས་ དག །
 འདོད་པ་ ཉིད་ནི་ སྒྲོན་ མ་ཡིན་ ༥ ༡༧༨

[49a]अवते भवते बाहुर्महीमणर्वशकरीं ।
 महाराजन्नजिज्ञासौ नास्तीत्यासां गिरां रसः ॥१४९॥

མ་གཞི་ ཐུ་མཚོའི་ སྒྲེ་རགས་ཅན་ །
 ཐུལ་ཆེན་ བྱིད་ལ་ དཔུང་པ་ སྒྲུང་ །
 ཞེས་པ་ ཤེས་འདོད་ མེད་པས་ན་ །
 ཆོག་ འདི་ལ་ ནི་ ཉམས་ ཡིད་མིན་ ༥ ༡༧༩

दक्षिणाद्रेरुपसरन् मारुतश्चूतपादपान् ।

कुरुते ललिताधूतप्रवालांकुरुशोभिनः ॥१५०॥

ཨོ་ཡི་ རི་ལས་ ཉེར་བདུད་བའི་ ।

རྒྱང་གིས་ རྒྱ་ཁྲི་ཀང་འབྱུང་ནི་ ।

རོལ་བར་ སྒྲིད་བ་ ཁྱི་རུ་ ཡི་ ।

སྐྱ་གྱ་ མཛེས་དང་ལྷན་བར་བྱེད་ ॥ १५०

इत्यादिशास्त्रमाहात्म्यदर्शनालसचेतसां ।

अपभाषणवद्भाति न च सौभाग्यमुज्झति ॥१५१॥

ཅས་སྒྲིགས་ བཟུན་བཅོས་ བདག་ཉིད་ཆེ་ ।

ལྷ་ལ་ གཡེལ་བའི་ སེམས་ལྷན་བ་ ।

སྒྲི་ཉམས་ བཞིན་དུ་ སྒྲང་མེད་ ཀྱི་ ।

སྐལ་བཟང་ ཉིད་ནི་ གཏོང་ས་ཡིན་ ॥ १५१

श्लोकेषु नियतस्थानं पदच्छेदं यतिं विदुः ।

तदपेतं यतिभ्रष्टं श्रवणोद्वेजनं यथा ॥१५२॥

ཚེགས་བཅད་རྣམས་ལ་ ཇེས་པའི་གནས།
 ཚེག་གི་གཅོད་མཚམས་ ཇལ་བསོ་རིག།
 དེ་ཉམས་ གཅོད་མཚམས་ ཉམས་པ་ སྟེ།
 ཉན་པ་ དགའ་མིན་ སྟེད་དེ་ དཔེར། ॥ ༡༥༣

स्त्रीणां संगीतविधिमयमादित्यवंशो नरेन्द्रः
 पश्यत्यक्लिष्टरसमिह शिष्टैरमेत्यादि दुष्टं ।
 कार्याकार्याण्ययमविकलान्यागमेनैव पश्यन्
 वश्यामुर्वीं वहति नृप इत्यस्ति चोप प्रयोगः ॥१५३॥

བུད་མེད་ རྣམས་ཀྱི་ ཡང་དག་བཟོད་པའི་ཚེག་ རོ་ཉམས་
མེད་པ་འདིར།
 མཚེག་རྣམས་ དང་ འགྲོགས་ མི་དབང་ ཉི་མའི་རིགས་
འདིས་ ལྷ་བྱེད་ ལ་སོགས་ སྟེན།
 བྱ་དང་ བྱ་མིན་ མ་ཚང་མེད་ལ་ ལྷང་ ཉིད་ཀྱིས་ནི་
ལྷ་བྱེད་ཅིང་།
 མི་བདག་ འདི་ཡིས་ དབང་གུར་ མ་འཛིན་
ཅེས་པ་ དེ་ལྟར་ སྟེར་བ་ཡིད། ॥ ༡༥༣

लुप्ते पदान्ते [49b]शिष्टस्य पदत्वं निश्चितं यथा ।
तथा सन्धिविकारान्तं पदमेवेति वर्ण्यते ॥१५४॥

ई०ङ्ग० ङे०ग०स०घ०र० श्रु०स०घ०य० ।
ङ्ग०ग०स० ङे०ग०ङ्गि०र०रु० दे०स०घ० ।
दे०घ०ङ्गि०र० स०ङ्ग०स०स०श्रु०र० ङ्ग०स०रु०गु०र० स०घ०र० ।
ङ्ग०ग०ङ्गि०र० दे०स०ङ्गि०र० घ०ङ्गि०र०घ०य०ङ्गि०र० ॥ १५५ ॥

तथापि कटु कर्णानां कवयो न प्रयुज्यते ।
ध्वजिनी तस्य राज्ञः केतूदस्तजलदेत्यदः ॥१५६॥

दे०ङ्ग०ङ्गि०र० य०ङ्ग० ङ्ग०घ०र० रु०गु० ।
ङ्ग०ङ्ग०ङ्ग०स०ङ्ग०ङ्गि०र० ङ्ग०स०स०स०श्रु०र०रु० ।
श्रु०य०घ० दे०य० श्रु०य०स०ङ्ग०ङ्गि०र० ।
दे०ग०ग०ङ्गि०र० रु०ङ्गि०र० घ०ङ्गि०र० दे०स० र०ङ्गि०र० ॥ १५७ ॥

वर्णानां न्यूनताधिक्ये गुरुलघ्वयथास्थितिः ।
यत्र तद्विघ्नवृत्तं स्यादेष दोषः सुनिन्दितः ॥१५८॥

གང་དུ་ ཡི་གེ་ཆད་ལྷག་དང་ ।
 ལྷི་ཡང་ ཇི་ལྷ་བཞིན་ མི་གནས་ ।
 དེ་ནི་ སྒྲུབ་སྒྲུབ་ ཉམས་པ་ སྒྲེ་ ।
 སྒྲོན་ འདི་ སྒྲིན་དུ་ སྒྲུབ་པའོ ॥ १४७

इन्दुपादाः शिशिराः स्पृशन्तीत्यूनवर्णता ।
 सहकारस्य किसलयान्यार्द्राणीत्यधिकाक्षरम् ॥१५७॥

སྒྲིབ་པའི་འོད་ཟེར་ བསིལ་བས་ ।
 རིག་ཅས་ ཡི་གེ་ ཉུང་བ་ཉིད་ ।
 ས་ཏ་ཀྱ་རའི་ལོ་འདབ་ གསར་པ་ནམས་ ।
 སྒྲུམ་ཞེས་ ཡི་གེ་ ལྷག་པའོ ॥ १४८

कामेन वाणा निशिता वियुक्ता मृगेक्षणास्वित्ययथागुरुत्वं ।
 मदनवाणा निशिताः पतन्ति मृगेक्षणास्वित्ययथालघुत्वं ॥१५८॥

འོད་ཟེར་བས་ མདའ་ཚོན་ རི་དགས་མིག་ཅན་ལ་ ।
 རྒྱས་པར་འཕངས་ཞེས་ ལྷི་བ་ ཇི་བཞིན་མིན་ ।

མཛེས་པའི་མིག་ཅན་ ནག་ལ་ མྱོས་བྱེད་ཀྱི །
མདའ་སྒྲུན་ ལྷུང་ ཞེས་ ཡང་བ་ཇི་བཞིན་མིན་ ॥ ༡༥༤

न संहितां विवक्षामीत्यसन्धानं पदेषु यत् ।
तद्विसन्धीति निर्दिष्टं न प्रगृह्यादिहेतुकं ॥१५६॥

བསྐྱུས་པ་ བཛྲོད་པར་ མི་འདོད་ཅེས་ །
ཆོག་ལ་ མཚམས་སྦྱོར་མེད་པ་ གང་ །
ཡ་ཤེས་ ལ་སོགས་ རྒྱ་མེད་པ་ །
དེ་ནི་ མཚམས་སྦྱོར་བྲལ་ ཞེས་ བསྒྲན་ ॥ ༡༥༥

मन्दानिलेन चरता अङ्गनागण्डमण्डले ।
लुप्तमुद्रेदि [50a]धर्माग्मो नभस्यस्मन्मनस्यपि ॥१६०॥

མཁའ་ ནང་ བདག་གི་ཡིད་ལ་ ཡང་ །
ལྷུང་ནི་ ནལ་བྱ་ རྒྱ་བ་ ཡིས་ །
བྱད་མེད་ འགྲམ་པའི་ ནཀྱིལ་འཁོར་ལ་ །
རྒྱལ་གྱི་ཆུ་རྒྱས་ མེལ་བར་བྱེད་ ॥ ༡༥༦

[मानेर्ष्ये इह शीर्यते स्त्रीणां हिमऋतौ प्रिये ।]
आसु रात्रिष्विति प्राज्ञैरज्ञातं न्यङ्गमीदृशं ॥१६१॥

. |
. |

सकृन्मो र्द्वैत्य उषा र्द्वैत्य ।
सामसायसा भ्रमसायसा र्द्वैत्यमिमे ॥ १६२

देशोऽद्रिवनराष्ट्रादिः कालो रात्रिन्दिवर्त्तवः ।
नृत्यगीतप्रभृतयः कला कामार्थसंश्रयाः ॥१६२॥

र्द्वैत्यसा युवा र्द्वैत्यसा युवा ।
र्द्वैत्य सकृन् द्रुसा द्रुसा युवा र्द्वैत्यसा द्रुसा ।
र्द्वैत्यसा र्द्वैत्यसा र्द्वैत्यसा यी ।
सायसा युवा र्द्वैत्यसा युवा ॥ १६३

चराचराणां भूतानां प्रवृत्तिलोकसंज्ञिता ।
हेतुविद्यात्मको न्यायः सस्मृतिः श्रुतिरागमः ॥१६३॥

འབྲུང་པོ་ རྒྱ་ དང་ མི་རྒྱ་བའི།
 འཇུག་པ་ འཇིག་རྟེན་ མིང་ཅན་ནོ།
 རིགས་པ་ བཀྲན་ཆོགས་ རིག་ བཀྲག་ཉིད།
 བྲོས་ བཅས་ བསྐྱངས་པ་ བྱང་ ཉིད་དེ། ॥ १६३

तेषु तेषु यथारूढं यदि किञ्चित्प्रवर्त्तते ।
 कवेः प्रमादाद्देशादिविरोधीत्येतदुच्यते ॥१६४॥

དེ་དེར་ ཇི་ལྟར་ བྲགས་པ་ བཞིན།
 མིན་པར་ བལ་དེ་ རབ་བྱགས་ན།
 ལྷན་ངག་མཁན་པོ་ བག་མེད་ ལས།
 འདི་ནི་ ཡུལ་ མོགས་ འགལ་ཞེས་ བཟོད། ॥ १६ॣ

कर्पूरपादपास्पर्शी सुरभिर्मलयानिलः ।
 कलिङ्गवनसंभूता मृगप्रायमतंगजा ॥१६५॥

བ་ཡུར་ ཀླང་འབྲུང་ལ་ རིག་བའི།
 མ་ལ་ལ་ རྒྱང་ སྤྱི་བཟང་ཅན།

ཀ་ལི་རྒྱ་ ཡི་ རྒྱ་ས་སྤྱི་ས་པའི།

སྤྱི་པོ་ རྒྱ་ནི་ རི་རྒྱ་ས་ སང་ ॥ १६४

चोलाः कालागुरुश्यामः कावेरीतीरभूमयः ।

इति देशविरोधिन्या वाचः प्रस्थानमीदृशम् ॥१६६॥

ཅོ་ལ་ཀྱ་བོ་རི་ རི་རྒྱ་ས་སྤྱི།

ཨ་ཀ་རུ་ རི་རྒྱ་པོ་ཕྱོ།

ཞེས་པ་ ཡུལ་ རང་ རྒྱ་ལ་པ་ཡི།

ཆོག་གི་ རྒྱ་ལ་ རི་རྒྱ་ རྩེ། ॥ १६५

पद्मिनी नक्तमुन्निद्रा स्फुटत्यह्नि कुमुद्वती ।

मधुरत्फुल्लनिचुलो निदाघो[50b]मेघदुर्दिनः ॥१६७॥

པདྨ་ཅན་ནི་ སའྲན་མོ་ ཀྱིས།

ཉིན་པར་ ཀྱ་སྤྱད་ལྷན་པ་ གསལ།

དཔྱིད་ནི་ རི་ཅུ་ལ་ རབ་ཀྱིས།

སོས་ཀ་ རྒྱ་ནི་ སྤྱིན་ གྱིས་ གདེབས། ॥ १६६

श्रव्यहंसगिरो वर्षाः शरदामत्तवर्हिणी ।

हेमन्तो निर्मलादित्यः शिशिरः श्लाघ्यचन्दनः ॥१६८॥

८८. घ० ॥ १०. ॥ १०. ॥ १०. ॥ १०. ॥

१०. ॥ १०. ॥ १०. ॥ १०. ॥ १०. ॥

१०. ॥ १०. ॥ १०. ॥ १०. ॥ १०. ॥

१०. ॥ १०. ॥ १०. ॥ १०. ॥ १०. ॥

इति कालविरोधस्य दर्शिता गतिरीदृशी ।

मार्गः कलाविरोधस्य मनागुद्दिश्यते यथा ॥१६९॥

१०. ॥ १०. ॥ १०. ॥ १०. ॥ १०. ॥

१०. ॥ १०. ॥ १०. ॥ १०. ॥ १०. ॥

१०. ॥ १०. ॥ १०. ॥ १०. ॥ १०. ॥

१०. ॥ १०. ॥ १०. ॥ १०. ॥ १०. ॥

वीरशृङ्गारयोर्भावौ स्थायिनौ क्रोधविस्मयौ ।

पूष्णसप्तस्वरः सोयं भिन्नमार्गः प्रवर्तते ॥१७०॥

དཔའ་ བང་ སྒྲིག་པའི་ཡིད་བྱེད་ཀྱི།
 གནས་ཅན་ ཁྱོད་ བང་ ཡ་མཚན་ནོ།
 དབྱངས་ བདུན་ རྗེས་པ་ འདི་དག་ནི།
 བ་དད་ ལས་དུ་ རབ་དུ་འཇུག། २००

इत्थं कलाचतुःपष्टौ विरोधः साधु नीयतां ।
 तस्याः कलापरिच्छेदे रूपमाविर्भविष्यति ॥१७१॥

འདི་ལྟར་ སྐྱུ་ཙམ་དུག་ཅུ་བཞིར།
 འགལ་བ་ ལེགས་པར་ རྗེས་པར་བྱ།
 སྐྱུ་ཙམ་ ཡིངས་སུ་བཅད་པ་ལས།
 དེ་ཡི་རང་བཞིན་ གསལ་བར་འགྱུར། ॥ २०१

आधूतकेशरो हस्ती तीक्ष्णशृंगस्तुरंगमः ।
 गुरुसारोयमेरण्डो निःसारः खदिरद्रुमः ॥१७२॥

སྒྲིང་པོ་དག་ནི་ རལ་བ་ གཡོ།
 རྟ་ཡི་རྩ་ནི་ རོ་བ་ ཡིན།

ཨེ་རུ་འདི་ སྒྲིང་པོ་ ལྷི།

སྒྲིང་ལྷིང་ ལྷིན་པ་ སྒྲིང་པོ་མེད། ॥ 203

इति लौकिक एवायं विरोधः सर्वगर्हितः ।

विरोधो हेतुविद्यासु न्यायाख्यासु निदर्श्यते ॥१७३॥

ཅེས་པ་ འདི་ནི་ འཇིག་རྟེན་པ།

ཉིད་ དང་ འགལ་པ་ ཀུན་གྱིས་སྤྲད།

རིགས་པ་ ཞིས་བྱ་ གཏན་ཚིགས་ཀྱི།

རིག་པ་དང་འགལ་ བཤད་པར་བྱ། ॥ 203

सुगतैः संस्कृताभङ्गः सत्यमेवोदितोऽपिचेत् ।

तथापि सा चकोराक्षी स्थितैवाद्यापि मे हृदि ॥१७४॥

བདེ་གཤེགས་ འདུས་བྱས་ འཇིག་པར་ནི།

གསུངས་པ་ བདེན་མེད་ དེ་ལྟ་ནའང་།

ཙ་ཀོ་ར་ཡི་སྒྲིང་ཕན་ དེ།

བདག་གི་ སྒྲིང་ལ་ ད་དུང་ གནས། ॥ 204

कापिलैरसदुद्भूतिः [5।a]स्थान एवोपवर्ण्यते
असतामेव दृश्यन्ते यस्मादस्माभिरुद्भवाः ॥१७५॥

सि० सु० व० क० स० सि० क० स० गृ० ।
सु० व० ग० क० स० कृ० द० व० ॥ २०४ ॥
उ० सु० व० द० ग० क० स० गृ० स० ॥ २०५ ॥
सि० क० स० व० द० सु० सु० व० स० ॥ २०६ ॥

गतिन्यायिविरोधस्य सैषा सर्वत्र दृश्यते ।
अथागमविरोधस्य प्रवेश उपदिश्यते ॥ ॥१७६॥

सि० स० व० द० ग० द० ग० व० ॥ २०७ ॥
सु० स० ॥ २०८ ॥
सि० क० सु० द० ग० व० ॥ २०९ ॥
सि० स० व० द० ग० ॥ २१० ॥

अनाहिताग्नयोप्येते जातपुत्रा वितन्वते ।
विप्रा वैश्वानरीमिष्टिमक्लिष्टाचारभूषणाः ॥१७७॥

མེ་ནི་བཞག་པ་མ་ཡིན་ཡང་།
 བྱ་སྤྱེས་བྱམ་ཟེ་མ་ཉམས་པའི་།
 སྤྱོད་པས་བརྒྱན་པ་འདི་དག་ནི་།
 བེ་ཤུན་རི་མཚོད་སྤྱིན་བྱེད་॥ ੨੦੦

असावनुपनीतोपि वेदानधिजगे गुरोः ॥
 स्वभावशुद्धः स्फटिको न संस्कारमपेक्षते ॥१७८॥

འདི་ནི་ཚོ་ག་མ་བྱས་ཀྱང་།
 སྤྱ་མ་དག་ལས་རིག་བྱེད་བཏུགས་།
 རང་བཞིན་དག་པའི་ཤེལ་དག་ནི་།
 འདྲ་བྱེད་གཞན་ལ་ལྷོས་པ་མེད་॥ ੨੦੧

विरोधः सकलोप्येव कदाचित्कविकौशलात् ।
 उत्क्रम्य दोषगणानां गुणवीथिं विगाहते ॥१७९॥

སྤྱོན་ནི་མཐའ་དག་འདི་ལ་ཡང་།
 དེས་འགའ་སྤྱན་ངག་མཁན་མཁས་པས་།

སྒྲིན་གྱི་ གྲངས་ ལས་ རབ་འདས་ནས
 ཡོན་དན་ ལས་ནི་ རྣམ་པར་འཛིན་ ॥ ༡༧༠

तस्य राज्ञः प्रभावेन तदुद्यानानि जञ्जिरे ।
 आर्द्रांशुकप्रवालानामास्पदं सुरशाखिनां ॥१८०॥

རྒྱལ་པོ་ དེ་ཡི་ མཐུ་ཡིས་ བྱི་ །
 དེ་ཡི་ སྒྲིང་ཆལ་ ལྷ་རྣམས་ཀྱི་ །
 སྒྲིན་པ་ ཡལ་འདབ་ གོས་སྐྱུམ་ དང་ །
 ལྷན་པ་དག་གི་ གནས་སུ་གྱུར་ ॥ ༡༨༠

राज्ञां विनाशपिशुनश्चचार खरमारुतः ।
 धुन्वन्कदम्बरजसा सह सप्तच्छदोद्गमान् ॥१८१॥

རྒྱལ་པོ་ འཛིག་པ་ གསལ་བྱེད་པ་ །
 དྲག་པོ་ཡི་ བྱི་ རྒྱང་དག་གྱུ་ །
 འདབ་ བདུན་ལས་ འབྲུངས་ སྒྲིང་བྱེད་ཅིང་ །
 ཀ་དཔྱ་ཡི་ རྒྱལ་དང་ འགྲོགས་ ॥ ༡༨༡

दोलातिप्रेरणत्रस्त[5।b]वधूजनमुखोद्गतं ।
कामिनां लयवैषम्याद्भेयं रागमवर्धयत् ॥१८२॥

सुनिषाः सुनिषाः रवः सुनिषाः सुनिषाः ।
सुनिषाः सुनिषाः सुनिषाः सुनिषाः ।
सुनिषाः सुनिषाः सुनिषाः सुनिषाः ।
सुनिषाः सुनिषाः सुनिषाः सुनिषाः ॥ १८३ ॥

ऐन्दवादच्छिषः कामी शिशिरं हव्यवाहनं ।
अबलाविरहहृष्टेशविह्वलो गणयत्ययं ॥१८३॥

सुनिषाः सुनिषाः सुनिषाः सुनिषाः ।
सुनिषाः सुनिषाः सुनिषाः सुनिषाः ।
सुनिषाः सुनिषाः सुनिषाः सुनिषाः ।
सुनिषाः सुनिषाः सुनिषाः सुनिषाः ॥ १८४ ॥

प्रमेयोप्यप्रमेयोसि सकलोप्यसि निष्कलः ।
एकस्त्वमप्यनेकोसि नमस्ते विश्वमूक्तये ॥१८४॥

གནལ་བྱ་ ཡན་ ཡང་ གནལ་བྱ་མིན་ ।
 ཚ་ལྷན་ཡིན་ ཡང་ ཚ་ལྷན་ མིན་ ।
 གཅིག་ཉིད་ཡིན་ ཡང་ གཅིག་ཉིད་མིན་ ।
 ལྷ་ཆོགས་ གཞུགས་ ཁྱིལ་ ཕྱག་འཆལ་ ॥ ༡༨༥

पञ्चानां पाण्डुपुत्रानां पत्नी पाञ्चालकन्यका ।
 सतीनामग्रणीश्चासीद्देवो हि विधिरिदृशः ॥१८५॥

ལྷ་བསོང་བྱ་ལྷ་ དག་ གི་ནི་ ।
 རུང་ས་ ལྷ་ལེན་ ཕྱ་མོ་མྱེ་ ।
 དག་པ་ནསས་ཀྱི་ མཆོག་དུ་ གྱུར་ ।
 ༡༨༥ ལྷ་ཡི་ ལྷ་བྱེད་དོ་ ॥ ༡༨༥

शब्दार्थालंक्रियाश्चित्रा मार्गाः सुकरदुष्कराः ।
 गुणा दोषाश्च काव्यानामिति संक्षिप्य दर्शिताः ॥१८६॥

ལྷ་དོན་ གྱུན་ བྱི་ བྱ་བ་ དང་ ।
 ཕྱ་སྤྱོད་ ཕྱ་དཀར་ དག་གི་ལས་ ।

སྒྲུབ་ངག་ནམས་ཀྱི་ ཡོན་ཏན་ སྒྲུབ་ ।

དེ་ལྟར་ མདོར་བརྒྱས་ རབ་དུ་བསྟན་ ॥ १८७

व्युत्पन्नबुद्धिरमुना विधिदर्शितेन

मार्गेण दोषगुणयोर्वशवर्त्तिनीभिः ।

वाग्भिः कृताभिसरणो मदिरेक्षणाभि

र्धन्यो युवेव रमते लभते च कीर्त्तिम् ॥ १८७

སྒྲུབ་བྱེད་ བསྟན་པའི་ལས་འདིས་ སྒྲུབ་ དང་ ཡོན་ཏན་དག་ ।

རབ་དུ་རྟོགས་པའི་རྩོམ་ སྒྲུབ་བཟང་དབང་གུར་པའི་ ।

ཆོག་ དང་ མདོར་བར་འགྲོགས་བྱས་ ཆང་མིག་ས་ དག་དང་ ।

ལང་ཆོམ་ བཞིན་ དགའ་དང་ གྲགས་པ་ ཐོབ་པར་འགྱུར་ ॥ १८८

इत्याचार्यदण्डिनः कृतौ काव्यालंकारे दुष्करदोषविभागो नाम

तृतीयः परिच्छेदः समाप्तः ॥

ཞེས་པ་སྒྲོབ་དཔོན་དབྱག་པ་ཅན་གྱིས་ མཛད་པ་ སྒྲུབ་ངག་གི་ཁྱད་ལས་

བྱ་དགའི་ནམ་པར་བཅད་པ་ ཞེ་ ལེན་ གསུམ་པ་ རྟོགས་སོ་ ॥

CORRIGENDA

Chap. I. 17^b *वर्णनैः for व*र्णनैः ; 27^o ཡ་གྲ་སའི for ཡ་གྲ་སའ་ ;
 39^a साम्या (?) for शाम्या in Tib. transliteration ; 85^a विद्यते for *ལྟོ་ ;
 86^b भवाद्दश for भवादश ; 98^b स्तनन्त्यो for स्तनत्यो.

Chap. II. 14^o དཔེ for དབེ ; 37^b གཤོང for གཤང ; 40^o स्पर्श for
 स्पर्श ; 45^a मौस for मोस ; 66^b नखाचिषः for नखाचिषः ; 77^a इदमार्द्र for इद-
 मद्र ; 9^o नतिते for नतिते ; 86^a राजहंसो for राजहंसा ; 86^o बह्ना for बह्ना ;
 86^b ལྟོ for ལྟོ ; 91^b निर्दहति for निदहति and निर्दयं for निदयं ;
 125^a ལྟོ for ལྟོ ; 142^b གཡ་ for གཡ་ ; 182^b མདྲ་སྒྲུ for
 for མདྲ་སྒྲུ ; 206^a सोयं for सायं ; 207^a རྟོ for རྟོ ; 233^b རྟོ for
 རྟོ ; 234^o *द्विष्टं for द्विष्टं ; 237^a विकार्ये for विकार्य ; 279^b ལྟོ for
 ལྟོ ; 282^o रसवत्त्व for रसत्त्व ; 287^a གཡ་ for གཡ་ ; 306^b दशिता
 for दशिता ; 312^a དཔེ་བཤེས་ for དཔེ་བཤེས་ ; 313^b གསལ་བར་ལྟོ for
 གསལ་བ་ལྟོ.

Chap. III. 17^a རྟོ for རྟོ ; 19^o वार्यन्ते for वार्यन्ते ; 13^a स्पृशेदशां
 for स्पृशेदशां ; 31^o རྟོ for རྟོ ; 39^o ལྟོ for ལྟོ ; 54^a वज्यः for वज्यः ;
 68^b རྟོ for རྟོ ; 69^a གཡ་ for གཡ་ ; 80^o གཡ་ for
 གཡ་ ; 83^a རྟོ for རྟོ ; 158^o बाणा for वारण ; 184^a विश्वमूर्तये
 for विश्वमूर्तये ; 185^a पाण्डुपुत्राणां for पाण्डुपुत्राणां.